हिन्दी मासिक एक प्रति मूल्य १८/-

जनज्ञान

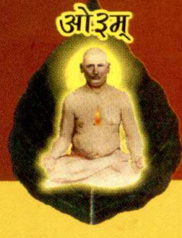

जून २०१५ वर्ष:५१ अंक:०२ ज्येष्ठ-आषाढ़ २०७२

रानी लक्ष्मीबाई
पुण्यतिथि १७ जून

राम प्रसाद बिस्मिल
जयंती ११ जून

छत्रपति शिवाजी
राज्याभिषेक ६ जून

अच्छे लगे अच्छे दिखे
T.T.
Garments
I love
T.T.
SHIRTS | TROUSERS | T-SHIRTS | PYJAMAS | BERMUDAS | LADIES WEARS | KIDSWEARS
Online Trading: www.ttgarments.com/trading
Online Shopping: www.ttgarments.com
Phone / E-mail: 011-45060708 export@tttextiles.com
Follow us on
T.T. is a Well Known Global Brand & Registered Trade Mark Owned by T T Industries, New Delhi-5

॥ ओ३म् ॥

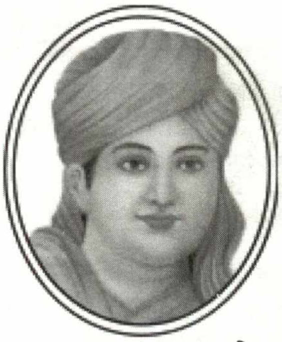

जनज्ञान

वेद

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

कृणवन्तो विश्वमार्यम्

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली

हिन्दुत्व एवं विशुद्ध राष्ट्रवाद को समर्पित

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः

सम्पादक : **पंडिता राकेश रानी**

सह-सम्पादक : **दिव्या आर्य**

मोबाइल : 8459349349, 9810257254

Email : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

मुख्य कार्यालय :

वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
केशवनगर बस स्टैण्ड
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-110036

एक प्रति-18 रु०, वार्षिक शु०-200 रु०, तीन वर्ष-550 रु०, पांच वर्ष-900 रु० और आजीवन-3100

विदेश में **वार्षिक शुल्क**-2100 रु.
(हवाई जहाज से) **वार्षिक शुल्क**-3100 रु.

जून 2015 वर्ष 51 अंक 2

आवरण पृष्ठ : **अरविन्द मोहन मित्तल**

सम्पादकीय

मोदी सरकार का प्रथम वर्ष देश ने कहां तक पाया उत्कर्ष?

गत वर्ष **26 मई** को हुआ था केन्द्र में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी नीत **सरकार का गठन!** लोकसभा में युगान्तरकारी निर्वाचन परिणामों की घोषणा के दस दिन उपरान्त! गत वर्ष भारत को जो मिली है सरकार, उसका वैशिष्ठ्य है यह कि **वह कांग्रेस सरकार के जो रहे थे संस्कार उनकी परिधि से है पूर्णतः बाहर!**

श्री मोदी ने अपनी सरकार का गठन करने के दूसरे दिन (**28 मई** को) संसद भवन के कक्ष में सुशोभित **स्वातन्त्र्य वीर सावरकर के चित्र के समक्ष नमन कर पुष्पांजलि की थी अर्पण!** उन्होंने निश्चय ही किया होगा स्वदेश को पराधीनता के पाश से मुक्ति दिलाने हेतु, **काला पानी के क्रूर कारागार में ग्यारह वर्ष से भी अधिक समय तक पांवों में बेड़ियाँ और हाथों में हथकड़ियाँ झेलते हुए अवर्णनीय कष्टों को, नर केहरी सावरकर द्वारा सहन किए जाने का स्मरण!** उन्हें स्मरण आया होगा वीर सावरकर का यह अमर उद्घोष '**पर जन हित ध्येयं केवला न जनस्तुति।**' अर्थात् हमारा लक्ष्य है जनहित साधना-जन स्तुति अर्थात् लोक लुभावन नारों का उच्चारण करना नहीं। श्री मोदी को यह भी आया होगा याद कि **वीर सावरकर न कभी झुके, न राष्ट्र को झुकने दिया।**

मोदी सरकार के एक वर्ष के कामकाज का भी हमें करना होगा उपरोक्त कसौटी के आधार पर ही आकलन! इस कसौटी पर जब किया जाता है नरेन्द्र मोदी सरकार का आकलन तो सर्वप्रथम इस तथ्य से होता है साक्षात्कार कि यह स्वदेश की ऐसी है पहली सरकार-**जिसे समर्थकों की अपार आकांक्षाओं और विपक्ष की निर्मम आलोचनाओं के मध्य से गुजरते हुए अपनी मंजिल करनी होगी पूर्ण!**

विद्यमान हालात पर जब जाता है ध्यान तो **सहज ही लग जाता है इस वस्तुस्थिति का अनुमान कि इस सरकार को प्रकृति प्रदत्त**

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर दिल्ली-110036 एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स ३०८/४ शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

आपदाओं एवम् विपुल विपरीत घरेलु-वैश्विक स्थितियों-परिस्थितियों पर पार पाते हुए अपना पथ सृजित करना पड़ रहा है।

इस एक वर्ष के कालखण्ड में मोदी सरकार को अनेक मीठे खट्टे अनुभव हुए हैं। एक वर्ष की यात्रा के दौरान **मोदी सरकार की जो योजना जमीन पर सुपरहिट दृष्टिगोचर हुई, वह है 'प्रधानमन्त्री जन-धन योजना'**। स्थिति के प्रत्यक्ष रूप से अध्येता एवं पत्रकार के शब्दों में **'पड़ाव दर पड़ाव'** मिलने वाले ज्यादातर लोगों ने स्वीकार किया कि उन्होंने इस योजना के तहत बैंक में अपने खाते खुलवाए। इस बात पर प्रसन्नता भी जताई कि खाता खोलने के नाम पर मुंह चिढ़ाने वाले अफसरवादी उनकी आवभगत करते दिखाई दिए।'

देश में पिछले दिनों पेट्रोल-डीजल के दाम में जो गिरावट आई उसका सीधा श्रेय भी सामान्य जन श्री नरेन्द्र मोदी को मुक्त कंठ से दे रहे हैं। साफ-सुथरा हो अपना देश इस मनोकामना सहित जो **स्वच्छ भारत मिशन** मोदी सरकार ने प्रारम्भ किया है, वह भी स्थिति के अध्येताओं के अनुसार जन साधारण और विशेषत: युवा पीढ़ी की सराहना का पात्र बना है।

श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमन्त्री के तौर पर बारह माह में अठारह देशों की यात्रा की है। विदेश नीति वह मोर्चा है, जिस पर प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने अपने नौसिखिया होने के सारे कयासों को सिरे से गलत करार दिया है। अपने शपथ ग्रहण समारोह में ही दक्षिण एशिया का शिखर जमावड़ा करा उन्होंने यह संकेत स्वदेश और समग्र विश्व को दे दिया था कि वह न केवल घरेलू मोर्चे पर अपितु विदेश नीति में भी एक नवीन श्री गणेश का सृजन करने वाले हैं। यह शुभारम्भ एक परिणामदायक रणनीतिक-राजनीतिक आर्थिक और सांस्कृतिक कदम था।

निश्चय ही, श्री मोदी को नीति तथाकथित गुट-निरपेक्षता के खांचे से बाहर कहा जा सकता है। *मोदी सरकार की विदेश नीति का लक्ष्य*-**अमेरिका से ठंडे पड़े मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों में गर्मजोशी लाना, चीन के साथ चुनौतियों की व्यवस्था करना, भारतीय उपमहाद्वीप के पड़ोसी एवम् एशियाई देशों के साथ फलप्रद सम्बन्धों को बढ़ाना, भारत की अन्त: निहित नरम ताकत को एक मुकाम देना तथा नई दिल्ली को व्यावहारिक अन्त: राष्ट्रीयतावाद की ओर ले जाना प्रतीत होता है।**

अमरीका के साथ परमाणु दायित्व विधेयक और कृषि सब्सिडी पर बने गतिरोध को तोड़ा गया है। जलवायु परिवर्तन पर नरमी का संकेत दिया गया है। वहीं **चीन के साथ सीमा विवाद पर बातचीत के साथ आर्थिक सम्बन्धों को बेहतर किया जा रहा है**, तो भारत के प्रति उसकी घेराबन्दी का उसी की भाषा में उत्तर देने की नीति भी अपनाई गई है। **जापान के साथ जहां उन्नत स्तर के भरोसेमन्द सम्बन्ध बने हैं, वहीं, यूरोप के रक्षा, आर्थिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों में नई ऊर्जा का सृजन हुआ है।**

आर्थिक, प्रौद्योगिक अथवा रणनीतिक करार तक सीमित विदेश नीति को भारत के समग्र वैशिष्ट्य से जोड़कर एक नवीन त्वरा प्रदान की जा रही है। इसका एकमात्र लक्ष्य है **भारत को अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर मुख्य भूमिका के निर्वहन हेतु तैयार करना।** यह भी स्पष्ट होता जा रहा है कि मोदी के भारत से, विश्व को वस्तुत: महती अपेक्षा है। उन्हें मिले अपार समर्थन और सहमति दर सहमति पत्रों पर होते हस्ताक्षरों से भी यही परिलक्षित होता है। **हालात बता रहे हैं कि पाकिस्तान के साथ व्यवहार पर अभी भी मोदी सरकार द्वारा गहन चिन्तन-मनन की दरकार है।**

वस्तुत: अब इस बात पर सभी एकमत प्रतीत हो रहे हैं कि श्री नरेन्द्र मोदी के प्रधानमन्त्री पद पर आसीन होने के पश्चात **विश्व के मानचित्र पर भारत का कद और रुतबा बढ़ा है।** इनमें वे लोग भी शामिल हैं, जिन्होंने भारतीय जनता पार्टी को चुनाव में वोट नहीं दिया था।

अब जब घरेलू स्थिति पर ध्यान जाता है तो यह तथ्य उभर कर समक्ष आता है कि युवाजन नौकरी पाने को प्रतीक्षारत हैं। मात्र एफ.डी.आई लाने से उनकी जिज्ञासा का समाधान नहीं हो सकेगा। उसके लिए अपेक्षित है **'मेक इंडिया'** को तेजी सहित बढ़ाना।

इस तथ्य की भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि करोड़ों भारत वासियों ने मोदी सरकार के आने पर **'अच्छे दिन आने'** का सपना देखा था। वे मात्र मधुर लोरियां ही नहीं सुनना चाहते, क्योंकि ***अनेक योजनाओं की वर्षा के बावजूद सामान्य जन अभी तक स्वयं को भीगा अनुभव नहीं कर पा रहे हैं।*** वस्तुत: श्री नरेन्द्र मोदी की सबसे बड़ी चिन्ता यही होनी चाहिए।

भूकम्प की त्रासदी झेल रहे नेपाल की सहायता पर तो किसी ने **"गैरों पे करम"** का उलाहना नहीं दिया किन्तु, **मंगोलिया को एक अरब डॉलर देने का जो ऐलान श्री नरेन्द्र मोदी ने किया है**, उसे लेकर उनके विपक्षियों को उन पर ताना कसने का अवसर अवश्य ही सुलभ कर दिया कि-**'देश में बेमौसमी बरसात से बरबादी के कगार पर पहुंचे किसानों को पर्याप्त वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने के बजाए प्रधानमन्त्री अनावश्यक तरीके से पैसे बांटते फिर रहे हैं।'.....**

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो)

सम्पादकीय–मोदी सरकार का प्रथम वर्ष देश ने कहां तक पाया उत्कर्ष? ३

सामायिक-विचारः बिहार की राजनीतिक उलझन –*अश्विनी कुमार* ६

उपदेश : मां का.... –*पण्डिता राकेशरानी* ७

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणीः पूजा, वन्दना, क्रान्ति की त्रिवेणी पण्डिता राकेशरानी ८

जनज्ञान के 51वें वर्ष में प्रवेश की बधाई.... १०

हृदय मंदिर के उद्‌गार –*दिव्या आर्य* ११

अनुपमेय : राकेशरानी –*महात्मा वेदभिक्षुः* १३

पण्डिता राकेशरानी एक शब्द चित्र –*बन्धु ज्ञानचन्द्र* १५

जन्मदिवस की पावन बेला शत्-शत्... –*विजयगुप्त* १७

प्रशस्ति दोहावली-1 –*ज्ञानचन्द्र* १७

बहुमुखी प्रतिभा की धनी श्रद्धेय.... –*सत्यानन्द आर्य* १८

पण्डिता राकेशरानी के जन्मदिवस 8 जून पर एक अभिनन्दन –*स्वामी धर्मा प्रेमानन्द* १९

पण्डिता राकेशरानी की कुछ कविताएं २०

आपके पत्र २२

वेद-विचारः आओ, हम लौटें! –*भारतेन्द्रनाथ* २३

वैदिक-चिन्तनः "मानव! जियो छन्दमय जीवन" –*देवनारायण भारद्वाज* २४

आर्यसमाज के दस नियमों की अपूर्व-व्याख्या –*स्व. श्री मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या* २६

जून माह के उल्लेखनीय दिवस –*इन्द्रदेव* २७

देश की स्वतन्त्रता... –*स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती* २८

शहीद ऊधम सिंह –*विजेन्द्र कोहली* ३०

खूब लड़ी मरदानी अरे झांसी... –*आकांक्षा यादव* ३१

झांसी की रानी के वे अन्तिम...–*वीर वि.दा.सावरकर* ३३

सामायिक चर्चाः सोनिया का... –*राजनाथ सिंह सूर्य* ३५

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस... –*जुगलकिशोर उपाध्याय* ३७

क्रान्ति नहीं, वेद लाएगा शान्ति –*अरुणकुमार सिंह* ४०

हम सब प्राणी एक-दूसरे को –*मनमोहन कुमार आर्य* ४३

तांगेवाला कैसे बना मसालों... –*म. धर्मपाल गुलाटी* ४६

स्वास्थ्य विचारः वृद्धावस्था और..... –*डॉ. फणिभूषण दास* ४७

समाचार-दर्शन ४८

ऐसा मानने वालों की संख्या भी बहुत है जो यह सोच रहे हैं कि मोदी सरकार भूमि अधिग्रहण विधेयक की आवश्यकता लोगों को नहीं समझा पाई है। इसके विपरीत विपक्ष इसी विधेयक को हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर सरकार पर 'पूंजीपतियों का मित्र' का तमगा चस्पा करने में जुट गया है। इस मुद्दे पर जनता के समक्ष सुसंगत और तर्क संगत ढंग से वस्तुस्थिति की प्रस्तुति समय की पुकार है।

जबकि... सरकार ने किसान को रोजगार उपलब्ध कराने, ग्रामों में नगरों की सुविधाएं जुटाने तथा स्वदेश के विकास रोजगार में सभी को भागीदार बनाने हेतु महत्वाकांक्षी-भूमि अधिग्रहण सम्बन्धी संशोधन प्रस्तुत किए हैं। **अभी तक सरकार अपनी महती जनहितैषी सोच से जन-जन को अवगत कराने में पूरी तरह असफल रही है।** सरकार से लोगों की आशाएं अभी भी बरकरार हैं, जनता के एक वर्ग में हताशा के भावों को सृजित करने में विपक्ष जहां अपनी पूरी शक्ति सहित जुटा है, **वहीं, जनता के नेत्रों में मोदी सरकार से भारत को सुदृढ़-संकल्पबद्ध-सुसमृद्ध स्वरूप प्रदान कराने में सक्षम होने की चमक अभी भी बरकरार है।** भारत अपनी धारणाओं, अपने विश्वासों पर दृढ़ता सहित विश्व के समक्ष खड़ा होता प्रतीत हो रहा है।

वर्तमान स्थिति पर दृष्टिपात करते हुए पुनः हो आता है, एक जीवन पद्धति के रूप में हिन्दुत्व के सफल व्याख्याता और स्वतन्त्रता समर के सक्षम समर्थ योद्धा वीर सावरकर का पावन स्मरण!

ऐसा होता है अनुभूत कि वर्तमान शासन के लिए एक सुस्पष्ट सन्देश दे रहा है....**शिवाजी के शौर्य और देव दयानन्द के दार्शनिक चिन्तन का अनुगामी,** राजनीतिक ही नहीं अपितु धार्मिक और सांस्कृतिक तथा आर्थिक सभी क्षेत्रों में **समग्र क्रान्ति का अग्रदूत तपः पूत जीवन का धनी वीर सावरकर!** यदि आज **वीर सावरकर होते तो वर्तमान सत्ताधीशों लिए स्पष्ट सन्देश देते कि आत्मकेन्द्रित न रहकर भारतीय सीमाओं से पांच हजार मील दूर तक की घटनाओं का विचार-विश्लेषण करें।**

मोदी सरकार एक प्रमुख समाचारपत्र द्वारा कराए गए इस सर्वेक्षण से भी प्रेरणा लें कि मीडिया में हिन्दुत्व को लेकर सतत दुष्प्रचार किए जाने के बावजूद ज्यादा से ज्यादा लोग चालीस प्रतिशत मानते हैं कि हिन्दुत्व का उन्नयन और विकास आपस में पूरक हैं और एक की अनुपस्थिति में दूसरा अर्थहीन है। ❖❖

सामयिक-चर्चा

बिहार की राजनीतिक उलझन

–अश्विनी कुमार

जो लोग बिहार की राजनीति का अध्ययन करते रहे हैं उन्हें भली-भान्ति ज्ञात होगा कि **यह राष्ट्रीय राजनीति की प्रयोगशाला के साथ-साथ सामाजिक न्याय और भारतीय राष्ट्रवाद की तार्किक चेतना की प्रयोगशाला रहा है।** मुझे याद आता है कि किस तरह 1962 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की इस राज्य में प्रमुख विपक्षी दल की हैसियत को 1967 के आते-आते **भारतीय जनसंघ** और **संसोपा** ने नीचे खिसका दिया था। संसोपा ऐसे समाजवादी चिन्तक **डा. राम मनोहर लोहिया की पार्टी** थी, जो कहा करते थे कि **'अगर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसा अनुशासित और राष्ट्रवाद के लिए प्रतिबद्ध संगठन मेरे पास हो तो मैं केवल पांच साल के भीतर पूरे भारत में समाजवाद ला सकता हूं।'**

यह डा. लोहिया का उस राष्ट्रवाद को नमन था **जो संघ के प्रत्येक स्वयं सेवक की शिराओं में रक्त बन कर दौड़ता है मगर डॉ. लोहिया का समाजवाद कभी भी राष्ट्र की चिन्ताओं से ऊपर नहीं रहा।** यही वजह थी कि अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत में ही **ब्रिटिश काल के दौरान डा. लोहिया ने छत्रपति शिवाजी महाराज को उस समय की पुस्तकों में छापामार लुटेरा कहे जाने पर घोर आपत्ति की थी और उन्हें स्वराष्ट्र और स्वशासन का महानायक बता कर राष्ट्रपुरुष की संज्ञा दी थी** लेकिन इसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि डा. लोहिया के समाजवाद को 90 का दशक शुरू होते उनके तथाकथित चेले-चपाटों ने जातिवाद में बांट डाला और भारत की राजनीति को कबायली स्वरूप देने की कसम उठा ली।

गौर से विश्लेषण करें तो **यह बिहार की उस महान जनता का घोर अपमान था जो मधु लिमये और जार्ज फर्नांडीज जैसे समाजवादी नेताओं को लोकसभा में भारी बहुमत से जिता दिया करती थी** मगर....1989 के लोकसभा चुनावों में बोफोर्स तोप दलाली कांड के राजनीतिक के केन्द्र में आने पर जो **'छप्पन भोगी'** जनता दल स्व. **वी. पी. सिंह** ने तैयार किया उसकी **'कागजी की नाव'** पर सवार होकर कई ऐसे सूरमा भी लोकसभा में पहुंच गए जिनका केवल सड़क छाप लठैती राजनीति से मतलब रहा था। गुस्ताखी माफ हो, **लालूप्रसाद ऐसे नेताओं के रहनुमा थे जिन पर सबसे पहली नजर हरियाणा के स्व. देवीलाल की पड़ी** और उन्होंने उत्तर प्रदेश और बिहार विधानसभाओं के 1989 में हुए चुनावों में जनता दल की जीत के बाद यू. पी. में श्री मुलायम सिंह यादव और बिहार में लालूप्रसाद यादव को बतौर मुख्यमन्त्री के रूप में चुना। **मुलायम सिंह उस समय भी कद्दावर नेता थे और डा. लोहिया के जाने-माने चेले रहे थे मगर लालू प्रसाद के नाम ने सभी को चौंका दिया और ऐसा लगा कि स्व. देवीलाल का जनता दल के भीतर अपना रुतबा कायम करने का प्रयास था।**

लालू प्रसाद तब लोकसभा के सदस्य थे मगर उन्हें बिहार जनता दल विधानमण्डल दल का नेता चुन लिया गया। इसके बाद दस वर्ष तक **बिहार में राज करने के तरीके और प्रशासन में जो बदलाव आया उसने इस महान राज्य की जनता को देश के सामने हंसी का पात्र बना दिया और बिहार का नाम आते ही भुखमरी, लूट, हत्या, जाति, सेना, अपहरण और फिरौती की बातें सामने आने लगीं।** नौकरशाही को भी जातिवाद के रंग में रंग दिया गया। चीफ सैक्रेटरी पानदान उठाए दिखने लगे। पूरा राज्य जंगल राज में बदल दिया गया।

बहुचर्चित चारा कांड में लालूप्रसाद जेल गए तो अपनी गद्दी पर अपनी पत्नी राबड़ी देवी को बिठा गए मगर बिहार के लोगों ने **तब 2005 में**, लालूप्रसाद के इस जातिगत समीकरणों के जंगल राज की धज्जियां उखाड़ कर फैंक दीं. ...लेकिन यह कार्य लालू के कभी जनता दल में साथी रहे नीतिश कुमार के साथ भारतीय जनता पार्टी ने किया और **इस राज्य को जंगल राज से सुराज की तरफ लाने में राष्ट्रवादी ताकतों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।** इसके बाद 2010 में बिहार के लोगों ने कमाल कर डाला और **भाजपा-नीतिश के गठबन्धन को तीन-चौथाई से भी अधिक बहुमत देकर लालूप्रसाद को उनके किए की जमकर सजा दी!**

मगर देखिए! नीतिश कुमार भी कितनी गलतफहमी में पड़ गए कि बिहार जैसे उनके बूते पर चलता है। उन्होंने **2014 के लोकसभा चुनावों से पहले श्री नरेन्द्र मोदी को भाजपा द्वारा प्रधानमन्त्री पद का प्रत्याशी बनाए जाने के मुद्दे पर अपना गठबन्धन तोड़ लिया और बिहार की सरकार को उसी लालूप्रसाद के 22 विधायकों की मदद से चलाने का फैसला कर लिया जिनके खिलाफ बिहार की जनता ने उन्हें शासन दिया था** और लोकसभा चुनावों में नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल (यू) द्वारा केवल दो सीटें जीतने पर... माननीय **नीतिश कुमार ने अपनी ही पार्टी के महादलित विधायक श्री जीतनराम मांझी को मुख्यमन्त्री की कुर्सी पर बिठा दिया** और जब मांझी ने बाअख्तियार हुक्मरान की तरह काम करना शुरू किया तो श्री नीतीश कुमार का अंगुली कटा कर शहीद बनने का सपना गायब हो गया और **फिर से मुख्यमन्त्री बन बैठे।** **(शेष पृष्ठ-9 पर)**

उपदेश : मां का...

–पण्डिता राकेशरानी

देख-देख कर तेरी छवि को मन भरमाया!
ढूंढ़ा तुझको नगर-डगर में, पार न तेरा पाया!
है कैसा, नहीं ज्ञान यह, फिर भी तुझ से प्यार है।
तेरे गीत सभी गाते हैं, महिमा अपरम्पार है।

भाइयों और बहनों!

वह प्रभु जिस के गीत धरती गाती है। जिसका नाम लेते भक्त जन थकते नहीं, **वह प्रभु,** जिसे कोई ईश्वर, अल्लाह, कोई कुछ और कोई कुछ कहता है, हम सभी लिए अनजान है। **उसे जानने के लिए उसे पाने के लिए बहुतों ने बड़े प्रयत्न किए पर वह मिलता नहीं......** कैसा है वह–

जिसका रूप नहीं, न है रंग किसी ने न जाना। जिसके पास पहुंचना मुश्किल, जिसका नहीं ठिकाना, जिसकी छवि छायी शब्दों में, दर्शन दुर्लभ, जिसके रूप-अरूप-ठिकाना, किसने है पहचाना!

उस से मिलने की बात सभी करते हैं, पर मार्ग नहीं कोई जानता। जो जानते थे वे भी तो भटकते हैं क्योंकि उनका ज्ञान असत्य पर आधारित है। इसलिए प्रयत्न असफल हो जाते हैं।

किसी भक्त ने कहा कि **ईश्वर से क्या मिलना? गरदन झुकायी देख लिया!**

यह गरदन झुकाना, **क्या सरल बात है?** हम सभी तो अपने-अपने विचारों में व्यस्त हैं। अपने-अपने कर्म में मस्त हैं। **दु:खों में डूबते हैं तो वह याद आता है,** मुसीबत आती है तो उसका नाम लेते हैं पर **क्या यही उसका काम है...**

वह क्या है? कैसा है? कहां रहता है, **इसका वर्णन महान संत स्वामी दयानन्द ने स्वानुभूति से किया था।** उन्होंने बताया–

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अनादि, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है।

ईश्वर सत्य है, वह ज्ञान का भंडार है आनन्द का स्रोत है। **उस का आकार नहीं, वह तो अणु-अणु में व्याप्त है।** ब्रह्मांड का कोई स्थान नहीं जहां वह न हो।

वह सर्वशक्तिमान है। अर्थात् **अपने नियमों को चलाने के लिए उसे किसी का भी सहारा लेने की आवश्यकता नहीं।** सभी प्रकार की शक्तियों का केन्द्र-प्रेरक और दाता वह ही है।

वह न्यायकारी है! न वह खुशामद से प्रसन्न होता है, न निन्दा से रुष्ट। वह तो सभी को समान रूप से अपने-अपने कर्मों के अनुसार ही फल देता है। उसकी न्याय-व्यवस्था में कहीं भी कोई दोष हो ही नहीं सकता। **जो भक्त जन यह समझते हैं कि वह नाम लेने से प्रसन्न होकर हमें औरों से अधिक कुछ दे देगा, वे भ्रम में हैं।** आप जो भी बुरा काम करेंगे उसका दंड तो मिलेगा ही। वह क्षमा नहीं करता। **अच्छे कर्मों का अच्छा फल भी मिलेगा** पर.... **उससे बुरे कर्मों का दण्ड छूट नहीं सकता।**

वह दयालु है। सभी की जीवन की उन्नति के लिए साधन जुटाता है। गर्भ में भी बच्चे को पालता है। उसने हमें शान्ति और आनन्द प्राप्त करने के लिए बुद्धि दी है। **लाखों रुपये से भी मूल्यवान इन्द्रियां दी हैं** उसकी दया सभी पर समान है। **पक्षपात से शून्य पिता जैसे सभी पुत्रों को पालता है। वैसे ही प्रभु भी सभी जीवधारियों का पालन-पोषण करता है।**

वह अजन्मा है। न जन्म लेता है न मरता है। जिसका जन्म होगा, उसकी मृत्यु भी होगी। किन्तु **वह तो सदा से है, सदा रहेगा।** देह-रूप आकार से परे वह प्रभु अजन्मा है। अर्थात् **कभी न उसका ह्रास होता है न मृत्यु।** वह अनन्त है। वह सर्वव्यापक है-सर्वत्र विद्यमान है। अत: **वह असीम और अनन्त है।** न पाया किसी ने उसका पार पारा। सच ही तो है– **सीमाओं के बन्धन से दूर, ज्योतिर्मय प्रकाश का पुञ्ज, प्राणों के कण-कण में छाया, निर अनन्त वह–**

जिस की महिमा देख चकित सा?
विश्व खड़ा है यह सस्मित सा...............

निर्विकार है...**उस में कोई विकार हो ही कैसे सकता है क्योंकि वह काल मृत्यु-जरा जन्म सब से दूर है।** सदा एक-सा रहने वाला है ईश्वर.......

वह अनादि है, वह अनुपम है, उस जैसा कोई न और। **सबका है आधार वही तो,** सबसे ऊंचा और महान् सर्वेश्वर है.....कण-कण में है व्याप्त

ढूंढना उस को क्या मुश्किल है?.....
सबके अन्तर में बैठा है। सबके मानस में पैठा है।

सब कुछ जान रहा है वह तो, उससे क्या छिपता है। **समझो!.. पाप-ताप से बच जाओगे। स्वर्ग यहीं पर पा जाओगे!......**

❖❖❖

पूजा, वन्दना, क्रान्ति की त्रिवेणी पण्डिता राकेशरानी

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर-वाणी

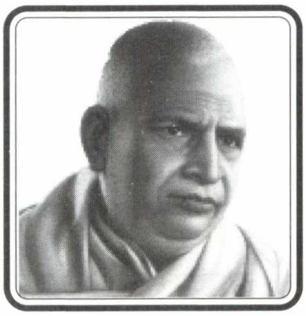

जीवन एक संघर्ष है, जीवन विजय है, जीवन अमरत्व की सिद्धि स्थली है। यह जीवन भाग्य से मिलता है।

मिलता है अनेकों को, भोगते हैं सभी, पर जीते हैं बहुत थोड़े। ऐसे तो **बहुत ही कम होते हैं।**

जिनकी ज्योति से जग चमकता है.....

अपने गुणों से स्वयं ज्योतिर्मय **पूजा-वन्दना और क्रान्ति की त्रिवेणी तथा मूक सतत साधनारत महिला का नाम है पण्डिता राकेशरानी!**

8 जून को उनके जन्मदिवस पर में उनके सम्बन्ध में कुछ लिखने लगा हूं। वे मेरी पत्नी हैं जिसको अर्धांगिनी कहा जाता है, इसलिए इनकी प्रशंसा मेरी अपनी प्रशंसा है, जो मेरे स्वभाव के विरुद्ध है।

किन्तु इस बार मैं अपने को लिखने से नहीं रोक पा रहा। मेरा शरीर अब जर्जर हो चला है। दिन रात की चिन्ता, निरन्तर काम और संघर्ष के थपेड़ों ने अब यहां से चलने की तैयारी जल्दी करा दी है। इसलिए मेरा मन उस देवी के प्रति अपने भाव प्रगट करना चाह रहा है जिसके कारण मैं कुछ भी कर सका हूं।

मेरे जीवन पर 3 व्यक्तियों ने प्रभाव डाला है- **1.** महर्षि दयानन्द, **2.** मेरी जननी पूज्य माता पं. विद्यावती शारदा और **3.** मेरी सहधर्मिणी राकेशरानी।

विचारों की दृष्टि से मैंने स्वामी दयानन्द के अतिरिक्त और किसी भी व्यक्ति को अपना आदर्श नहीं माना, न किसी ने मुझे प्रेरणा ही दी।

इन विचारों को कार्यरुप में परिणित करने का निरन्तर आदेश मुझे अपनी माता से मिला। जीवन की दो घटनाएं नहीं भूलतीं।....8 अगस्त 1942 को गांधी जी ने करो या मरो का नारा दिया था, **वे बम्बई में थीं। मेरी आयु उस समय 12-13 के मध्य थी। वारन्ट निकले थे उनके। 13 अगस्त को वे किसी तरह घर पहुंचीं।** आते ही पहला वाक्य था, क्रोध से भरा-

.....'तू अभी तक जिन्दा क्यों है?'.....

आज के सन्दर्भ में कोई इन शब्दों का मूल्य नहीं जान सकता। एक विधवा माँ-इकलौता 13 वर्ष का बेटा और उसे मरने का आदेश, देश के लिए।

बात **1946** की है-गुरुकुल जेहलम का दीक्षान्त भाषण। सब कार्यक्रम सम्पन्न, उपाधि मिल गयी और अन्त में हुआ **उनका आशीर्वाद! हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में उनका आदेश- 'भारतेन्द्र! मैं तुम से भिक्षा मांगती हू कि जीवन में कोई काम धनोपार्जन के लिए न करना।** अपना जीवन देश और आर्यसमाज के प्रति अर्पित कर दो।' **बातें बहुत सुनते हैं पर ये दो बातें मेरे जीवन का प्रकाश स्तम्भ रही है।** मरने तक इन्हें भुला न सकूं यही एकमात्र कामना है।.....

विवाह हुआ 23 जुलाई को। 24 जुलाई को रेल के डिब्बे में सारी बातें जीवन-लक्ष्य की बता गया। उस समय उनकी उम्र थी 16 वर्ष, पता नहीं कितनी बुद्धि थी, कैसी भावना थी, गाजियाबाद से सहारनपुर की 4 घण्टे की यात्रा में उनका जीवन बदल गया। मेरा सब चिन्तन, उनका चिन्तन बन गया।... नया विवाह, पैसे की चिन्ता नहीं... किसी भी प्रकार की मांग नहीं-नगर छोड़ ग्राम का जीवन स्वीकार किया और अपने सारे मन को सेवा-साधना में लगा दिया। 1950 से 1978.... 28 वर्ष बीत गए। इन 28 वर्षों की कहानी संघर्षों की भट्टी में जलते जीवन की कहानी है। पता नहीं क्या होता! यदि इस लम्बी यात्रा में उनका सहयोग ही नहीं-मार्गदर्शन न मिला होता।

मुझसे अनेक बार भूलें हुयी होंगी, शायद भयंकर भूलें भी, पर उन्होंने **जिस उदारता से मन में तनिक खोट या मैल लाए बिना सब कुछ भुला दिया, उसकी उपमा नहीं।**

उन्होंने सदा मेरे हर काम में सहयोग दिया। **मुझ से भी आगे बढ़कर हाथ बंटाया।** मुसीबतों में, थक जाने पर हिम्मत दिखायी **और कुछ चाहा नहीं।**

मान-अपमान की चिन्ता से दूर, यश अपयश से निर्लेप, परिणाम कभी सोचा नहीं, आराम कभी किया नहीं, प्रातः 7 से रात 12-12 बजे तक काम, चुपचाप काम, कितना विचित्र जीवन है इस नारी का। कितना अद्भुत त्याग है!!!......

बदले में नेताओं की गालियाँ मिलीं, **पुरस्कार में अपमान मिला**, सब कुछ हंस कर सहा, **एक शब्द भी तो कभी कुछ नहीं कहा।** हाँ **सब में सहारा रहा जनता का, जिसने मुक्तहस्त होकर अपना आशीर्वाद प्यार सभी कुछ दिया।** इसी सम्बल ने एक अजेय शक्ति प्रदान की। **जब दयानन्द संस्थान भारी घाटे के कारण 1976 में अस्त-व्यस्त होने की स्थिति में आया और ऐसा अनुभव हुआ कि कहीं सारे कार्य बन्द ही न करने पड़ें तब उन्होंने अत्यन्त दृढ़ता से दयानन्द संस्थान का गरिमापूर्ण दायित्व स्वीकार किया** और समय साक्षी है कि पिछले 3 वर्षों में उनके नेतृत्व ने संस्थान को नयी शक्ति प्रदान की है।

मेरे उनके स्वभाव में जमीन-आसमान का अन्तर है। वे गम्भीर-चिन्तनशील और अत्यन्त कुशल राजनीतिज्ञ हैं। मैं जल्दी से निर्णय करने में विश्वास रखता हूं और जो मन में होता है सो कह देता हूं। मेरे स्वभाव की प्रखर आलोचक होते हुए भी उन्होंने कभी परस्पर कटुता नहीं आने दी, यही उनकी सफलता का मूलमन्त्र है।

वर्षों रुग्ण रहीं, *तब भी प्रसन्न!* **ब्रॉन्काइटिस का तीव्र वेग,** *तब भी कार्यरत!* **बुखार हो, सिर दर्द हो, चोट हो या कोई भी कठिन कष्ट,** *उनके चेहरे पर उदासी नहीं आती, काम नहीं छूटता।* **कभी-कभी नाराज होकर काम बन्द करा देता हूं, सो जाती हैं, रात को नींद, खुलती है तो देखता हूं पत्रों के उत्तर दिए जा रहे हैं।** नाराज होता हूं तो मुस्कराते हुए उत्तर मिलता है, आखिर काम तो निपटाना ही है। अभी सोती हूं! **1-2 घण्टे बाद नींद खुलती हैं तब भी उन्हें काम में व्यस्त पाता हूं।** क्रोध पिछले 28 वर्षों में शायद 2-3 बार ही आया होगा। वे सब सहते हुए भी, **स्वयं जलते हुए भी ऊपर से मुस्कराने की कला में सिद्धहस्त हैं** या पता नहीं, यह उनका स्वभाव ही बन गया है।

सबका ध्यान, सैकड़ों पत्रों पर स्वयं विचार, अनेकों विभागों का संचालन और **दिन रात धन के अभाव में भी काम चलाने की चिन्ता-और फिर भी बढ़ते जाना** यह केवन उन्हीं के बस की बात है।

मेरे जीवन की साध थी 10 बलिदानी व्यक्ति मिल जाते तो धरती बदल देता, पर दुर्भाग्य-यह **आर्यसमाज है जहां बातें चलती हैं काम जहां अपराध है या सबसे बड़ा पाप। फिर भी मुझे एक व्यक्ति ऐसा मिला, जिसने मेरी इच्छा पर अपने जीवन के सारे सुखों की आहुति दे दी, इसलिए मैं मन ही मन उनकी वन्दना करता हूं।**

> ***वे जब तक हैं तक तक दयानन्द संस्थान सुरक्षित है। मुझे तो एक ही कष्ट है कि हमारे परिवार में अभी तक कोई ऐसा नहीं निकला जिसकी आहुति मैं इस धर्मयज्ञ में दे सकता। समय का प्रभाव नयी पीढ़ी पर अधिक है।....***

> ***हमारी भी त्रुटि हो सकती है पर मेरे मन की यही एक जलती हुई वेदना है।......***
>
> ***काश! कि कोई अपने को जीवित जलाने के लिए धर्म-यज्ञ में समिधा बन सकता। यज्ञाग्नि बलिदान चाहती है। बलिदान जितने होंगे, प्रकाश उतना अधिक होगा।***

जीवन के 43 वर्ष में प्रवेश करते हुए ***मैं मन-ही-मन उनकी वन्दना करता हूं इसलिए नहीं कि वे मेरी अर्धांगिनी हैं अपितु, इसलिए कि वे दयानन्द-संस्थान की प्राण हैं। उन्होंने मेरी इच्छा पर अपने जीवन की आहुति दी है।***

प्रभु कृपा करें और उन्हें शक्ति दें कि वे अपनी दृढ़ता-गरिमा और उदात्त भावनाओं से **संस्थान को आगे बढ़ाकर किसी योग्य व्यक्ति को संस्थान का कार्य भार सौंप सकें।**

> ***मैं उनका कृतज्ञ हूं इसलिए कि उन्होंने मेरा दायित्व सम्भाला और दयानन्द की दिव्य पताका लेकर निर्भय अविराम वे बढ़ी जा रही हैं-***
>
> ***हृदय की समस्त शुभ कामनाओं के साथ-100 जन्म दिन मना सकें-कामना भी, यह श्रद्धा-सुमन अर्पित हैं।........*** **-भारतेन्द्रनाथ**

(पृष्ठ-6 का शेष)

मांझी अपने समर्थक विधायकों के साथ अलग हो बैठे। अब देखिए, **लालू प्रसाद की सर्कसी राजनीति!** वह मांझी से कह रहे हैं हमारे साथ आ जाओ। इसके साथ जनता परिवार के नाम पर जो सब पुराने छप्पन भोगी इकट्ठा होने का नाटक कर रहे थे वे बिगड़ बैठे और कहने लगे कि मेरी थाली में उसकी थाली से ज्यादा घी क्यों है?? **इस झंझट में शरद यादव जैसे नेता भी फंसे हुए हैं।** उन्हें तो लालूप्रसाद किसी गिनती में ही नहीं रखते थे और कहते थे कि अपने घर में चौधरी चरण सिंह की तस्वीर लगा कर क्या कोई बड़ा नेता बन जाता है??.. लेकिन **नीतीश और लालू दोनों कान खोल कर सुनें देश की राजनीति बदल चुकी है। राष्ट्रीयता का मुकाबला कोई भी राजनीति नहीं कर सकती।** मुझे कभी बिहार जनसंघ के अध्यक्ष रहे स्व. ठाकुरसिंह की वह बात याद आ रही है कि बिहार में बेशक जनसंघ धीमी चाल चल रहा है मगर लोग समझ रहे हैं कि कांग्रेस और अन्य दल केवल उन्हें आपस में में ही एक-दूसरे के खिलाफ उलझा कर अपनी नेतागिरी चमकाना चाहते हैं। **एक दिन जरूर आएगा जब पूरा बिहार राष्ट्रवाद के समतावादी सिद्धान्त को समझेगा। हमें अपना राज तो मिला है मगर अपना शासन भी मिलेगा** *और वह शासन प्रत्येक बिहारी का होगा।*

(पंजाब केसरी, 24 मई, 2015 से साभार) ●●●

जनज्ञान के 51वें वर्ष में प्रवेश की बधाई...

हम और हमारी साधना

* हम वैदिक संस्कृति के प्रति अर्पित हैं। उसका प्रसार ही हमारा जीवन लक्ष्य है......
* क्योंकि हमारी अडिग आस्था है कि उसी की साधना से हमें अजेय शक्ति प्राप्त होगी.....
* अपनी इस मानव कल्याण कारिणी संस्कृति और मातृभूमि के लिए ही हमारा सर्वस्व समर्पित हो, 'जन-ज्ञान' की गत वर्षों से यही साधना रही है।
* सृष्टि में कुछ भी तो निरर्थक नहीं, प्रत्येक वस्तु और प्राणी की अपनी सत्ता है, जिसे हम उसके व्यक्तित्व की संज्ञा देते हैं।
* व्यक्तित्व का अपना वैशिष्ट्य रहता है, और वही स्वत्व उसका प्राण है।
* व्यक्तित्व अर्थात् इस वैशिष्ट्य का ओझल हो जाना ही है निरर्थकता, निरूद्देश्यता और निष्प्रयोजनता, यही है विनाश.....
* जिसने व्यक्तित्व की रक्षा की वही अमर हो गया.....
* जिसने व्यक्तित्व त्यागा वह चिरनिद्रा में सो गया.....
* ऐश्वर्य और चमक-दमक तथा बड़े-बड़े ढांचे निरूद्देश्यता के भटकाव पर विनाश का आहार बनने से नहीं रोक सके.....
* बड़ी-बड़ी व्यवस्थाएं और साम्राज्य भी निरसत्त्व होने पर जड़ हुए बिना नहीं रह पाए।
* ससत्त्व रहना ही तो है जीवित रहने की प्रतिश्रुति.....
* सत्यवान् ही साहसी है, वही पुण्यात्मा है और जीवित रहने का अधिकारी है....
* अनेक संस्थाओं, व्यवस्थाओं एवं पत्र-पत्रिकाओं के क्षणिक चमक दमक कर अदृश्य हो जाने का कारण भी यही है कि उन्होंने अपने सत्त्व को गंवा दिया.....
* 'जन-ज्ञान- ने अपने जन्म से ही स्व-संस्कृति और स्वदेश की सेवा का सत्संकल्प ग्रहण किया और उसी पर वह संवरा और पुष्ट हुआ तथा सत्त्व को प्रकटाता रहा है।
* आपदाओं, आलोचनाओं अभियोगों के अलावा अनेक तथाकथित अपनों ने ही उसे मिटाने के सपने संजोए किन्तु त्याग, तपस्या और कठोर साधना ने उसके 'सत्त्व' को संरक्षण दिया।
* असंख्य पाठकों और वैदिक विचारधारा के प्रति अनुरक्त जनों के शुभाशीर्वाद ही उसकी पूंजी हैं। 'जन-ज्ञान' उन सभी का चिरऋणी है जिनका आशीर्वाद उसे मिला है और उनका भी जिन्होंने मार्ग में कांटे बिछा कर परीक्षा ली है।
* 'जन-ज्ञान' महर्षि दयानन्द द्वारा पुनः उद्घोषित 'कृण्वन्तों विश्वमार्यम्' के सत् स्वप्न को स्मरण कराने के लिए असंख्य हृदयों में–जन-जन में स्वसंस्कृति के आराधन का सम्बल बनकर अग-जग में सत्य ज्ञान का प्रकाश पुनः बिखेरने में सफल हो और भारत पुनः विश्व वैद्य बनकर अशान्त जगत् को शान्ति का दान देने में समर्थ हो, उसी शुभ दिन की कल्पना को संजोए हम समर्पित हैं।

❖❖❖

हृदय मन्दिर के उद्गार

–दिव्या आर्य

देखी नहीं माँ जैवन्ताबाई, जिनके उच्च कोटि के संस्कारों ने प्रताप को 'महाराणा' बनाया,
देखी नहीं माता जीजाबाई, जिनके स्वाभिमानी विचारों ने शिवा जी को 'छत्रपति' बनाया,
देखी नहीं मां 'भगतसिंह' की, जिनका पुत्र 'रंग दे बसन्ती' गाते फांसी पर झूला,
देखी नहीं माता कौरां देवी, जिन्होंने 13 वर्षीय शहीद हकीकत को धर्मवीर बनाया,
देखी नहीं मां विद्यावती शारदा, जिनकी प्रेरणा ने भारतेन्द्रनाथ को 'महात्मा वेदभिक्षुः' बनाया,
हाँ! देखी मैंने 'माँ पण्डिता राकेशरानी'! जिन्होंने ऐसी जीवनियां को मुझे घुट्टी में-लोरियों में सुनाया,
हे मां! मैं भी बढूं, इन्हीं के जैसे 'राष्ट्र' रक्षाम्' के पथ पर निरन्तर,
बनाने आपके संस्कारों एव शिक्षा को सार्थक, यहीं हों हृदय मन्दिर के उद्गार!

आज मैं बात कर रही हूं एक **महान व्यक्तित्व भारतेन्द्रनाथ (महात्मा वेदभिक्षुः) की सहधर्मिणी और उनके ऐसे ऊर्जावान आवेग की प्रेरणा मां–पण्डिता राकेशरानी की**....जिनका जन्म हुआ **8 जून 1934 को बुलन्दशहर के ग्राम गिनौरा**– जन्नार्दार, मकान–पक्के वालों का में (पूरे गांव में यही एक मकान था जो पक्का था, इसीलिए इसे पक्के वालों का मकान कहते थे), **जून की तपती धरती में चन्द्रमा की सी शीतलता बिखेरता इस मुन्नी या राका का आगमन हुआ पं. रामचरण शर्मा और मां लीलावती के घर!**

दादा पं. रूपराम शर्मा ने **लाड़ली पोती** को प्यार से **"मुन्नी"** कहा तो पिता जी ने **लाड़ली बिटिया** का नाम रखा **"राकेश कुमारी"**।

होश सम्भालते ही बचपन से ही मां की लोरी सुनी **'अपने स्वामी की आज्ञा बजाएंगे हम'** अब तो **'वेदों का डंका बजाएंगे हम, ...**चाहे आर्यसमाज के जुलूस हों या प्रभातफेरी हों, मुन्नी सबसे आगे रहती और झण्डा उठाए गाती मां लीलावती के सिखाए गीत–**'भारत का कर गया बेड़ा पार वह मस्ताना जोगी'** या **'वेदांवाल्या ऋषया तेरे आवन दी लोड़'** अथवा **"श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने सीने में खाईं गोलियां"** अब तो शुद्धि का पाठ पढ़ाएंगे हम"। आदि–आदि....

अपने पिताजी से सुनी वीरों की कथाएं, देशप्रेम पर मर-मिटने की भावना और 2 वर्ष की आयु से ही नन्हीं छोटी सी मुन्नी (मां पं राकेशरानी जी) अपने पिताजी की उंगली पकड़कर आर्यसमाज में जाती और सन्ध्या-हवन के मन्त्र कण्ठस्थ कर सबको सुनातीं.... बस उस वैदिक विचारधारा का और देशभक्ति का ऐसा प्रचण्ड रंग चढ़ा उस मुन्नी के अन्तर्मन पर जो 80 के इस दशक में भी सहज ही दृष्टिगोचर होता है.

अम्मा! आपके जन्मदिवस पर आपको क्या दूं समझ ही नहीं आता! **बस कामना है कि हर जन्म मुझे आपकी ही कोख मिले और सौभाग्य मिले आपकी ही पुत्री होने का!** हर जन्म में इतने अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देना मेरे प्रभु कि मुझे मनुष्य योनि मिल सके! **नहीं बनना चाहती मैं मोक्ष गामिनी!.....क्योंकि...**आपकी पुत्री होने का लोभ मैं संवरण नहीं कर सकती.......

चाहती हूं...**हर जन्म में ऐसे ही माता-पिता जिनकी प्रेरणा से, जिनके संस्कारों से भारत मां का ऋण चुकाने इस धरा पर आऊं**...यद्यपि.... नहीं जानती और जन्मों को पर... हे प्रभु! इस जन्म को तो सार्थक बनाऊं।

नहीं देखा भगवान को... परन्तु मां से अलग उसकी सूरत हो नहीं सकती! मैं नतमस्तक हूं...अम्मा जी जैसी मूक साधक के लिए...."जीवेम् शरदः शतं, भूयश्च शरदः शतात्।" की अभिलाषा.....एवं. ....पिताजी के शब्दों में है भावाभिव्यक्ति.......

> *"आज भी इस विशाल धरती पर एकाकी चलते हुए जो कुछ भी हो रहा है उसका आधार, परमात्मा का आशीर्वाद जनता का प्यार और एक मात्र सहयोगिनी श्रीमती राकेशरानी की कार्य क्षमता है। दुःख में, सुख में, संकट में, विपदा में इस महिला ने जो साथ दिया उसका वर्णन लेखनी करने में असमर्थ है। निरन्तर रुग्ण रहते हुए भी 18-19 घंटे कुर्सी पर बैठकर मूक साधना करने वाले इस व्यक्तित्व का मूल्यांकन इतिहास करे या न करे...... लेकिन यह सत्य है कि यदि ऐसे 10 व्यक्ति भी सारे देश में मिल जाते तो देवदयानन्द के दिव्य स्वप्न पूर्ण होने में देर न लगती।"* –भारतेन्द्रनाथ.

माँ पण्डिता राकेशरानी के जन्मदिवस पर हार्दिक बधाई

"सचमुच आज कोई अनुभव करे या न करे, 'वेद' प्रचार के पवित्र कार्य में उनके योगदान का मूल्यांकन वर्तमान करे या न करे, किन्तु मैं जानता हूं कि एक न एक दिन निष्पक्ष इतिहासकार उनकी 'वेद साधना' को अद्वितीय स्वीकार किए बिना नहीं रह सकेगा.... जीवन के प्रत्येक चरण में मुझे उनका सहारा मिला, संकटों में उन्होंने पतवार सम्हाली और नैया पार लगाई। मान-अपमान की चिन्ता से दूर, यश-अपयश से निर्लेप, परिणाम कभी सोचा नहीं, आराम कभी, किया नहीं, चुपचाप काम ही काम! कितना अद्‌भुत जीवन है इस नारी का, कितना अद्‌भुत त्याग है!! इसलिए इस महान् देवी के प्रति मैं नतमस्तक हूं।

वे अपना 100 वां जन्मदिन मना सकें, इतनी ही दृढ़ता और गरिमा के साथ! हृदय की समस्त शुभकामनाओं के साथ,"

–वेदभिक्षुः

(पं. भारतेन्द्रनाथ) सन् 1977

सता, सम्पत्ति और अपराध ने राजनीतिक को राजधर्म से अलग कर दिया है।–राकेशरानी

अनुपमेय : राकेशरानी

–महात्मा वेदभिक्षुः

नेता बनना आसान है और उपदेश देना भी। लेख कविता और साहित्य सृजन करने वाले भी बहुत हैं, किन्तु **भारत के वर्तमान इतिहास में ऐसी किसी महिला के दर्शन दुर्लभ हैं। जिसने अपने को तिल-तिल कर के जलाया हो,** आराम, सैर, आमोद-प्रमोद और लौकिक कार्यक्रमों से परे रहकर केवल किसी के कहने पर जीवन के समस्त क्षणों की आहुति दी हो.... **वस्तुतः खोजने पर भी ऐसा व्यक्तित्व मिलना दुर्लभ है, इसलिए मैं अपने मानस की समस्त श्रद्धा से इन की वन्दना करता हूँ।** अपने किसी प्रिय व्यक्ति के सम्बन्ध में लिखते हुए लेखनी रुकती है किन्तु यह कृतघ्नता होगी, यदि मैं यह न कहूँ कि–**हमारी सारी सफलता का 95 प्रतिशत श्रेय पण्डिता राकेशरानी जी को जाता है।**

घर में अत्यन्त सरल, निरन्तर श्रम, साधना और पागलपन की सीमा तक कार्य के प्रति अनुरक्ति ही नहीं अपितु अपने को भूल जाने तक की भावना, उनके लिए सहज बन गयी है। उत्सवों के निमन्त्रण, सम्मेलनों की अध्यक्षता और राजनीति के प्रलोभन ठुकराना उनका स्वभाव है। और सबसे बड़ी बात यह है कि उनकी गत 30 वर्षों की (अब 64 वर्षों की) साधना केवल इसीलिए है कि हमारी भावना पूर्ण हो। क्रोध भी उन्हें आता है और झुंझलाहट भी, पर गत जीवन में 8-10 बार ही ऐसे अवसर आये होंगे। वे बातों में नहीं, काम में विश्वास रखती हैं, और यही उनकी सफलता का मूल मन्त्र है।

बड़े से बड़ा दु:ख और बड़े से बड़ा सुख उनके लिए समान है। प्रतिदिन नियम से प्रात: करोलबाग से 8 बजे वेद मन्दिर जाना, रात्रि को 8-9 बजे तक लौटना, फिर घर के कार्य करते रहना। पता नहीं कौन सी शक्ति है जिस के बल पर वे इतना बोझ उठा पाती हैं। सचमुच **आज कोई अनुभव करे या न करे, वेद प्रचार के पवित्र कार्य में उन के योगदान का मूल्यांकन वर्तमान करे ना करे, किन्तु निष्पक्ष इतिहासकार उनकी वेद साधना को अद्वितीय स्वीकार किये बिना चल न सकेगा। आठ वर्ष में 28 हजार वेद भाष्यों का प्रकाशन, प्रेषण और प्रसार (सम्प्रति लगभग साढ़े चार लाख) उनकी एक ऐसी देन है जिस पर जितना भी उनका अभिनन्दन किया जाए, थोड़ा है।**

अनेक सज्जनों ने उनके सार्वजनिक अभिनन्दन की इच्छा प्रकट की पर उन्होंने उसे मानने से स्पष्ट इन्कार ही नहीं किया अपितु यहाँ तक कह दिया कि ऐसा होने पर मैं उस दिन दिल्ली में नहीं रहूँगी। **वे उच्च कोटि की लेखिका, सफल सबल कवयित्री और उत्तम भाषण देने में समर्थ हैं। किन्तु अपने इन सब गुणों को दबाकर उन्होंने मशीन बन कर दयानन्द संस्थान को उभारा है। यह उनकी कृति उनकी गरिमा को स्पष्ट करती है।**

8 जून को उनका जन्मदिन था। मैं सोच रहा था, कि इस महान् आत्मा को क्या इसी तरह सदा चक्की में पिसना होगा। कहना बड़ा आसान है पर लगातार मशीन बन लगे रहना बहुत ही कठिन तलवार की धार पर चलने जैसा है। इसलिए वस्तुतः इनका अभिन्दन यही हो सकता है कि कोई उनके कार्य को सम्भाले। यह उनका दुर्भाग्य है कि उनकी सन्तानें उनकी राह पर न चल सकीं और अब मैं देख रहा हूँ कि वे भीतर ही भीतर टूट रही हैं। कार्य के बोझ ने उन्हें थका दिया है। फिर भी उनको देखकर कोई उनकी इस मनःस्थिति का अनुमान नहीं लगा सकता।

जीवन के प्रत्येक चरण में मुझे उनका सहारा मिला, **संकटों में उन्होंने पतवार सम्भाली और नैया पार लगायी, मेरे कर्म के प्रति अर्पित होकर जीवन उन्होंने जिया,** कभी भी राह की बाधा नहीं बनी अपितु बाधाओं को हटाने में सहयोग दिया। इसीलिए मैं हृदय से इस महान् देवी के प्रति नतमस्तक हूँ। ***प्रभु ऐसे कर्मठ कार्यकर्त्ता यदि 5-7 भी और उत्पन्न कर दे तो भारत का भाग्य बदल जाये, ऐसा मेरा विश्वास है।*** मैं असाध्य रोग से पीड़ित होकर भी उनके कारण निश्चिन्त हूँ। रोग की गम्भीरता त्याग अब तो दिन रात कार्य में लगा हूँ–केवल इन्हीं के बल पर परमात्मा इन्हें शतायु करें, मंगल कामनाओं के साथ।

(जनज्ञान 1982 से उद्धृत)●●●

महात्मा वेदभिक्षुः मात्र मेरे पति नहीं थे अपितु एक ऐसे शिल्पी थे जिन्होंने मुझमें और अनेकों में ऋषि भक्तों की ऐसी मूर्तियाँ गढ़ डालीं, जो कभी आंधी, तूफान और बारिश में भी नहीं गलीं। - राकेशरानी

मेरे माता-पिता द्वारा प्रदत्त यह शरीर 81 वर्ष का भले ही हो गया, लेकिन मैं कभी मरूँगी नहीं, क्योंकि मैं जन्मी ही नहीं थी। - राकेशरानी

क्रान्ति बाहर नहीं होती, पहले हमारे अन्दर होती है। –राकेशरानी

पण्डिता राकेशरानी एक शब्द चित्र

–बन्धु ज्ञानचन्द्र

यह एक परम्परा सी ही है। षष्टीपूर्ति के पश्चात् पंच सप्रति वर्ष पूर्ति पर उत्सव मनाने की। परन्तु आज जिनकी पंच सप्रतिवत्सर वह परिपूर्ति हम मना रहे हैं, मात्र और औपचारिक, कर्मकाण्डीय प्रथा को पोषित नहीं कर रहे हैं वह न कोई प्रदर्शन है और न कोई अर्थहीन व्यक्ति प्रशंसात्मक अनुष्ठान व समारोह हैं।

हम आज एक जीवित और जीवन्त सद्गुण समुच्चय और आदर्श-मूल्यों की समवेत विद्यमानता के प्रति अपनी भावनाएँ समर्पित कर रहे हैं.... ताकि उन सद्गुणों, उन आदर्शों-मूल्यों को हम भी अपने जीवन में अनुपालित कर स्वयं के अन्तर और बाह्य को ज्योतित कर सकें।

आदरणीया पण्डिता राकेशरानी व्यक्ति नहीं एक उच्च कोटि के जीवन की अर्थवत्ता की अभिव्यक्ति हैं। इस मूल्यादर्शविहीन और अनगिन, जन्यताओं से भरे अपराधकवलित वर्तमान वातावरण में एक निश्छल, निष्कलुष और शशिशुभ्र प्रभा विकिरण, करने वाले ज्योति स्तम्भ का स्तवन और गरिमा प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं। **भाषागत शब्दों की सीमा बहुत संकुचित है हमारे भावोद्गारों को प्रकट करने के लिए,** अतः यह लेखन एक ओर दिशाइंगित ही समझना चाहिए।

आदरणीया पण्डिता जी का जन्म 8 जून-1934 ई. को, बुलन्दशहर के गिनौरा ग्राम में हुआ था। नैष्ठिक ब्राह्मण पण्डित रामचरण शर्मा पिता तथा विदुषी एवं दृढ़ कर्त्तव्यनिष्ठ, आचारवान् महिला लीलावती इनकी यशस्विनी माता थीं। स्कूली शिक्षा तो इन्टर तक ही हुई। किन्तु **अनेक ग्रन्थों और शास्त्रों का पठन-मनन अल्पायु से ही इनकी रुचि का विषय था। बाद में इन्होंने साहित्यरत्न की परीक्षा भी पास की।**

पण्डिता की आदृत उपाधि से अलंकृत राकेशरानी का **विवाह श्री भारतेन्द्रनाथ से 23 जुलाई 1950 को हुआ था।.....** इस विवाह का एक रोचक प्रसंग यह है कि **श्री भारतेन्द्रनाथ ने कन्यापक्ष को कहा कि वे मात्र पाँच व्यक्ति ही विवाह में बारात रूप से लेकर आएंगे। परन्तु विवाह में वर-पक्ष में प्रायः 80 व्यक्ति गए थे।** हुआ यह कि श्रीमानजी के मित्र व सम्बन्धी सभी इनकी इस घोषणा को जानते थे, कि **वे विवाह नहीं करेंगे और अविवाहित रहकर वेद-प्रसार के कार्य में ही लगेंगे। परन्तु जब लोगों ने उनके विवाह की बात सुनी तो वे इस आश्चर्य में पड़ गए कि ऐसी कैसी और कौन सी कन्या है जिसके कारण यह तपस्वी विवाह का निर्णय ले बैठा। यही देखने के लिए अनाहूत ही इतने लोग अपने व्यय पर पहुँच गए।**

> ***श्री भारतेन्द्रनाथ जी ने कन्या पक्ष को कह दिया कि दहेज के नाम पर एक चम्मच तक नहीं लेंगे। मात्र एक साड़ी-सहवस्त्रों में विवाहिता को ले जाएंगे। और एक साड़ी, उपहार स्वयं लेकर आएंगे। उस काल में इस अतीव आदर्शपूर्ण और अतिशय सीधी-सरल शादी पर लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ था।***

सुश्री राकेशरानी के उस समय के व्यक्तित्व पर एक लघु समीक्षा देना अनुचित न होगा। **उस काल के उनके छविचित्रों से यह अनुमान लगाना कठिन न होगा कि किस प्रकार इस अनिंद्य रूप से लावण्या व गुणवान कन्या को देखकर श्री भारतेन्द्र जी ने अपना विवाह न करने का निश्चय तोड़ दिया होगा।** विवाह पूर्ण रूप से महर्षि दयानन्द वर्णित वेदमन्त्रों के साथ आर्य समाजी विधि से हुआ। **उस विवाह में अनेक गणमान्य व्यक्तियों व विद्वानों में श्री सुन्दरलाल वैद्य, श्री सुखदेव शास्त्री एवं प्रो. रत्नसिंह आदि सम्मिलित हुए थे।**

वेद प्रचारार्थ श्री भारतेन्द्रनाथ अहर्निश अध्ययन, मनन वार्तालाप व प्रवचन में दत्तचित्त रहते थे। **अर्धांगिनी राकेशरानी जी भी आते ही उनके सहयोग में लग गईं।** साथ में उनकी सब प्रकार की सुविधाओं और आवश्यकताओं को ध्यान में रखना उनका पुनीत कर्त्तव्य हो गया। **अपनी देहचिन्ता व भोजन-शयन की ओर से लापरवाह श्री भारतेन्द्रनाथ का ध्यान रखने में राकेश रानी जी मातृवत् भगिनीवत् व समर्पित पत्नीवत्, उनकी सुश्रुषा व सहयोग में लगी रहती थीं।**

वे स्वयं भी प्रवचन वार्ता आदि देती थीं।

एक बार महाराष्ट्र में किसी सभा में पण्डिता **राकेशरानी ने यह कहा कि प्रत्येक समुदाय और मानव समाज को गीता पढ़नी आवश्यक है, उस पर इस बात को धर्मनिरपेक्षता के विरुद्ध कथन कट्टरपंथी मानकर मुकदमा कर दिया गया था।**

मुस्लिम बन्धु इनके भारत पक्षी, वेद पक्षी एवं न्याय युक्त आर्य हिन्दू पक्ष के लेखों, प्रवचनों से क्रुद्ध और क्षुब्ध हो उठते थे। **एक समय इन पर लगभग चालीस मुकदमे चलाए जा रहे थे।** ईश्वर में दृढ़ विश्वास और उत्तम व सटीक तर्कों के बल पर प्रायः सारे ही मुकदमे ससम्मान निपटे।

एक बार तो स्थान-स्थान पर पोस्टर लगाए गए थे कि इस काफिर औरत को मार कर दोजख में भेज दिया जाए। इसकी सूचना पुलिस को दी गई। लगभग एक मास तक 15-20 पुलिस वालों की एक बटालियन इनके निवास पर बैठी रहती थी। पूरा ट्रक लेकर वे लोग आते जाते थे।

दयानन्द संस्थान नामक एक संस्थान का प्रारम्भ किया स्वनामधन्य पति श्री भारतेन्द्रनाथ ने। उसके लिए बुराड़ी ग्राम से आगे इब्राहीमपुर में जमीन खरीदी गई। जहाँ वेदमन्दिर स्थापित किया गया जो आज भी अपने लक्ष्य की दिशा में चल रहा है।

1966 में 'जनज्ञान' पत्रिका प्रारम्भ हुई। उसका सम्पादन एवं समस्त व्यवस्था राकेशरानी ही सम्भालती रहीं।

अनेकों सुन्दर, खोजपूर्ण व ज्ञानवर्धक लेखों से पूर्ण यह **पत्रिका 51 वर्षों से प्रति मास अपना वेद-सन्देश जन-जन में वितरित कर रही है।** हर प्रकार के संकट, कष्टों, व्याधियों व **प्रायः अर्थाभाव के बावजूद** वह पत्रिका चलती ही रही और चल ही रही है।

आज तक इतने वर्षों में ऐसा कभी न हुआ कि उसका एक भी अंक न निकला हो। यहाँ तक कि **भारतेन्द्रनाथ जी के देहान्त के अति कष्टदायी वज्राघात मास में भी यह पत्रिका पूर्ववत् निकली।**

दिन-रात परिश्रम और सदैव वेदप्रचार की धुन में लगे रह कर श्री भारतेन्द्रनाथ का स्वास्थ बिगड़ गया। उन्हीं दिनों वे हिन्दी अर्थ सहित चारों वेदों के प्रथम प्रकाशन की योजना में दिनरात लगे हुए थे। इस पुण्य प्रकाशन के प्रचार, धन की व्यवस्था प्रिन्ट व प्रूफ आदि सारे कार्यों में उनका समय जाता था। उन्होंने योजना को पूर्ण रूप देकर वह कार्य प्रारम्भ कर दिया था। **अधिक श्रम और सदैव चिन्तनरत और खान-पान के प्रति उदासीनता से व्याधि ग्रस्त होकर श्री भारतेन्द्रनाथ ने देह छोड़ दी।**

देह त्याग से प्रायः पाँच वर्ष पूर्व वे वानप्रस्थ ग्रहण कर **महात्मा वेदभिक्षुः के रूप में** ही कार्य-व्यवहार कर रहे थे।

उनके प्रारम्भ किए सारे आदर्श पूर्ण कार्य राकेशरानी ने पूरे किए और आजतक सतत् उसी में लगी हुई हैं। मन, वचन, कर्म व तन और धन -समस्त साधन और अराधना वेद प्रचार व वेद प्रतिष्ठा वर्धन पर ही लगे रहते हैं। **वेदों के 20 से अधिक संस्करण वे निकाल चुकी हैं** भारत के अतिरिक्त विदेशों तक भी चतुर्वेद संहिताएं इनके द्वारा भेजी जा चुकी हैं।

आज इनके 81वें जन्म दिन पर यदि इनके कार्य का लेखा जोखा लें तो इस 81 वर्ष में इन्होंने कम से कम डेढ़ सौ वर्ष का कार्य किया है और अद्यावधि कर रही हैं।

पाँच पुत्रियों और उनकी सुयोग्य सन्तानों, धेवतियों, धेवतों, परपोतों से युक्त राकेशरानी जी का जीवन अत्यन्त प्रेरणाप्रद है, उत्साह और विश्वास उत्पन्न करने वाला है। **इस स्वार्थ और आपाधापी के भयानक काल में भी एक निस्पृह तपस्विनी और कठोर साधिका साधि की तरह वे अपने कर्त्तव्यकर्म पर लगी हुई हैं।......**

हम हृदय के अन्तरतम से इन्हें शुभकामनाएं देते हैं। **हालाँकि हम इन्हें कुछ भी देने में समर्थ नहीं हैं। हमें ही इनसे प्रेरणा, उत्साह, दिशा और आशीर्वाद की कामना रहती है।** ताकि यत्किंचित हम भी उन उद्देश्यों लक्ष्यों की ओर उन्मुख होकर परिश्रम करते रह सकें। जिनके लिए इन महिमामयी त्याग-विग्रह राकेशरानी ने अपना जीवन, साधन और सर्वस्व समर्पित किया हुआ है।

साधन, सुविधा, स्वास्थ्य और संतृप्ति के साथ ये शताधिक वर्षों तक हमारे मध्य एक ज्योतिस्तम्भ की तरह विद्यमान रहें। यही प्रार्थना है।

-श्री अरविन्द चेतना समाज, दिल्ली

जन्मदिवस की पावन बेला शत्-शत् तुम्हें प्रणाम्

–विजय गुप्त

चहूं दिशा में चलें आंधियां, भयावह जहां तूफान,
वाणी और कर्म से अमृत छलका बार-बार किया विषपान,
जीवन कलश से हर बार बरसे, अमृत के वरदान
जन्मदिवस की पावन बेला, शत्-शत् तुम्हें प्रणाम्!

पंडिता राकेशरानी नाम, व्यक्तित्व में चन्दा का प्रकाश,
हृदय भीतर निरन्तर विद्यमान, परम पिता का विश्वास,
कर्म की स्फूर्ति में समाहित् सधर्म का उल्लास
मौन साधना से नित्य करें, जनज्ञान का कल्याण,
जन्मदिवस की शुभवेला बारम्बार तुम्हें प्रणाम्।

दयानन्द के प्रखर सिपाही वेदभिक्षुः था जिनका नाम,
सहधर्मिनी उनकी बन, पूर्ण किए संकल्पों के अनुष्ठान,
वेद मन्दिर की पावन धरा, जहां भव्य दयानन्द संस्थान
जन्मदिवस की मंगल बेला पर शत्-शत् तुम्हें प्रणाम्!

ज्ञान का प्रकाश फैले, ज्ञान से हो सबका कल्याण,
ज्ञान की अमृत वर्षा से हो जन-जन का उत्थान,
ज्ञान की उज्जवलता निखरे, विश्व का उद्यान,
आपके सद्प्रयासों से निखरा सबका प्रिय 'जनज्ञान',
धरा से गगन तक सर्वत्र मिले आपको सम्मान!

शतायु से भी अमर देखें, बहारों की मुस्कान,
गतिशील जीवन में हो सत्कर्म नित गतिमान
अमृतोत्सव की आनन्द बेला, पं. राकेशरानी जी
शत्-शत् तुम्हें बधाई, कोटि-कोटि प्रणाम्।

प्रशस्ति दोहाली-1

–ज्ञानचन्द्र

इस कलिकाल कराल में दुर्लभ हैं ये तत्त्व,
किन्तु यही इन पंडिता जी का जीवन-सत्त्व।

सत्य, धर्म-निष्ठा, प्रबल-श्रम अरु कर्म-स्वभाव,
उत्तम शुद्ध चरित्र का कण भर नहीं अभाव।

ज्ञानपूर्ण जनज्ञान का फैला शुभ्रप्रकाश,
पूर्ण कर लिए वर्ष शुभ गौरवपूर्ण पचास।

कोटि बधाई आपको, शुभकामना अगण्य,
प्रेरक जीवन आपका, जैसे शुद्ध हिरण्य।

उर की सादर भावना मन के विनमय विचार,
अर्पित हैं तब हेतु ही आप करें स्वीकार।

अनासक्त करती रहीं कर्म योग उद्दाम,
ज्ञान, भक्ति की साधना सदा चली अविराम।

वेदभिक्षुः के योग की चरितार्थता प्रमाण,
आप पंडिता हैं स्वयं जो अनथक क्रियमाण।

धन्य आप अरु धन्य है, जननी जनक महान,
धन्य आपकी संतति, धन्य पत्र जनज्ञान।

वेदभिक्षुः के मन से निःसृत मंदाकिनी रूप जनज्ञान,
श्री पंडिता तरंग-तरंगित, ज्ञान प्रवाह रूप अभियान।

'दिव्या' रूप नवल प्रधारमय यह साहित्यिक फल,
महान अमल वेद मन्दिर भूमि पर कल्लोलित अनुपम
अवधान।

देव सवितृ कृपा परिमल युत अग्नि, इंद्र, अनुकम्पा रूप
संतत जनप्रेरणा विधायक वेद ज्ञान सिंचित सद्रूप

बहुमुखी प्रतिभा की धनी श्रद्धेय माता राकेशरानी

-सत्यानन्द आर्य

विविध झांकियाँ

- वैदिक संस्कृति, वैदिक धर्म, वैदिक सिद्धान्तों की सन्देश वाहक।
- हिन्दु हित, हिन्दु संगठन, हिन्दुत्व के लिए संघर्ष की मशाल।
- प्रखर राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय चेतना में निर्भीक नेतृत्व।
- देव दयानन्द के प्रति समर्पित-सच्ची आर्य वीरांगना।
- उत्सर्गमयी वीर भावना-संघर्षशील जीवन की सफल नेत्री।
- धर्म अध्यात्म राष्ट्रजागरण, प्रेरक जीवनों के विचार संचार का अद्भुत समन्वय।
- सुयोग्य लेखिका, भावनापूर्ण गीत रचयिता, साहित्यकार व सफल सम्पादक।
- विदुषी, प्रभावशाली वक्ता, गहन चिन्तक।
- आदर्श सहधर्मिणी-कदम से कदम का साथ चारों वेदों के हिन्दी भाष्य को सर्वप्रथम मात्र पैंतीस रुपए श्रद्धाराशि में उपलब्ध कराने के अनूठे कार्य में अनुपम योगदान।
- पतिदेव के सपनों को साकार करने में कृत संकल्प।
- प्रतिकूल परिस्थितियों में भी असाधारण धैर्य की प्रतिमूर्ति।
- सुसंस्कारित सन्तान की निर्मात्री व ममतामयी मां।
- ऋषि दयानन्द के पथगामी माता-पिता की आशाओं पर खरी।
- शहीद क्रांतिकारी ससुर व राष्ट्रवादी सासू मां की क्रान्ति की विरासत की संरक्षक।
- अनुपम व्यक्तित्व-कर्मठ, सत्यनिष्ठा, स्पष्टवादिता, संवेदन शीलता, सहृदयता।
- ऐसे महान व्यक्तित्व के जन्मदिवस पर मंगल कामनाएं-'जीवेम शरदः शतं' की प्रभु से प्रार्थना।

सफल जयन्ती

-ज्ञानचन्द्र

सरल प्रकृति अमल चरित्र
मति-गति प्रखर गुणवन्ती,
महिम्ना देविश्री राकेशरानी
सफल जयवन्ती.....
महात्मा ज्ञानवान् महान
श्रीयुत वेदभिक्षुः जी,
सतत वेदार्थ परिमन्वक
विचारक सबल सत्यार्थी॥ महिम्ना...
किया वेदार्थ के अनुवाद मुद्रण
का महान सुकर्म,
प्रकाशन पत्रिका का जनज्ञान से
पूरा किया निजधर्म
बनीं ऊर्जा तथा श्रीशक्ति
महदाशय महात्मा की,
कि श्री राकेशरानी प्रेरणामय
सहचरी उनकी
महत् शुभ वेद के सुप्रचार के
अभियान उत्तरमतर
प्रकाशन पुस्तकों का जो कि
शिक्षामय सरसवन्ती॥ महिम्ना...
यही सत्कार्य, मनुज विकास की
जो योजना सुन्दर
उन्हीं की योग्य पुत्री कर रही
'दिव्या' सतत तत्पर
उन्हें सद्भावना, शुभकामना
देते हृदय से हम,
सुयश के साथ दीर्घायु रहें
देवी सुतावन्ती....
महिम्ना देवि श्री राकेशरानी
सफल जयवन्ती॥

पंडिता राकेशरानी के जन्म दिवस 8 जून पर एक अभिनन्दन

-स्वामी धर्मा प्रेमानन्द

8 जून को पंडिता राकेशरानी का जन्म दिवस है। इसे हम एक जन्म दिवस के रूप में स्मरण नहीं कर रहे। इस अवसर पर स्वजन और आत्मीय बन्धु दीर्घ जीवन की कामना करते हैं। किन्तु दीर्घजीवन की कामना किसलिए? **इसलिए न कि वे उस दिव्य जीवन की सार्थकता से सहमत होते हैं।**

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर जी के जीवन का वह प्रसंग जब दिल्ली के कुछ मान्य नेता सावरकर जी की स्वास्थ्य कामना और दीर्घजीवन की प्रार्थना के लिए उनके पास गए। सावरकर जी बोले, क्यों मेरे दीर्घ जीवन की कामना करते हो? **जबकि मैं नितान्त अकेला हूं, और चिरवांछित लक्ष्य को पूरा करने की शक्ति, सम्बल और सहयोगी अब मेरे पास नहीं है। यदि तुम मेरे साथ खड़े होकर इस को वांछित गौरव दिलाने में जुट सको तो मेरे जीवन की सार्थकता है, मैं दीर्घ जीवन की साधना करूंगा अन्यथा अपने लिए जीते रहने वाले जीवन भार की क्या सार्थकता है?"** सावरकर जी के ये शब्द एक महान् जीवन दृष्टि को स्पष्ट करते हैं कि वह जिन्दगी कोई जिन्दगी नहीं है जो केवल अपने लिए जिए और **ऐसे दीर्घ जीवन की सार्थकता है जिनका प्रतिपल देश और समाज को समर्पित हो।**

वह जिन्दगी अभिनन्दनीय है जो पीड़ाओं के अनन्त सागर में डूबते उतराते भी सेवा पथ पर अविचल गतिशील रहे। और उस महाप्राण की हर वर्षगांठ किसी व्यक्ति की वर्षगांठ नहीं होती बल्कि एक पावन संकल्प और महान् लक्ष्य की वर्षगांठ अथवा अभिनन्दन होता है।

पंडिता राकेशरानी का सारा जीवन हिन्दू समाज के महान् लक्ष्य के लिए समर्पित रहा है। महात्मा वेदभिक्षुः जी के जीवित रहते राकेशरानी जी उनके साथ कन्धे से कन्धा मिला कर इस लक्ष्य पर बढ़ती चलीं। महात्मा जी के महाप्रयाण के बाद इस महान लक्ष्य की सारी जिम्मेदारी को उन्होंने अकेले अपने कन्धों पर उठा लिया। निःसन्देह एक अकेली महिला के लिए यह दायित्व वहन करना हिमालय उठाने के समान था।....

लेकिन वे अकेली महिला रह कहां गई! लक्ष्य के प्रति समर्पण और उसकी दिव्यता के पीछे हजारों हृदयों का संकल्प उनकी शक्ति और प्रेरणा है। **यद्यपि यह निश्चित है कि इस संघर्ष यात्रा में उन्हें प्रबल तूफानों से जूझना पड़ा है, अनेक कष्ट झेलने पड़े हैं। अदालतों के दरवाजों पर हाजरी भी देनी पड़ी है।** ऐसे तूफानों से घिरे संकल्पधनी व्यक्तित्व का जिनके जन्म दिवस पर अभिनन्दन शब्दों में नहीं अपितु उनके कर्म यज्ञ में अपने कर्म की आहुति देकर ही किया जा सकता है। **अतः उनके जन्म दिवस पर उनका अभिनन्दन करने का सर्वोत्तम माध्यम यही है कि हम तन-मन-धन से उस लक्ष्य में जो भी आहुति दी जा सकती है, दी जाए।**

आखिर इस संकटग्रस्त स्थिति में हिन्दू समाज के प्रबोधन का यह लक्ष्य हम सबका ही तो है उन्हीं का तो नहीं, **वे तो पुरोधा हैं।** फिर आइए, संकल्प करें कि **उनके जन्म दिवस पर हम वेद प्रचार तथा हिन्दुत्व जागरण के इस यज्ञ में सामर्थ्य भर अपनी आहुति डालकर उनके साथ कदम बढ़ाएंगे।....**

उनके कर्मशील जीवन के अभिनन्दन का यही सर्वोत्कृष्ट उपाय भाग है। ●●●

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य अपने तथा अपने मित्र परिवारों में पहुँचाएं। मूल्य 2800 रु.। बढ़िया कागज-मूल्य 3600 रु.

घण्टों की बहस के मुकाबले, स्नेह की जरा सी मुस्कान ज्यादा असरदार होती है। –राकेशरानी

पंडिता राकेशरानी की कुछ कविताएं

भगवन्! भले बुरे हम तेरे

भगवान! भले बुरे हम तेरे।
द्वार तुम्हारे आये माँगते, बन्धन काटो मेरे।
भगवन्! भले बुरे हम तेरे॥
तू स्वामी है जगतीतल का, हम सेवक अज्ञानी,
तू है अजर अमर अविनाशी, हम मूढ़मति अभिमानी,
भूल तुझे सब भटक रहे हैं, शान्ति दान अब दे रे,
भगवन्! भले बुरे हम तेरे॥
कोटि-कोटि पापों से पूरित, मेरी जीवन गाथा,
अन्धकार में भटक रही है जीवन तंत्री त्राता,
ज्योति दिखा हे नाथ उबारो, मांग रहे नित टेरे,
भगवन्! भले बुरे हम तेरे॥
ज्ञान दीप को भूल बावरे, माया पीछे धाये,
सत्य वस्तु को छोड़ भला क्या छाया कोई पाये,
राह दिखा ओ! दीन दयालु, द्वार पड़े हैं तेरे।
भगवन्! भले बुरे हम तेरे॥
आज हमारी नौका डगमग, डोल रही है स्वामी,
जगत भंवर में गोते खाता, व्यथित हुआ है प्राणी,
एक तुम्हारी आशा अब है, हमको साँझ सवेरे,
भगवन्! भले बुरे हम तेरे॥
जीवन सफल बनाओ भगवन्!। दो आशीष हमें तुम,
तुझमें खो दें अपनेपन को, और कहें केवल तुम,
जगत्-उद्धारक परमपिता हो, एक सत्य प्रिय मेरे,
भगवन्! भले बुरे हम तेरे॥

जाति को जीवन दो भगवान्!

जाति को जीवन दो भगवान्!
आशा के अंकुर उपजा दो, परहित का पीयूष पिला दो।
सेवा का सन्मार्ग सुझा दो, साहस का सोपान। जाति....
प्रेम एकता का वह वर दो, ज्ञान उजाला घर-घर कर दो।
कूट-कूट कर मन में भर दो, स्वाभिमान सम्मान। जाति...
दलितों का अधिकार दिला दो, बिछुड़ों को फिर गले मिला दो॥
भेदभाव का भूत भगा दो, हों सब लोग समान। जाति....
विद्वानों के संकट टारो, गो कुल के कुल कष्ट निवारो।
बलहीनों में बल संचारों, निर्भर करो निदान॥ जाति...
देश-भक्ति की ज्योति जगा दो, धर्म-धाम का द्वार दिखा दो।
कर्मवीर बनना सिखला दो, कर दयालुता दान॥ जाति....

ऐसी धन-दौलत जोड़े रखने का क्या फायदा जो विपदा की घड़ी में भी खर्च न की जा सके।–राकेशरानी

तुम शक्ति दो नाथ ऐसी

तुम शक्ति दो नाथ ऐसी कि मिलकर,
दयानन्द का काम पूरा करें हम।
उसकी बतायी हुई राह पर हम,
सदा ही चलें, औ सदा ही बढ़ें हम।.....
अधूरा पड़ा कार्य वेदों का भारी,
सिसकती खड़ी आज दुनिया है सारी।
प्रभो! शक्ति दो, हम धरा को उठाएं,
बिलखते हुए मानवों को हँसाएँ।
पढ़ें 'वेद' दिन रात सबको पढ़ाएँ
चलें सत्य पथ पर सभी को चलाएँ।
उठें एक होकर, लिये ओम् ध्वज को,
बनें आर्य औ आर्य सबको बनाएं।

नहीं प्रभु से प्यार अगर है

नहीं प्रभु से प्यार अगर है तो जीवन बेकार।
ना ज्ञान सम्बल के साथी सूना है संसार।।
जो मिट जाए, जल जाए रे! उससे कैसी प्रीति।
अजर अमर अविनाशी प्रभु को भूला है यह रीति।।
कभी न पहुंचा पायेगी रे, पागल प्रिय! उस पार।
नहीं प्रभु से प्यार अगर है तो जीवन बेकार।।
माया की इस नगरी में फिर-फिर क्यों अनजान।
स्वयं मिटाता जीवन बल क्यों रोता है नादान।।
आनन्द घड़ी हैं जीवन की, कर सोच समझ व्यवहार।
नहीं प्रभु से प्यार अगर है तो जीवन बेकार।।
पत्ते-पत्ते में खोजे क्यों पागल, हीरे मणियां।
प्राण निरख ले रे अन्तस् में मिल जाएं मधुकलियां।।
जगमग-जगमग स्वर्ण दीप सा, चमके जीवन हार।
नहीं प्रभु से प्यार अगर है तो जीवन बेकार।।

तुम विराट् तुम जीवन धन हो

तुम विराट् तुम जीवन धन हो,
तुम सम्बल प्राणों के प्राण।
अणु-अणु की गति साधन,
संबल, तुम ज्योतित जय, सत्य ललाम!
ओ मेरे प्रभु तुम्हीं चलाते,
धरती का सारा व्यापार।
रक्षक, सविता, उन्नायक हैं,
तुम अन्तर वीणा के मार।
जन-जन की प्रतिभा के प्रहरी,
सत्य अर्थ सुख के दातार।
तुमसे मिलकर तुम में खोकर,
सून लूं प्रियतम प्राण पुकार।
चलें सभी प्रिय पास तुम्हारे,
करें तुम्हारा ही गुण गान।
तुमसे लेकर ज्योति सुधाबल,
धरती पाए शान्ति विराम।
तुम ही सत्य हो ओ मेरे प्रभु,
तुम छावों अन्तर में प्राण।
दूर करो अज्ञान तिमिर तुम,
भर दो जीवन में जय गान।

करुणामय करुणानिधे

करुणामय! करुणानिधे! अशरणशरण महान्।
ज्योतिपुंज सुखसिन्धु हे! दीनबन्धु भगवान!।।
तरणितार भव पार करि, पूरण सब अभिलाष।
पल-पल टेरत नाम तव, छूट जात जग पाश।।
अन्तर्यामी नाथ तुम, जान रहे सब पीर।
तुम बिन सूना पथ है, तुम बिन अग्नि समीर।।
शक्ति भक्ति हो नाथ तुम, तुम हो कृपानिधान।
तुम बिन ना उर चांदनी, तुम से सदा विहान।।
पुण्य धाम की चाह में, भूल गई सब राह।
तुम से प्रीत न कर सकूं, पुनि-पुनि तेरी चाह।।
उर में तेरा धाम है, मुख पर तेरा नाम।
तू ही हर रग में रमा, तब होवे कल्याण।

भगिनी राकेशरानी को 8 जून जन्मदिवस पर बधाई

धन्य हैं राकेशरानी धन्य उनका देश है,
न्याय जिनकी आत्मा है, सत्य जिनका वेश है,
सदा श्रम अरुकर्म में संलग्नता का योग है,
सतत वेद प्रचार जिनके समय का उपयोग है,
पत्रिका 'जनज्ञान' को सींचा स्वयं के रूप से,
प्रेरणा लेती रही परमात्मा अव्यक्त से,
महर्षिवर श्री दयानन्द की परम अनुरक्ति से,
साधना-संयुक्त निशि-दिन दिव्य प्रभु की भक्ति से
वेदभिक्षुः महान की चिर-संगिनी अरू शक्ति हैं
सतत निज कर्त्तव्य पथ पर ज्ञान की अभिव्यक्ति हैं
दिव्य गुणमय, बहुल कर्मठ सौम्य 'दिव्या'सी सुता
जो सतत निज जननि के व्यवहार की शुभतम विधा
पंडिता राकेशरानी आपको कोटिशः नमन
भेंटते उद्गार उर में ज्यों ललित सुरभित सुमन
शत-शतात् सुवत्सरों तक आपका जीवन रहे
कीर्ति, बल बढ़ते रहें, बढ़ते सुधन-साधन रहें
पंडितावर महिम्ना को आत्मतोष बना रहे
'ज्ञानचन्द्र' परमप्रभु से विनय इतनी कर रहे।

-ज्ञानचन्द्र

वेद क्यों पिछड़ गया?

आदरणीय सम्पादक जी,

सहर्षादर नमस्ते!

कोई-कोई स्त्री अपने पति की अचानक मृत्यु का विश्वसनीय समाचार सुन कर या शव को देखकर भी चिल्ला उठती है-"नहीं, ये झूठ है! ऐसा हो नहीं सकता!! ये मरे नहीं है, अवश्य अभी जी उठेंगे!!!"

इस लेख का शीर्षक देख कर भी भावुकतावश कुछ वेदभक्त बन्धु भौंहे तान लेंगें। जबकि सच्चाई है कि दुनिया की सभी भाषाओं के संस्करणों में सर्वाधिक छपने वाली पुस्तक है-बाईबल। इसके बाद गीता, कुरान और रामायण है। वेद नहीं!

जैसे दुनिया के एक सौ महापुरुषों में बुद्ध, ईसा, मुहम्मद, नानक आदि का तो नाम है, किन्तु भारत के राष्ट्रपुरुष राजा राम और महाभारत के नायक श्री कृष्ण का नहीं। क्योंकि हमने राम और कृष्ण को विश्वसनीय आदर्श-महापुरुष होकर सबके संग यहां रहने ही नहीं दिया। **इन्हें पूर्ण ब्रह्म का दर्जा देकर इस धरातल से काफी दूर ऊपर के किसी कल्पना-लोक में भेज दिया।** तभी तो विगत मनमोहन सरकार द्वारा रामसेतु तोड़े जाने के विवाद पर हलफनामा में यह लिखने का दुस्साहस हो गया कि **'राम भारत के इतिहास-पुरुष नहीं, बल्कि रामायण में महाकाव्य के काल्पनिक पात्र हैं।'**

जिस तरह पौराणिक लोगों राम-कृष्ण को अलौकिक-अनादर्श देवता बना दिया; कुछ-कुछ उसी तरह **वेद के एकमात्र सक्षम पहरेदार-आर्यसमाज भी अनेक खण्डों में बंटे चारों वेदों के हर मन्त्रों का दो-तीन पृष्ठों में पदार्थ, प्रमाणार्थ, अन्वय, पदार्थान्वय, भाषार्थ, भाष्यसार, अलंकार, समीक्षादि देखकर-दिखाकर प्रफुल्लित होते हैं।** जबकि.....**जन सामान्य का ऐसा गुरुकुलीय वेद संस्करणों से मन उचट जाता है।**

जन-जन तक और घर-घर तक वेद को पहुंचाने में **दयानन्द-संस्थान का कार्य** प्रशंसनीय है, किन्तु वेद के स्वर मुक्त मन्त्र और हिन्दी में उसके सरलार्थ सहित एक जिल्द में यदि छापा जाए, तभी इसका दाम कम और प्रभाव ज्यादा होगा! जैसे बाइबल की संख्या 66 है, गीता की संख्या-27 है, रामायणों की भी संख्या अनेक हैं। किन्तु कोई बाइबिलें, गीतों, रामायणों नहीं कहता, उसी तरह हमें भी 'वेदों' नहीं कहना चाहिए, क्योंकि चारों वेद अभिन्न हैं, **अतः एक ही वेद का ऋग्, यजु, साम और अथर्व नामक चार खण्ड मानना चाहिए।** बाइबलों की तरह वेद विभिन्न कालों में विभिन्न देवों द्वारा नहीं बनाए गए हैं। अतः वेद को अलग-अलग (वेदों) कहना, या गीतानुसार सामवेद श्रेष्ठ कह देना-वेद को कमजोर करने जैसा शब्द 'वेदान्त' शब्द भी वेद विरोधी दिखाता है, क्योंकि वेद का ज्ञान अन्तरित है।

आज के विकसित तकनीक के कारण सुन्दर और महीन कागज व छपाई में छियासठों बाइबल एक जिल्द (1600 पृष्ठ, 1 किलो वेट) में छप सकता है, तो 20 हजार 416 मन्त्रों वाला सम्पूर्ण वेद क्यों नहीं?

दुनियां के लगभग सौ करोड़ हिन्दुओं में अभी भी वेद के प्रति जितनी आस्था है, उतनी किसी ग्रन्थ के प्रति नहीं।

(शेष पृष्ठ-23 पर)

आओ, हम लौटें!

–भारतेन्द्रनाथ

न तं विदाथ या इमा जजान, अन्यद् युष्माकं अन्तरं बभूव।
निहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति।

–ऋ 10.82.7।। यजु. 17.31।।

शब्दार्थ–हे मनुष्यों! (**तं न विदाथ**) तुम उसे नहीं जानते (**या इमा जजान**) जिसने कि इन सब (भुवनों) को बनाया है। (**अन्यत्**) तुम अन्य प्रकार के हो गए हो और (**युष्माकं अन्तरं बभूव**) तुम्हारा उससे बहुत फर्क हो गया है। (**निहारेण**) अज्ञान के कोहरे से (**प्रावृताः**) ढ़के हुए और (**जल्प्या च**) अनृत और निरर्थक शब्दजाल से ढके हुए हम मनुष्य (**असुतृपः**) प्राणतृप्ति में लगे हुए होकर या (उक्थशासः) आडम्बर वाले बहुभाषी होकर (**चरन्ति**) भटकते हैं।

विनय–हे मनुष्यों! **उसे नहीं जानते जिसने कि ये सब भवन बनाए हैं। यह कितने आश्चर्य की बात है!** तुम्हारा वह पिता है, पर तुम अपने पिता से जुदा (अन्यत्) हो गए हो, तुम्हारा उससे बहुत फर्क पड़ गया है। ओह! कितना भारी अन्तर हो गया है। मनुष्य का तो उसके प्रभु के साथ अन्तर नहीं होना चाहिए।

वह प्रभु तो हम मनुष्यों की आत्मा भी आत्मा है। **उससे अधिक निकटतम वस्तु तो हमसे और कोई है ही नहीं, हो ही नहीं सकती। सचमुच वे परम-आत्मा हमारी आत्मा में व्यापक हैं।** उनसे निकट हमारे और कोई नहीं है। फिर वे हमसे दूर क्यों हैं? इसका **कारण यह है कि हमारे और उनके बीच में प्रकृति का परदा आ गया है।** हम दो प्रकार के परदों से ढके हुए हैं, जिससे कि वह इतना निकटस्थ भी हमसे इतना दूर हो गया है।

एक प्रकार के (**तमोगुण-बहुल**) लोग तो "निहार" अज्ञान से ढ़के हुए हैं जिसकी धुंध में इतने पास में भी उन्हें नहीं देख पाते; दूसरे (**रजोगुण-बहुल**) लोगों ने "जिल्प" से, विद्या के शब्दाडम्बर से, पढ़ी लिखी मूर्खता से, निरर्थक जल्पना के परदे से अपने आप को ढक लिया है। **ये दोनों प्रकार के मनुष्य अपनी-अपनी दिशा में इतनी दूर बढ़ते गए हैं कि प्रभु से दिनों दिन दूर होते गए हैं।**

नीहारावृत लोग तो संसार में "असुतृप्" होकर विचर रहे हैं। वे खाते पीते मौज करते हुए निरन्तर अपने प्राणों के तर्पण करने में ही लगे हुए हैं। कामनाओं इच्छाओं का निवास मनुष्य के सूक्ष्म प्राण में ही है। **ये ज्यों-ज्यों अपनी बढ़ती जाती हुई अनगिनत कामनाओं को तृप्त कर अपनी इन कामनाओं को पुष्ट करते जाते हैं, त्यों-त्यों ये प्रभु से दूर होते जाते हैं।**

इसी प्रकार दूसरे जल्पावृत को पुष्ट करते जाते हैं, त्यों-त्यों ये प्रभु से दूर होते जाते हैं। इसी तरह दूसरे जल्पावृत लोग "**उक्थशास्**" होते हैं अर्थात् **संसार में बड़े-बड़े शास्त्र पढ़कर, वादविवाद वितण्डा में चतुर होकर, दूसरों को जोरदार व्याख्यान देते फिरते हैं,** पर अपने आपको नहीं पहचानते। **ये जितने भारी वक्ता, लेखक, और शास्त्रार्थकर्त्ता होते जाते हैं उतने ही ये बाह्य शब्द जाल से ऐसे उलझते जाते हैं कि अन्दर के देखने के आयोग्य होते जाते हैं,** अतः अन्दर के आत्मस्थ प्रभु से दूर होते जाते हैं।

इसलिए आओ, हम लौटें। अपने अन्दर की तरफ लौटें और अपने उस आत्मा के आत्मा को पा लेवें जिसके साथ हमें निरन्तर जुड़ा रहना चाहिए।

(पृष्ठ-22 का शेष)

गीता या भागवतादि पुराण भी इसीलिए प्रतिष्ठित हैं कि ये खुद को वेद का सहचरी या प्रतिनिधि या उत्तराधिकारी बताते हैं। जिस दिन दुनिया जान जाएगी कि गीता बुद्ध काल में कृष्ण को ईश्वरत्व का प्रलोभन देकर वेद के पद पर खुद बैठ जाने वाली बहुरुपिया-ठगिनी है; उसी दिन गीता को हटा कर लोग पुनः प्रत्यक्ष वेद को ही अपना लेंगे।

वेद आज भी बाइबल-कुरान से भी आगे निकल कर अन्तरिक्ष के अन्य लोकों तक भी जा सकता है। बशर्ते गीता-भागवतादि के चमचों की पोल खोल देने को हम आर्य लोग पुनः तत्पर हो जाएं, कि वेद का नाम लेकर पाखण्डी पुराणों की दुकानदारी करने वाले ये वेद के मीठे शत्रु हैं। वेदमंचों पर आस्तीन के सर्प की तरह छुपे इन ग्रन्थों को बे-नकाब किए बिना जनता यूं ही ठगी जाती रहेगी और वेद घुटता रहेगा। अतः अब सुप्त आर्य-वक्ताओं को पुनः गरज उठने की जरूरत है।

आर्य गिरि, निंगा, आसनसोल

वैदिक-चिन्तन

"मानव! जियो छन्दमय जीवन"

–देवनारायण भारद्वाज

संस्कृति अर्थात संसार जो सदैव सरकता रहता है, रूकता नहीं, वह एक काव्य या लय के साथ आगे बढ़ता रहता है। **सागर-सरिता के किनारे निकल जाइए तो उनकी लहरें एक ध्वनि-संगीत छेंड़ती चलती हैं, उद्यान में निकल जाइए तो वृक्षों के पत्ते हवा की तरंगों से मिलकर एक गीत गुंजित करते मिलते हैं,** पौधों के पुष्पों पर रंग-बिरंगी तितलियां एवं भ्रमर अपने गुंजन के साथ नृत्य करते दिखाई देते हैं। **आज के अतीव कष्टकर पर्यावरण के प्रदूषण के बाद भी अनेक स्थलों पर प्रातः सायं पक्षियों के समूह कलरव-कीर्तन करते मिलते हैं।** वेद भगवान बोल पड़ते हैं–

अन्ति सन्तं न जहाति अन्ति सन्तं न पश्यति। देवस्य पश्य काव्यं न भमार न जीर्यति।।–(अथर्व.10.8.32)

मनुष्य परमेश प्रभु को कभी त्याग नहीं सकता, क्योंकि वह उसके घनिष्ठ सम्बन्ध से जुड़ा-सन्निकट है–यहां तक कि वह उसके आत्मा में ही व्याप्त है, पर आश्चर्य यह है कि मनुष्य उसकी ओर देखता नहीं। **जो आत्मानुभूति कर लेते हैं वे तो बधाई के पात्र हैं; किन्तु जो अपनी प्रत्यक्ष आँखों से ही देखना चाहते हैं, वे उसकी सृष्टि रूपी काव्य को देख लें।**

गुणों का आभास करके गुणी के साथ प्रवास किया जा सकता है। मनुष्यकृत नाटक एक दो बार देखने पर ही पुराना पड़ जाता है, किन्तु यह ईश्वरीय काव्य कभी पुराना नहीं पड़ता और कभी मरता भी नहीं, और न जीर्ण-शीर्ण होता है। **हे मनुष्य! तू ईश्वर के वेद काव्य और इसी के आधार पर निर्मित सृष्टि काव्य को देखता हुआ–इसी में सृष्टिकर्ता परमेश्वर के दर्शन किया कर।** 'वैदिक विनय' में आचार्य अभयदेव विद्यालंकार ने कुछ ऐसा ही दिग्दर्शन कराया है। जब यह संसार व जीवन प्रभु का एक काव्य है तो इसमें कोई लय व छन्द होना चाहिए। इसका संकेत हमें वेद मन्त्र से मिलता है–

छन्दांसि यज्ञे मरुतः स्वाहा मातेव पुत्रं पिपृतेह युक्ताः।।
–(अर्थववेद 5.26.5)

सृष्टि काव्य का अनुगमन करते हुए हम जीवन को यज्ञ बनाएं अर्थात् प्रभु, प्रज्ञा व प्रकृति का पूजन अर्थात् समन्वय व उपयोग कराना सीखें, साथ ही बड़ों से सम्मान व छोटों से स्नेह का संगतीकरण करते हुए अपने द्वारा कमाई सम्पदा का कुछ अंश परहित अर्थात् दान में लगाने वाले बनें! अपनी प्राण ऊर्जा को राष्ट्रहित में आहुत करते हुए अपनी पूर्णता या सफलता इस बात में समझें जिस प्रकार कोई माता पुत्र का पालन व पूर्ण करती है। यह प्रक्रिया दोनों ओर से चलती हैं अर्थात् माता से पुत्र की ओर और पुत्र से माता की ओर। जिन दिनों ये पंक्तियां अंकित की जा रही हैं, उन दिनों अमर शहीद **पं. रामप्रसाद बिस्मिल** के बलिदान के समारोह मनाए जा रहे हैं। उन्होंने अपनी ओजस्वी कविता में यही भाव भर दिए थे। यथा–

खेवने दो आज नाव कल 'कर' पतवार गहे न गहे।
जीवन सरिता में शायद फिर ऐसी रसधार बहे न बहे।
अंतिम सांस निकलने तक, बिस्मिल की अभिलाष यही,
तेरा वैभव अमर रहे मां, हम दिन चार रहें न रहें।।

प्रजा–पुत्र अपनी मातृभूमि से जीवन प्राप्त करते हैं तो उस मातृभूमि के स्वाभिमान की रक्षा के लिए काव्य व गीत गाते हुए बलिदान होने को उद्यत हो उठते हैं। उत्सर्ग की कठोर भावना की ओर अधिक न बहते हुए सृष्टि सृजन के मनोहारी काव्य की ओर वापिस लौटते हैं। **राजा भोज सृष्टि व काव्य दोनों के प्रेमी थे। वे सृष्टि में काव्य और काव्य में सृष्टि का अवलोकन कर हर्षित हुआ करते थे।** इस सम्बन्ध में कोई कवि उनके दरबार में काव्य पाठ किया करता था तो उसे एक लाख स्वर्ण मुद्राओं का पुरस्कार दिया करते थे। सृष्टि के दृश्यों को देखते हुए चार मित्र अपनी एक-एक पंक्ति बनाकर दरबार में पहुंच गए। उन्होंने जैसा देखा वैसा ही राजा के सामने बोल दिया।

एक ने अपनी पंक्ति सुनाई–"**रहैटा धनर-न्नाय**" दूसरे ने बोला– "**कोल्हू का बैल खड़ा खाय**" तीसरे ने सुनाया–"**तरकस बांधे तरकस ब**..." तभी चौथे ने अपनी काव्य पंक्ति "**राजा भोज हैं पूनो क चन्द**" सुनाई।

चौथे व्यक्ति की पंक्ति को सुनकर राजा आक्रोशित हो उठे। उन्होंने कहा उपरोक्त तीनों की पंक्तियां तो ठीक है, उनमें तालमेल है किन्तु चौथे की पंक्ति चाटुकारता की द्योतक है। इसलिए कविता अपूर्ण रहने के कारण पुरस्कार तो नहीं दिया जाएगा, प्रत्युत दण्ड दिया जाएगा। तभी चौथा काव्यकार बोल उठा, महाराज यह पंक्ति मेरी नहीं है अपितु आपके

कवि मन्त्री ने बदल दी है, क्योंकि मेरी पंक्ति को वे शोभाजनक नहीं मानते थे और कहते थे इसे सुनाओगे तो राजा रूष्ट होंगे और तुम्हें जेल में पहुंचा देंगे। राजा ने आदेश दिया कि अपनी मौलिक पंक्ति सुनाओ। उसने अपनी पंक्ति जोड़कर चारों पंक्तियां इस प्रकार दोहरा दीं—

रहैटा धनर-धनर धन्नाय।
कौल्हू का बैल खड़ा भूसा खाय।
तरकस बांधे तरकस बन्द।
राजा भोज हैं मूसल चन्द।

यह सुनकर राजा भोज मुस्करा दिए और प्रसन्न होकर वाह-वाह करने लगे और इन मूर्खों को एक लाख के दान की आज्ञा कर दी। राजा के कवि मन्त्री ने इन कुपात्रों को दान देने का कारण पूछा तो उन्होंने गम्भीर होकर उत्तर दिया—"**आज तक जो कवि आए, उन्होंने मेरे अभिमान और अज्ञान को ही बढ़ाया किसी ने मुझे बलि व विक्रम के समान और किसी ने मेरे प्रताप को सूर्य एवं चन्द्र से भी अधिक बढ़ा दिया। किन्तु जिन्हें तुम मूर्ख कहते हो, उन्होंने ठोकर लगाकर मुझे जगा दिया। मैं स्वयं को मूसलचन्द ही समझता हूं।** मूसल धान को कूटता ही रहता है परन्तु उसे चावल का रस नहीं मिलता। मैं संसार रूपी ओखली में कुटाई-पिटाई ही करता रहा, **परलोक के लिए मैं कुछ नहीं कर सका। अब मुझे सावधान होना है और आत्मज्ञान को प्राप्त करना है।** इन्होंने ठीक ही कहा है कि वीर लोग इस संसार में मृत्यु से मुकाबले के लिए ज्ञान से भरा तरकस बांधते हैं और अविवेकी विलासीजन कोल्हू के बैल की भांति खडे-खड़े भूसा का भोग करते रहते हैं। यह संसार का रहट चक्र चल रहा है। ऊपर की बाल्टियां खाली हो जाती हैं, नीचे की भर जाती हैं। फिर वे ऊपर आती हैं और खाली हो जाती हैं। उसी प्रकार **आज कोई ऊपर है, अगले क्षण नीचे, आज भरा है कल खाली। सम्पत्ति की ऐसी ही अस्थिर हरियाली है।** राजा भोज का यह निष्कर्ष सुनकर दरबार दंग रह गया। पं. बिहारीलाला शास्त्री काव्यतीर्थ का सन्दर्भ उनके 'दृष्टान्त सागर' से बूदें लेकर आप तक पहुंचा दिया है। प्रकृति व परमेश्वर की काव्य-कृतियां सर्वत्र बिखरी रहती हैं। मन्त्र-अथर्ववेद (18.1.17) यही संकेत कर रहा है।

त्रीणिच्छान्दांसि कवयों वियेतिरे पुरूरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम्।
आपो वाता ओषधयस्तान्येकस्मिन भुवन आर्पितानि॥

तत्वदर्शी पुरुष विभिन्न प्रकार यत्न करते और देखते हैं कि अनन्त रूपों में दर्शनीय पदार्थ आनन्द की मर्यादा में रहते हुए जन साधारण के लिए अभिलषित होते हैं। वे तीन पदार्थ जल, वायु तथा औषध हमारे लिए वांछनीय हैं और तीनों एक ही भवन में ठहरे रहते हैं और हमें मिलते रहते हैं। **इनको छन्द क्यों कहा?** इसीलिए कि इनका मर्यादा व अनुशासन में रहकर प्रयोग किया जाए। **पीने के लिए जल, श्वास लेने के लिए वायु और आहार के लिए अन्न, प्राणिमात्र के लिए जीवनाधार हैं।** जैसे—किसी कविता अथवा गीत के छन्द में एक मात्रा भी न्यूनाधिक हो जाती है तो उसका छन्द असन्तुलित होकर कर्ण-कटु हो जाता है वैसे ही **इन तीनों पदार्थों का न्यूनाधिक प्रयोग भी शरीर के लिए हानिकारक हो जाता है।** इतना ही नहीं व्यक्ति आह्लाद के स्थान पर अवसाद में डूब जाता है। वर्तमान विस्तृत प्रीति भोजों में ऐसे ही कुछ दृश्य उपस्थित होते हैं 'जिनमें' व्यंजनों की भरमार होती है जो पेट में भर लिए जाते हैं वायु और जल के लिए पेट में स्थान ही नहीं बचता है। इन पदार्थों के अप मिश्रण की बात तो पृथक है।

जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन, जैसा पिए पानी, वैसी बने वाणी और जैसी हो वायु वैसी ही आयु। छन्द अर्थात मर्यादित आनन्द या सुख के लिए इनके उपभोग का ध्यान रखना आवश्यक है। अपमिश्रण ही नहीं, इनके संग्रहण का स्रोत कितना सात्विक है—यह भी व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करता है। एक राजा ने एक सन्त को अपने राजमहल में ठहराया। उनका खूब स्वागत सत्कार किया। सन्त उसी स्नानसागर में स्नान करते थे जिसमें राजा व रानी भी स्नान करते थे। सन्त राजमहल से विदा हो गए। पता चला कि रानी का बहुमूल्य हीरों का हार गायब है। खूब खोजने के बाद भी नहीं मिला। यकायक एक दिन वह सन्त वापस लौटे और राजा का गुम हुआ हार उन्हें पकड़ा दिया। राजा प्रसन्न हुए और बोल पड़े—आश्चर्य! यह हार आपके पास कैसे? मैंने ही चुराया था यह हार। आप के ऊपर मैं सन्देह नहीं कर सकता था, फिर लौटाने क्यों आ गए। **राजन् आपने जो राजकोषीय अन्न से मेरा आतिथ्य किया था, सात्विकता की उपेक्षा कर मैं उसे खा गया। मेरा मन दूषित हुआ और मैं चोर हो गया** निरन्तर हुए भयंकर दस्तों से जब उसका दुष्प्रभाव जाता रहा; और मैं इस हार को वापस करने आ गया।

सारांश यह है कि **संसार एवं सृजन का काव्य सहज रूप में प्रवाहित होते रहने पर ही सबका कल्याण है।** इसका छन्द भंग होने पर पर्यावरण का ही नहीं प्राणिमात्र का विनाश अवश्यम्भावी है।

—'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़

भाग-10 : दसवाँ नियम

आर्य समाज के दस नियमों की अपूर्व-व्याख्या

–स्व. श्री मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या

आर्यसमाज चाहता है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक संसार का प्रत्येक व्यक्ति हंसता रहे, रोए नहीं। वह एक ऐसा रास्ता बताता है जिस पर चलकर आनन्द-ही-आनन्द मिलता है। –सम्पादक

गतांक से आगे–

दसवां नियम–सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

अर्थ–यह **अन्त का दसवां नियम है और उसमें अन्त को जो आदेश करना चाहिए वह किया गया** है कि जिससे समाज अर्थात् समाजस्थ पुरुष अपने इन सब नियमों को निर्विघ्नतापूर्वक पालन कर सकें और उसका स्पष्ट अर्थ यह है कि (सब मनुष्यों को) इस नियमों को मानने वाले पुरुषों को अथवा आर्यसमाजस्थ को सर्वहितकारी नियम पालने में तो परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम के पालने में स्वतन्त्र रहें। **इन दसों नियमों में सर्वहितकारी और प्रत्येक के लिए हितकारी नामक दो प्रकार के कर्तव्य कर्मों का आदेश किया हुआ है अर्थात् यही दो कर्म हमको करने हैं।**

निदान–हमारे यथावत् कर्तव्य कर्म इन दो संज्ञाओं के ही अन्तर्गत होंगे। उसमें से सर्वहितकारी नामक में तो हमको परतन्त्र रहने और प्रत्येक हितकारी में स्वतन्त्र रहने की आज्ञा की गई है। अतएव यह नियम कर्तव्य कर्मों के सम्बन्ध में परतन्त्रता और स्वतन्त्रता का विधायक है। **वर्तमान समय के बड़े-बड़े अनुभवी विद्वान् इन दशों नियमों में जो कुछ आदेश किया गया है उसको भले प्रकार अनुभव करके सिद्धान्त कर सकते हैं** कि कोई मनुष्य अथवा समाज इन पर पूरा-पूरा अमल कर ले तो क्या उस वा उनमें वह अद्भुत अपूर्व प्रभाव उत्पन्न हो जावेगा कि जिसका वश में रहना या रखना एक बड़ा ही भारी काम होगा!

धन्य है वह महर्षि! जिसके आदेश से ऐसा प्रभाव होता है। इसीलिए उस महात्मा ने अपने योगबल से अनुभव करके अपने आदेशों की अमूल्यता का अन्त इस अन्त के नियम में करके हमारी स्वतन्त्रता और परतन्त्रता की सीमा बड़ी ही बुद्धिमानी के साथ ऐसी बांध दी है कि जो कभी भी विचल नहीं हो। **यदि यह नियम आदेश नहीं किया होता तो सब नियमों के प्रयोग में लाने के समय ऐसी-ऐसी अड़चनें उपस्थित होतीं कि जिनका निवारण करना बहुत ही कठिन था।**

उधर तो इससे उन अड़चनों को दूर कर दिया है और इधर जो हमारी सनातन वैदिक स्वतन्त्रता और परतन्त्रता है वह हमको कैसी सुन्दरता से प्रदान की है। यह स्पष्ट है कि सांसारिक और पारमार्थिक सब व्यवहार इन दोनों के ही चलते हैं और जो उनमें से एक हो, और दूसरा न हो, तो उनका यथायोग्य चलना बिल्कुल असम्भव है। **इस नियम की धर्म नीति, राजनीति और ग्रहनीति आदि सब में एक-सी व्याप्ति है** और जो हम इसको शुद्ध अन्त:करण से प्रयोग में लावें तो वह दुस्तर नहीं है।

यह दशों नियम साम्राज्य–सार्वजनिक–धर्म के हैं। अतएव सर्वहितकारी और प्रत्येक-हितकारी शब्दों के अर्थ विषयपरत्व बदलते जाएंगे और वे भी संख्या में अनेक होंगे। **प्रत्येक के अर्थ में कहीं तो वह प्रत्येक आर्य, कहीं प्रत्येक समाज, कहीं प्रत्येक प्रान्त भर की समाजों, और कहीं प्रत्येक वर्ण, जाति, धर्म और देशादिका वाचक ही जाएगा, और वैसे ही सर्व को भी समझ सकते हैं। जब कोई विषय हमारे सम्मुख निर्णय को उपस्थित हो तो उस पर से हम सर्वहितकारी और प्रत्येक हितकारी का प्रथम विचार करके फिर स्वतन्त्रता और परतन्त्रता को निश्चित कर सकते हैं।....** हमारी इतनी विवेचना प[illegible] से अनेक उदाहरणों की कल्पना करके जो चाहे वह [illegible] नियम के मर्म को भले प्रकार समझ सकता है। **यहां य[illegible] ज्ञातव्य है कि जितने धर्म संसार भर में प्रचलित ह[illegible] हैं उनके धर्म गुरुओं ने अपने मानने वालों को अ[illegible] किसी-किसी प्रकार की परतन्त्रता के अड़ंगे में फंस[illegible] ही हैं परन्तु इन नियमों के आदेश करने वाले वास्तवि[illegible] महर्षि ने हम लोगों पर अपना कुछ भी अड़ंगा नहीं जमाया है किन्तु वह हमको हितोपदेश करके ज्यों-का-त्यों परम त्यागी बना रहा है।**

अतएव हम भी इन व्याख्या के अन्त में कहते हैं कि श्रीमत्स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज की जय!!! इत्यो३म्।

जून माह के उल्लेखनीय दिवस

–इन्द्रदेव

भामा शाह की 468वीं जयन्ती (28 जून)

आप जैन धर्म के अनुयायी थे। आप व्यापार करते थे। आप परम देशभक्त और अद्‌भुत दानी थे। आपके पास स्वयं का तथा पुरखों का कमाया हुआ अपार धन था। आपने महाराणा प्रताप को 25 लाख रुपए (इस समय यह रकम कई अरब बैठेगी) तथा 20,000 अशर्फियां दान में दीं ताकि वे अपनी सेना का पुर्नगठन करके खोए हुए क्षेत्रों को मुक्त करा सकें। महाराणा प्रताप ने आंखों में आंसू भरकर भामाशाह जैन को गले से लगा लिया।

महाराणा प्रताप ने अकबर के दरबार में कभी सिर नहीं झुकाया। उनकी कर्त्तव्यपरायणता पर पूरे देश को गर्व है। भामाशाह ने अपने पुत्र को आदेश दिया कि वह भी महाराणा प्रताप के पुत्र के साथ उन जैसा ही व्यवहार करे। कोई भी संगठन-दल-संस्था-अखबार आदि तभी सही प्रकार चलते हैं जब उनके पास भामाशाह जैसे दानवीर हों।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून)

योग के व्यापक प्रचार-प्रसार और इससे होने वाले लाभों को देखते हुए, 21 जून को, 2014 में, योग दिवस मनाने की घोषणा की गई है। इसका श्रेय बाबा रामदेव को भी है जो कई वर्षों से योग प्रशिक्षण केन्द्र लगाकर लोगों को रोगों से मुक्त होने के लिए विभिन्न आसन करके सिखाते हैं। बाबा रामदेव का यह कहना उचित नहीं लगा कि जो ओ३म् नहीं बोलना चाहते हैं वे अल्ला या गॉड बोल सकते हैं।

1947 का काला दिवस (तीन जून)

देश विभाजन की घोषणा का काला दिवस है 1947 ई. का तीन जून। कांग्रेस ने स्पष्ट रूप से कहा था कि देश का विभाजन गांधी जी की लाश पर तो हो सकता है अन्यथा नहीं। नेहरु ने कहा था कि देश का विभाजन की मांग करने वाले स्वप्न देख रहे हैं। मुस्लिम लीग की सीधी कार्रवाई की धमकी देने पर गांधी-नेहरु-पटेल विभाजन के लिए सहमत हो गए। कांग्रेस ने आर्यसमाज-राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ-हिन्दू महासभा- फारवर्ल्ड ब्लाक-और शिरोमणि अकाली दल को विश्वास में नहीं लिया और न ही उनसे सम्पर्क रखा। धर्म के आधार पर विभाजन करना तय हुआ।

नशा निषेध दिवस (26 जून)

गांधी जी ने स्पष्ट रूप से आश्वासन दिया था कि स्वतन्त्र भारत में शराब बन्दी लागू की जाएगी क्योंकि शराब के सेवन करने से प्रतिवर्ष हजारों परिवार बर्बाद हो जाते हैं। 67 वर्ष हो चुके हैं लेकिन आश्वासन पूरा नहीं हुआ है फिर भी गांधी के नाम पर वोट मांगी जाती है और दी जाती है।

यह खेद का विषय है कि शराब बन्दी को राज्यों का विषय बना दिया गया है। किसी राज्य में शराब बन्दी लागू हो भी जाती है तो निकटवर्ती राज्यों से अवैध रूप से सप्लाई शुरू हो जाती है। कच्ची शराब- जहरीली शराब-नकली शराब का अवैध रूप से उत्पादन वितरण और उपभोग से हजारों मौते प्रति वर्ष हो रही हैं।

संस्थापक एवं अध्यक्षवीर सावरकर पुस्तकालय एवं वाचनालय,18/186, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अतः आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपि में ही लिखने का निर्णय करें। –सम्पादक

देश की स्वतन्त्रता के लिए आर्यवीर अमर बलिदानी ब्र. पं. राम प्रसाद बिस्मिल

–स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।।

आर्यसमाज की भट्ठी की तपस्या में तप करने वाले योगी **ब्रह्मचारी रामप्रसाद बिस्मिल का नाम सुनते ही नस-नाड़ियों में उत्साह पैदा हो जाता है और देशभक्ति स्वतः ही जागृत होकर हमें प्रेरित करती है।** उसकी कहानियां युवकों में उत्साह पैदा करती हैं। **देश की आजादी के लिए अंग्रेजों के राज्य में कितना उत्साह था कितने बुलबुले थे यह उनके तत्कालीन विचारों एवं कार्यक्रमों से विदित होता है–**

हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है?
वक्त आने पर बता देंगे तुझे आसमां।।

इस प्रकार की बातें रहस्यों से परिपूर्ण रहती थी। **बिस्मिल जी ने अपनी आत्मकथा लिखी है** जिसमें युवकों के लिए सन्देश है, निर्देश है तथा आदेश और कुछ उपदेश भी हैं।.... **'कोई भी युवा राष्ट्र की सेवा करना चाहता है तो राष्ट्र को ही वह सर्वोपरि मानेगा तभी वह उच्च पदासीन होकर सभी से सम्मान प्राप्त कर सकेगा।...** आर्यसमाज मन्दिर शाहजहांपुर! उसमें स्वामी सोमदेव जी रहते हैं। प्रतिदिन युवकों को आसन-प्राणायाम-व्यायाम एवं संध्या कराते हैं। बच्चों की बालसभा कराते हैं। बच्चों को अच्छे संस्कार देकर प्रेरणा प्रदान करते हैं। देशभक्ति-ईशभक्ति-माता-पिता की सेवा जैसे सद्गुणों से युक्त करते हैं। **ब्र. रामप्रसाद बिस्मिल अपने बचपन में कुसंगति से बिगड़ चुके हैं। कई दुर्व्यसनों ने अपना अधिकार जमा लिया है। अतः एक दिन वे चोरी करते हुए पकड़ में आ जाते हैं माता जी ने डांटते हुए कहा कि तुम यदि नहीं सुधार कर पाए तो भविष्य में कड़ी सजा के अधिकारी बनोगे।** मां की शिक्षा संकल्प में बदल गयी और संकल्प को शिव संकल्प युक्त बना दिया स्वामी सोमदेव जी ने। स्वामी के चरणों में बैठकर अपनी पूरी कहानी सुना देते हैं। स्वामी जी स्नेहिल भावों से आपको सोने से कुन्दन बनाने का प्रयास करते हैं। बच्चों की सभा आर्य कुमार सभा के रूप में बनाकर कविता-भजन-भाषण देना भी सिखाते हैं। इसमें रुचि बढ़ती चली जाती है जिसका शुभ परिणाम प्रत्यक्ष दिखाई देने लगता है। **युवकों का संगठन कुछ लोगों के लिए रुचिकर नहीं है, अतः वे पिताश्री मुरलीधर जी से शिकायत करते हैं कि आपका सुपुत्र कुपुत्र बनने जा रहा है। अंग्रेजी सरकार है परिणाम अच्छा नहीं रहेगा।** अतः समय रहते यदि नहीं सम्भाला तो मात्र पश्चाताप के कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। जैसे बात मुख से, तीर तरकश से, गोली बन्दूक से छूट जाने पर फिर वापिस नहीं आती वैसे ही फिर कुछ नहीं कर पाएंगे।

पिताश्री सायं काल घर पर थे तभी बिस्मिल जी आर्यसमाज मन्दिर से सायं संध्या के पश्चात भोजन करने आए थे। आज पिता जी के क्रोध को देखकर बिस्मिल कुछ शान्त भाव से आकर चरण स्पर्श कर नमस्ते करते हैं। पिता जी नमस्ते का उत्तर न देकर पूछते हैं कि कहां गए थे, उत्तर में **बताया कि पिताश्री मैं प्रतिदिन की तरह निकट ही आर्यसमाज मन्दिर गया था।** पिता जी फिर कड़कती आवाज में बोलते हैं कि **आज बिस्मिल अन्तिम निर्णय है कि या तो घर पर रहो अथवा आर्यसमाज में रहो, यदि घर पर रहना है तो आर्यसमाज जाना छोड़ दो और [illegible] आर्यसमाज में रहना है तो घर पर आना [illegible]** निर्णय अभी होना है दोनों में से एक चुनना होगा।

बिस्मिल चुप खड़े हैं लेकिन **पिता जी का हठी स्वभाव देखकर बिस्मिल जी ने कहा कि मैं घर छोड़ सकता हूं पर आर्यसमाज नहीं छोड़ सकता। उसने मेरे जीवन का निर्माण किया है, मुझे बुराईयों से बचाया है। आज मैं जो कुछ हूं आर्यसमाज के संस्कारों का ही सुपरिणाम है।**

इतना सुनते ही पिता जी का क्रोध ज्वालामुखी बन गया और कहा–अभी घर से निकल जाओ। जैसे ही बिस्मिल पीछे मुड़े तभी पिता जी ने जोर से कहा कि ये कपड़े जो पहने हो ये तो मेरे हैं इन्हें भी उतार दो।

इतना सुनते ही क्षण में वस्त्र उतार कर पिताश्री को अभिवादन कर घर से बाहर निकल गए।.......

जैसे महाराज दशरथ ने राम को वनवास का आदेश दिया था। उसी तरह श्री मुरलीधर जी ने रामप्रसाद बिस्मिल जी को जाने का आदेश दे दिया। यह सोचकर जनवरी का महीना है ठंड लगेगी तो अभी आकर क्षमा याचना करेगा और फिर कभी भी आर्यसमाज नहीं जाएगा।

लेकिन घण्टा बीत जाने पर पिताजी का क्रोध प्रायश्चित में परिवर्तित होने लगा और पुत्र मोह जागृत हो उठा बोले बेटा ठंड से सिकुड़ रहा होगा बीमार हो जाएगा, जब मैं जाऊंगा क्षमा याचना करेगा। **आर्यसमाज मन्दिर जाकर पिताजी ने देखा तो आश्चर्यचकित रह गए क्योंकि बिस्मिल दण्ड बैठक का व्यायाम कर पसीना निकाल रहा है।** यह दृश्य देखकर स्वयं **पिताजी ही नम्र होकर बोले–बेटा घर चलो, अब आपकी इच्छा है घर आओ और समाज भी आओ।** कैसे कठोर व्रतधारी ब्रह्मचारी थे बिस्मिल जी, आज के सन्दर्भ में युवकों के लिए प्रेरणास्रोत थे।...

मैं जब आर्यसमाज शाहजहांपुर गया तो ये सारे दृश्य मेरी आंखों से सामने दृष्टिगोचर स्वप्नवत् होने लगे। जहां संध्या यज्ञ करते थे आज वह स्थान सुन्दर बना हुआ है; मन पवित्र हो जाता है।

धन्य है उनके माता-पिता जिन्होंने देश की रक्षा हेतु ऐसा पुत्र पैदा किया, हिन्दू-मुस्लिम एकता का उदाहरण बनकर आजकल के नेताओं के लिए इससे सुन्दर प्रमाण और कोई नहीं हो सकता।..... अशफ़ाक उल्ला खां बीमार पड़ता है तो राम-राम पुकारता है। कुछ लोग समझते हैं कि यह काफिर हो गया है लेकिन परिवारजन जानते थे कि राम वह ... नहीं यह बिस्मिल रामप्रसाद को ही पुकारता है।

...**ोरी काण्ड** इनका प्रसिद्ध काण्ड है जो ...खजाना लूट कर भी घर नहीं अपितु देश की ... हथियार लेने की योजना बनाते हैं और उसी में ... संगठन बिखर जाता है, जो **अन्त में फांसी की ... के रूप में आकर आपकी परीक्षा लेता है। आप तो योगी की तरह अपनी गोरखपुर की जेल में रहते हुए साधना करते हैं और जेलर को भी अपनी आध्यात्मिकता से प्रभावित कर लेते हैं।**

उन्हें प्रतिदिन उपनिषदों का सन्देश सुनाते हैं, आत्म तत्व समझाते हैं **16 दिसम्बर 1927 को प्रातः 7 बजे फांसी का दिन निश्चित हो जाने पर भी आपकी दिनचर्या पूर्ववत् प्रातः 4 बजे प्रारम्भ होती है, व्यायाम-संध्या-यज्ञ प्रतिदिन करते हैं, आज भी प्रातः 5 बजे जेलर ने देखा तो व्यायाम कर रहे थे, पूछने पर बताया कि परमात्मा के यहां कमजोर होकर नहीं जाना है...... अपितु तन-मन से सुदृढ़ होकर जाना है।** सात बजे जिस समय सबेरे जब मैं फांसी पर जाऊंगा तो फांसी पर जाने से पहले संध्या हवन रचाऊंगा।

ये विचार आर्यसमाज मन्दिर में मिले जो देश की धरोहर बन गए। **आज के युवकों के लिए, आर्यवीरों एवं ब्रह्मचारियों के लिए ब्र. रामप्रसाद बिस्मिल सदैव प्रेरणा के पुंज बनकर हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।** आप उनकी आत्मकथा अवश्यमेव पढ़ें।

संक्षेप से विचार लिखे हैं भविष्य में फिर लिखेंगे। आप सभी **इनके जन्म दिवस ११ जून पर राष्ट्र रक्षा का संकल्प लेकर जीवन सार्थक बनाएंगे** ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।.......

(–मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुकुल पूठ-हापुड़)

❖❖❖

जनज्ञान के सदस्यों से

जनज्ञान का वार्षिक शुल्क समाप्ति का पत्र मिलते ही **शीघ्र शुल्क भेजने का यत्न करें तथा पत्र के साथ संलग्न कार्ड पर उत्तर भी दें।** डाक व्यय बढ़ जाने से वार्षिक शुल्क की वी. पी. भेजने में अब ३० रुपये लगते हैं।

अतः **मनीआर्डर** या **बैंक ड्राफ्ट** अथवा **चैक द्वारा** "**जनज्ञान**" के नाम शुल्क भेजें।

अथवा

आप राशी सीधे यूनियन बैंक में खाता नं. 307902010056883 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं।

वार्षिक शुल्क–२००/-रु०, त्रिवार्षिक-५५०/-रु०, पांच वर्ष-९००/-रु० और आजीवन ३१००/-रु० हैं।

पत्र व्यवहार में अपना सदस्य नं. ....., पिन कोड.....तथा मोबाइल नम्बर ....अवश्य लिखें तथा कार्ड पर उत्तर भी अवश्य ही दें!

धन्यवाद.......   **–सम्पादक**

13 जून बलिदान दिवस

शहीद ऊधम सिंह

–विजेन्द्र कोहली, गुरदासपुरी

भारत को **'देशभक्तों की जननी'** भी कहा जाता है। इसका कण-कण बलिदान की प्रेरणा का स्रोत है। **सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद एवं ऊधमसिंह सदृश शहीदों की बलिदेवी पर भारत की स्वतन्त्रता की नींव पड़ी थी।**

उन्होंने भारत के इतिहास का कायापलट किया। उन्होंने अपने महान कृतित्व से भारत का नाम उज्ज्वल किया है। उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता रहेगा। **26 दिसम्बर, 1899 को पटियाला के सुनाम शहर में जन्में क्रान्तिकारी सरदार ऊधमसिंह भी ऐसे ही महान विभूतियों में से एक हैं.....** जिनके पिता टहल सिंह एक रेलवे कर्मचारी थे। **ऊधमसिंह को बचपन में भी जिन्दगी का बहुत बड़ा संघर्ष करना पड़ा था।** उनके माता-पिता बचपन में ही ईश्वर को प्यारे हो गए थे और **ऊधमसिंह को अपना जीवन एक अनाथालय में बिताना पड़ा था।**

उस समय अंग्रेजी हुकूमत का बोलबाला था। माता-पिता के निधन के बाद उन्हें जिन्दगी जीने के लिए बचपन में बहुत ठोकरें खानी पड़ी थीं। **युवा होने पर ऊधमसिंह क्रान्ति के पथ पर चल पड़े थे और भगतसिंह की क्रान्तिकारी सभा में सम्मिलित हो गए थे।** वे पकड़े गए थे। और चार वर्ष उन्हें कारावास में बिताने पड़े।

1919 के जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड का प्रभाव तो उनके मन-मस्तिष्क पर इतना गहरा पड़ा कि उस आघात को वह सहन न कर सके, तब माइकल डायर पंजाब के गवर्नर थे।

आज भी वह मौत का कुआं, दीवारों पर गोलियों के निशान डायर की नृशंसता के जीवित प्रमाण हैं। निहत्थे लोग बाग में से निकल न सके थे और कुचलकर, दबकर, गोलियों से भुनकर मर गए थे। तब ऊधमसिंह कुछ न कर सके थे।...

वे इंग्लैण्ड चले गए लेकिन उनके अन्तर्मन में इस घटना की कसक बाकी थी। **आखिरकार 14 साल बाद उनको 1933 में इंग्लैण्ड में जनरल माइकल डायर को मारने का मौका मिल ही गया। डायर की मौत के बाद वे पकड़े गए और उन्हें इंग्लैण्ड की जेल में कैद कर दिया गया।**

*ब्रिटिश हुकूमत ने उन्हें **अंग्रेजी शासन की अधीनता स्वीकार करने का प्रलोभन भी दिया** पर वे अडिग रहे। **ऊधमसिंह जब अदालत में पेश किए गए तो वे गरज उठे कि मैंने जनरल डायर को मारकर जलियांवाला बाग में हुए नृशंस हत्याकाण्ड में मरने वाले निरपराध लोगों की मौत का बदला लिया है।........***

आखिरकार.... ब्रिटिश अदालत ने 11 जून 1940 को सरदार उधमसिंह को फांसी की सजा सुना दी **और 13 जून 1940 को भारत माता का यह महान सपूत शहीद हो गया।**

●●●

।। ओ३म् ।।

।। जिसके घर में वेद नहीं वह हिन्दू का घर नहीं।।

''परमात्मा'' की दिव्य-सनातन वाणी

ऋग्वेद

सामवेद

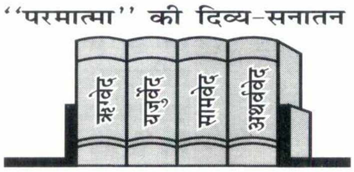

यजुर्वेद

अथर्ववेद

चार वेद
का सरल, रोचक हिन्दी भाष्य

प्रसारार्थ लागत मूल्य - रु० ४०००/-

(मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर आदि विवरण सहित २३X३६ सें. मी. साइज में पृष्ठ-२२००, बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन प्रायः ८ किलो। सुन्दर मुद्रण।)

18 जून पुण्यतिथि पर विशेष

खूब लड़ी मरदानी अरे झांसी वारी रानी

–आकांक्षा यादव

स्वतन्त्रता और स्वाधीनता प्राणिमात्र का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसी से आत्मसम्मान और आत्मउत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। ***भारतीय राष्ट्रीयता को दीर्घावधि विदेशी शासन और सत्ता की कुटिल-उपनिवेशवादी नीतियों के चलते परतन्त्रता का दंश झेलने को मजबूर होना पड़ा था और जब इस क्रूरतम कृत्यों से भरी अपमानजनक स्थिति की चरम सीमा हो गई तब जनमानस उद्वेलित हो उठा था। अपनी राजनैतिक-सामाजिक- सांस्कृतिक-आर्थिक पराधीनता से मुक्ति के लिए क्रान्ति यज्ञ की बलिदेवी पर अनेक राष्ट्रभक्तों ने तन-मन जीवन अर्पित कर दिया था।***

क्रान्ति की ज्वाला सिर्फ पुरुषों को ही नहीं आकृष्ट करती बल्कि वीरांगनाओं को भी उसी आवेग से आकृष्ट करती है। **भारत में सदैव से नारी को श्रद्धा की देवी माना गया है, पर यही नारी जरूरत पड़ने पर चंडी बनने से परहेज नहीं करती।**

'स्त्रियों की दुनिया घर के भीतर है, शासन-सूत्र का सहज स्वामी तो पुरुष ही है' अथवा 'शासन व समर से स्त्रियों का सरोकार नहीं' जैसी तमाम पुरुषवादी स्थापनाओं को ध्वस्त करती इन वीरांगनाओं के बिना स्वाधीनता की दास्तान अधूरी है, जिन्होंने अंग्रेजों को लोहे के चने चबवा दिये। 1857 की क्रान्ति में जहां रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, बेगम जीनत महल, रानी अवन्तीबाई, रानी राजेश्वरी देवी, झलकारीबाई, ऊदा देवी, अजीजनबाई जैसी वीरांगनाओं ने अंग्रेजों को लोहे के चने चबवा दिए, वहीं 1857 के बाद अनवरत चले स्वाधीनता आन्दोलन में भी नारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इन वीरांगनाओं में से अधिकतर की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे किसी रजवाड़े में पैदा नहीं हुईं बल्कि अपनी योग्यता की बदौलत उच्चतर मुकाम तक पहुंचीं।

1857 की क्रान्ति की अनुगूंज में जिस वीरांगना का नाम प्रमुखता से लिया जाता है, वह झांसी में क्रान्ति का नेतृत्व करने वाली रानी लक्ष्मीबाई हैं। **19 नवम्बर 1835 को बनारस में मोरोपंत तांबे व भागीरथी बाई की पुत्री के रूप में लक्ष्मीबाई का जन्म हुआ। उनका बचपन का नाम मणिकर्णिका था, पर प्यार से लोग उन्हें मनु कहकर पुकारते थे।**

काशी में रानी लक्ष्मीबाई के जन्म पर प्रथम वीरांगना रानी चेनम्मा को याद करना लाजिमी है। **1824 में कित्तूर (कर्नाटक) की रानी चेनम्मा ने अंग्रेजों को मार-भगाने के लिए 'फिरंगियों भारत छोड़ो' की ध्वनि गुंजित की थी** और रणचण्डी का रूप धर कर अपने अदम्य साहस व फौलादी संकल्प की बदौलत अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे। **कहते हैं कि मृत्यु से पूर्व रानी चेनम्मा काशीवास करना चाहती थीं पर उनकी यह चाह पूरी न हो सकी थी।** यह संयोग ही था कि रानी चेनम्मा की मौत के 6 साल बाद काशी में ही लक्ष्मीबाई का जन्म हुआ।

बचपन में ही लक्ष्मीबाई अपने पिता के साथ बिठूर आ गईं। **वस्तुतः 1818 में तृतीय मराठा युद्ध में अन्तिम पेशवा बाजीराव द्वितीय की पराजय के पश्चात उनको 8 लाख रुपए की वार्षिक पेंशन मुकर्रर कर बिठूर भेज दिया गया। पेशवा बाजीराव द्वितीय के साथ उनके सरदार मोरोपंत तांबे भी अपनी पुत्री लक्ष्मीबाई के साथ बिठूर आ गए।**

लक्ष्मीबाई का बचपन नाना साहब के साथ कानपुर के बिठूर में ही बीता। **लक्ष्मीबाई की शादी झांसी के राजा गंगाधर राव से हुई। 1853 में अपने पति राजा गंगाधर राव की मौत के पश्चात रानी लक्ष्मीबाई ने झांसी का शासन सम्भाला।** पर... अंग्रेजों ने उन्हें और उनके दत्तक पुत्र को शासक मानने से इन्कार कर दिया।

अंग्रेजी सरकार ने रानी लक्ष्मीबाई को पांच हजार रुपए मासिक पेन्शन लेने को कहा पर महारानी ने इसे लेने से मना कर दिया। बाद में उन्होंने इसे लेना स्वीकार किया तो **अंग्रेजी हुकूमत ने यह शर्त जोड़ दी कि उन्हें अपने स्वर्गीय पति के कर्ज को भी इसी पेन्शन से अदा करना पड़ेगा,** अन्यथा यह पेन्शन नहीं मिलेगी। इतना सुनते ही ***महारानी का स्वाभिमान ललकार उठा और अंग्रेजी हुकूमत को उन्होंने सन्देश भिजवाया कि जब मेरे पति की उत्तराधिकारी न मुझे माना गया और न ही मेरे पुत्र को, तो फिर इस कर्ज के उत्तराधिकारी हम कैसे हो सकते हैं??....***

उन्होंने स्पष्टतया बता दिया कि कर्ज अदा करने की बारी अब अंग्रेजों की है न कि भारतीयों की। **रानी लक्ष्मीबाई ने ब्रिटिश सेना को कड़ी टक्कर देने की तैयारी आरम्भ कर दी** और उद्घोषणा की कि–**"मैं**

अपनी झांसी नहीं दूंगी!" रानी लक्ष्मीबाई द्वारा महिलाओं की एक अलग ही टुकड़ी **'दुर्गा दल'** नाम से बनायी थी। **इसका नेतृत्व कुश्ती, घुड़सवारी और धनुर्विद्या में माहिर झलकारीबाई के हाथों में था।** झलकारीबाई ने कसम उठायी थी कि **जब तक झांसी स्वतन्त्र नहीं होगी, न ही मैं श्रृंगार करूंगी और न ही सिन्दूर लगाऊंगी।**

अंग्रेजों ने जब झांसी का किला घेरा तो झलकारीबाई जोश-खरोश के साथ लड़ी। **चूंकि उसका चेहरा और कद-काठी रानी लक्ष्मीबाई से काफी मिलता-जुलता था, सो जब उसने रानी लक्ष्मीबाई को घिरते देखा तो उन्हें महल से बाहर निकल जाने को कहा और स्वयं घायल सिंहनी की तरह अंग्रेजों पर टूट पड़ीं और शहीद हो गई।**

रानी लक्ष्मीबाई अपने बेटे को कमर में बांध घोड़े पर सवार किले से बाहर निकल गई और कालपी पहुंची, जहां तात्या टोपे के साथ ग्वालियर के किले पर कब्जा कर लिया। अन्ततः 18 जून 1858 को भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की इस अद्भुत वीरांगना ने अन्तिम सांस ली पर अंग्रेजों को अपने पराक्रम का लोहा मनवा दिया।

तभी तो उनकी मौत पर जनरल ह्यूरोज ने कहा—**"यहां यह औरत सोई हुई है, जो विद्रोहियों में एकमात्र मर्द थी।"**

इतिहास अपनी गाथा खुद कहता है। सिर्फ पन्नों पर ही नहीं बल्कि लोकमानस के कंठ में, गीतों और किवदंतियों इत्यादि के माध्यम से यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रवाहित होता रहता है। वैसे भी इतिहास की वही लिपिबद्धता सार्थक और शाश्वत होती है जो बीते हुए कल को उपलब्ध साक्ष्यों और प्रमाणों के आधार पर यथावत प्रस्तुत करती है। बुंदेलखण्ड की वादियों में आज भी दूर-दूर तक लोक लय सुनाई देती है—**खूब लड़ी मरदानी, अरे झांसी वारी रानी/ पुरजन पुरजन तोपें लगा दई, गोला चलाए असमानी/अरे झांसी वारी रानी, खूब लड़ी मरदानी/सबरे सिपाईन को पैरा जलेबी, अपन चलाई गुरधानी/...छोड़ मोरचा जसकर कों दौरी, ढूढ़ेहूं मिले नहीं पानी/अरे झांसी वारी रानी, खूब लड़ी मरदानी।**

माना जाता है कि इसी से प्रेरित होकर **'झांसी की रानी'** नामक अपनी कविता में सुभद्राकुमारी चौहान ने 1857 की उनकी वीरता का बखान किया है—**चमक उठी सन् सत्तावन में/वह तलवार पुरानी थी/बुन्देलों हरबोलों के मुंह/ हमने सुनी कहानी थी/खूब लड़ी मर्दानी वह तो/झांसी वाली रानी थी।** ●●●

जनज्ञान 'मासिक' विज्ञापन दरें

जनज्ञान में विज्ञापन दें सहयोग का हाथ बढ़ाएं।
देश-विदेश में अपने प्रतिष्ठान का नाम गुँजाएं।।

अन्तिम कवर पृष्ठ	25000/-रुपए
कवर पृष्ठ दो व तीन	23000/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ (रंगीन)	18500/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ	15000/-रुपए
आधा पृष्ठ	8000/-रुपए
चौथाई पृष्ठ	4500/-रुपए

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" के नाम भिजवाएं। अथवा आप राशी सीधे यूनियन बैंक में खाता नं. 307902010056883 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं।

बैंक में जमा की गई राशी की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

विज्ञापन व्यवस्थापक- *जनज्ञान-मासिक*

वेद मन्दिर, महात्मा वेदिभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर)

सन् 1857 के स्वातन्त्र्य समर की उद्‌भट सेनानी

झांसी की रानी के वे अन्तिम क्षण

—वीर वि.दा. सावरकर

ब्रिटिश राज्य सत्ता के विरुद्ध 1857 में भड़के प्रथम स्वातन्त्र्य समर के महान सेनानायकों में से एक थीं झांसी की मर्दानी रानी लक्ष्मीबाई। उस महान स्वाधीनता संग्राम में वह एक ऐसी विद्युत लता सी उभरी थीं कि जिनके ओज और तेज ने सहस्त्रों हृदयों में स्वातन्त्र्य की ज्वाला को तीक्षण और उद्दीप्त किया था। 19 नवम्बर, 1835 को इस शौर्यशालिनी कन्या ने आंखें खोली थीं। यह बालिका मनुबाई कहलाई थीं। सन् सत्तावन के ही एक अन्य महान नायक नाना साहब की मुंहबोली बहिन इस छबीली का विवाह 1842 में झांसी के महाराज गंगाधर बाबा साहब के साथ सम्पन्न हुआ तो यह महारानी लक्ष्मीबाई की संज्ञा पा गयीं। किन्तु 1853 में ही उसके जीवन में उस दिन घोर वज्रपात हुआ जब उसके पति परलोकगामी हो गए।.... ....तदुपरान्त अंग्रेज सत्ताधीशों ने झांसी में भी स्वराज्य को फांसी देने का सपना संजोकर उसे जब्त कर लिया। और तभी रणचंडी रूप धारण कर गरज उठी थी लक्ष्मीबाई "मैं अपनी झांसी किसी को भी नहीं सौपूंगी।" उस महान स्वातन्त्र्य साधिका ने रणभूमि में अंग्रेज अधिकारियों के अनेक बार छक्के छुड़ाए। किन्तु अन्ततोगत्वा उसने स्वतन्त्र रहते हुए जिस वीरता सहित मरण का वरण किया उसी का वृत्तान्त यहां प्रस्तुत है क्रान्तिकारियों के मुकुटमणि स्वातन्त्र्य वीर सावरकर की पैनी लेखनी से—

अठारह जून (1857) का सूरज निकला। आज अंग्रेजों ने बड़े जोड़-तोड़ से हमला करने का निश्चय किया। **सभी दिशाओं में उन्होंने किले (झांसी) पर धावा बोलने का निश्चय किया।** जिस स्मिथ को कल पीछे हटना पड़ा था, वही आज नई कुमक से झांसी की सेना पर टूट पड़ा। **ह्यूरोज ने समझ लिया कि उसका वहां होना बड़ा आवश्यक है,** इसी विचार के कारण आज के हमलावर सैनिकों के साथ वह स्वयं था।

रानी भी अपनी सेना के साथ तैनात थी। उसी दिन रानी ने कामदार चन्देरी की पगड़ी पहनी, चोगा और पायजामा पहना और गले में एक मोतियों का हार पहन कर घोड़े पर सवार हुई। उसका [illegible] उस समय कुछ थका-थका सा मालूम देता था। अतः एक दूसरा नया घोड़ा लाया गया। रानी की दोनों सखियां शरबत पी रही थीं, तभी समाचार मिला कि अंग्रेजी सेना बढ़ी चली आ रही है। **रानी तुरन्त अपने खेमे में दौड़ पड़ी—तीर भी इतनी तेजी से नहीं छूटता। रानी ने घोड़ा दौड़ाया और तलवार हाथ में लेकर शत्रु पर धावा बोल दिया।**

इसी विषय में एक अंग्रेज लिखता है—"**तत्काल वह सुन्दरी मैदान में उतरी और ह्यूरोज के व्यूह का डटकर सामना किया।** अपनी सेना के आगे रहकर पूरी मारकाट करवाती यद्यपि उसकी सफों को चीरकर अंग्रेज जाते, फिर भी रानी हैरावल में दिखाई पड़ती थी और अपनी टूटी पंक्तियों को फिर से संगठित कर अतुल धैर्य का परिचय देती थी। **इसके बावजूद ह्यूरोज ने स्वयं अपने ऊंट दल के जोर पर आखिरी पंक्ति तोड़ ही दी तो भी रानी अपने स्थान पर डटी रही।"**

इतने असाधारण शौर्य से लड़ते हुए उसने देखा कि अंग्रेज सेना पीछे से हमला कर रही है, क्योंकि पीछे की ओर से रक्षा करने वाले क्रान्तिकारियों की पांतियों को उसने तोड़ दिया था। तोपें ठंडी पड़ी थीं। **मुख्य सेना तितर-बितर हो गई थी, विजयी अंग्रेज सेना रानी के चारों तरफ से हमला बोल रही थी और रानी के पास दल के 15-20 सवार थे।**

रानी ने अपनी दोनो सखियों के साथ घोड़े को ऐड़ लगाई। शत्रु की पंक्तियों को चीर कर परले सिरे पर होने वाले लोगों से मिलना चाहती थी। **गोरे शिकारी कुत्तों की तरह उसका पीछा कर रहे थे। किन्तु रानी ने तलवार के बलपर अपना मार्ग बनाया और आगे बढ़ी.... और सहसा एक चीख सुनाई दी—"बाई साहब मैं मरी! उफ् यह कैसी पुकार! रानी ने घूमकर देखा। उसकी सखी मन्दार को एक अंग्रेज ने गोली मारी थी। बिजली की गति से दौड़कर एक ही वार में उस फिरंगी के दो टुकड़े रानी ने कर दिए।** मंदार का प्रतिशोध ले लिया। अब घूमकर आगे बढ़ी।

मार्ग में एक नाला आया। बस घोड़े की एक छलांग में रानी अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त थी। किन्तु नया घोड़ा वहीं अड़ गया। **नाला पार करने से बेवफा घोड़े ने इन्कार कर दिया।** काश आज उनका वह पुराना

घोड़ा होता। मानों किसी जादुई असर के वह घोड़ा चक्कर काटने लगा। **क्षण भर में ही गौरे सैनिक रानी के करीब आ गए और इस घिरी अवस्था में ही एक तलवार ने अनेक तलवारों का सामना किया।....**

पर एक-एक ही है, **उन बहुत से अंग्रेजों में से एक ने पीछे से सिर पर वार किया और उस वार के साथ रानी के सिर का दाहिना हिस्सा और दांयी आंख निकलकर बाहर लटकने लगी**—उसी समय दूसरा वार छाती पर हुआ। महालक्ष्मी अब तुम्हारे रक्त की पांवन बूंद—आखिरी बूंद टपकने वाली है। **स्वतन्त्रता की देवी को उसने अन्तिम बलि दी। अपने ऊपर वार करने वाले अंग्रेज के टुकड़े कर डाले और अब रानी अन्तिम सांस लेने लगी।**

रानी का विश्वासपात्र सेवक रामचन्द्रराव देशमुख पास ही था। उसने रानी को उठाया और पास की एक झोंपड़ी में उसे ले गया। बाबा गंगादास ने रानी को ठंडा पानी पिलाया और बिछौने पर लिटा दिया। रक्त से लथपथ शरीर को उस देवी ने बिस्तर पर लेटा रहने दिया और उसकी पावन आत्मा स्वर्ग सिधार गई। **अन्तिम सांस निकलते समय अपनी स्वामिनी की अन्तिम सूचना के शब्दों के अनुसार रामचन्द्र राव देशमुख ने शत्रु की आंख बचाकर घास का ढेर लगा दिया और उसी चिता पर लिटाकर पराधीनता के अपवित्र स्पर्श के भय से तुरन्त अग्नि संस्कार कर डाला।**

सिंहासन पर नहीं चिता पर लक्ष्मीबाई के गले में स्वतन्त्रता की कौस्तुममणि विराजमान है। **रणभूमि में उत्सर्ग करके रानी ने मृत्यु का द्वार तोड़ दिया।** अब भला कोई मानव उसका क्या पीछा करेगा?

इस प्रकार रानी लक्ष्मीबाई लड़ी। अपना लक्ष्य पूर्ण कर गई। ऐसा एक जीवन सम्पूर्ण राष्ट्र का मुख उज्जवल करता है। वह सब सद्‌गुणों का सार थी। एक महिला जिसने जीवपन के 23 बसंत ही देखे थे, कोमलांगी, मधुर विशुद्ध चरित्र, पुरुषों में भी न पायी जाने वाली संगठन कुशलता से वह ओत-प्रोत थी। उसके हृदय में देशभक्ति रत्नदीप की तरह प्रकाशमान थी। अपने देश भारत पर उसे गर्व था। युद्ध कौशल में अद्वितीय थी। विश्व में शायद ही कोई ऐसा होगा, जो ऐसी देवी को अपनी कन्या और रानी कहने का अधिकारी होगा।

इंग्लैण्ड के भाग्य में यह सम्मान अब तक नहीं बदा है। इटली की क्रान्ति में ऊंचे शौर्य और आदर्श का परिचय मिलता है; फिर भी इतने वैभवपूर्ण समय में इटली एक लक्ष्मीबाई पैदा नहीं कर सका।

भारत का यह अहोभाग्य है कि ऐसी स्त्री यहां पैदा हुई। उसका शरीर बाबा गंगादास की झोंपड़ी में प्रज्वलित ज्वाला में दमक रहा है। पर यह रत्नदीप हमारी मातृभूमि भी कदाचित् पैदा न कर सकती यदि वह स्वतन्त्रता संग्राम का महायज्ञ न रचा जाता।

अनमोल मोती सागर की सतह पर ही नहीं मिल जाते। रात्रि के अंधकार में सूर्यकान्त मणि तेज की किरणें नहीं फेंकती। चकमक पत्थर कोमल वस्तु की रगड़ पर चिंगारी उत्पन्न नहीं करता। **इन सबको विरोध की अपेक्षा होती है। अन्याय से पिसे हुए मन को बेचैन बना दो—अन्दर तक, रक्त की एक-एक बूंद में उबाल आना चाहिए।** अन्याय का ईंधन प्रतिशोध की भट्टी को तपाता रहे तो ऐसी भट्टी में फिर सद्‌गुणों के कण चमकने लगते हैं।

1857 में हमारी भूमि पर सचमुच ही आग भड़क उठी थी और फिर विश्व के कानों में गूंज भरने वाला धमाका...इस अग्नि का कितना विस्तृत फैलाव हुआ। ऊंची लपट-लपट में से एक लपट-मेरठ में चिंगारी और डलहौजी के 'रोलर' से समतल बना धूल का ढेर सार देश में ज्वालामुखी बारूद के अम्बार सा दिखाई पड़ा। जैसे आतिशबाजी का अनार खुलने पर उसे रंग-बिरंगे, बाण-पेड़ तथा अन्य चीजें छूटती हैं और फिर शान्त हो जाती हैं, उसी तरह **इस क्रान्ति के अनार से तप्त लहु बहा, शस्त्रास्त्र और मुठभेड़ें निकलीं। और यह अनार भी कितना बड़ा मेरठ से विंध्याचल तक लम्बा, पेशावर से दमदम तक चौड़ा और उसे सुलगाया गया।**

आग की लपटें सभी दिशाओं में व्याप्त हो गईं और उस अनार के पेट में क्या-क्या अजीब चीजें थीं। लहू मेघ की तरह बरसा-**ओलों के साथ दिल्ली के घेरे, प्लासी के प्रतिशोध, कानपुर, लखनऊ तथा सिकन्दराबाद के कत्ल।** सहस्रों वीर जूझ रहे हैं; मौलवी आया, बांदा, फर्रूखाबाद के सिंहासन; पांच हजार, दस हजार, सहस्त्रों, लाखों तलवारें, ध्वजाऐं, झण्डे, सेनापति, घोड़े, हाथी, ऊंट सब इस अनार से बाहर-एक-के-बाद-एक आग के फव्वारे से निकलते हैं। एक कुछ ऊंचाई की लपट पर कुछ दूसरी पर-ये ऊंचे चढ़ जाते हैं; लड़खड़ाते हैं और लुप्त हो जाते हैं।

सब ओर युद्ध-बिजली की कड़क, ज्वालामुखी की भीषण ज्वालाओं का यह फव्वारा। और **यह चिता-बाबा गंगादास की झोंपड़ी के पास जल रही है।** 1857 के स्वातन्त्र्य, समर के ज्वालामुखी की यह अन्तिम ज्वाला है। ❖❖❖

सामयिक-चर्चा

सोनिया का हंगामा बनाम मोदी का विकास

–राजनाथ सिंह सूर्य

सरकार की रीति-नीति का विरोध कर जनमत को अनुकूल बनाने का प्रयास राजनीतिक अपराध नहीं है, लेकिन भ्रमित भयभीत और विभक्ति को बढ़ावा देने वाली अभिव्यक्ति अवश्य चिन्ता का कारण बनना चाहिए। सोनिया गांधी को किसी और का नहीं तो अपने धर्म बन्धु पूर्व रक्षा मन्त्री ए.के. एंटोनी की पराभव के कारणों में अतिशय तुष्टीकरण को मुख्य रूप से जिम्मेदार ठहराने का संज्ञान तो अवश्य लेना चाहिए।

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी का आरोप है कि पिछले एक वर्ष में अर्थात जब से नरेन्द्र मोदी प्रधानमन्त्री बने अल्पसंख्यकों में असुरक्षा की भावना बढ़ती जा रही है। स्वयं एक अल्पसंख्ययक और विदेशी मूल की होने के कारण भारतीयों को बहुसंख्यक अल्पसंख्यक में बांटने के विदशी सत्ता के दौरान अपनाए गए दृष्टिकोण का उन पर प्रभाव हो, **लेकिन जनता ने इस अल्पसंख्यक बहुसंख्यक अवधारणा के खिलाफ संघर्ष ही किया है।**

हालांकि देश इसी अवधारणा पर आधारित बंटवारा रोक पाने में वह असफल रहा है। जवाहर लाल नेहरु देश के प्रधानमन्त्री बने उस वर्ष या 1947 में जब देश का बंटवारा हुआ, इस अवधारणा के कारण किसमें कितना भय व्याप्त था इसके विस्तार में भी जाए तो **यह बात तो पूछी ही जा सकती है कि उसके बाद के वर्षों में सबसे अधिक साम्प्रादायिक दंगे और हत्याएं किसके शासनकाल में हुई हैं।** हाशिमपुर इसका एकमात्र उदाहरण नहीं है।

सोनिया गांधी ने कुछ नया नहीं किया। **देश के पहले आम चुनाव के कुछ ही महीने पहने श्यामा प्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में जनसंघ उनके चुनावी आक्रामकता का मुख्य मुद्दा था, जबकि जनसंघ को सारे देशभर में उम्मीदवार भी नहीं मिले थे** यदि उस समय और उसके बाद के कांग्रेसी शासन की घटनाओं को भी नजरअन्दाज कर दिया तो भी यह तो समझने में कठिनाई नहीं आनी चाहिए कि **पिछले पन्द्रह वर्षों में जब से कांग्रेस सोनिया गांधी के कब्जे में आई है,** गुजरात में नरेन्द्र मोदी से अल्पसंख्यकों के लिए खतरे के प्रचार से कांग्रेस का वहां क्या हश्र हुआ है?

नरेन्द्र मोदी के सबका साथ-सबका विकास के आश्वासन पर विश्वास कर जनता ने वर्षों बाद दिल्ली में एक पार्टी को बहुमत की सरकार के गठन का अवसर प्रदान किया है, उसकी कौन सी ऐसी नीति या कार्यक्रम हैं जिनसे अल्पसंख्यकों को भयभीत होना चाहिए। **यह भय उत्पन्न करना तो कुछ उसी प्रकार का है जैसा कि** मुस्लिम लीग और मोहम्मद अली जिन्ना ने कहा था कि **कांग्रेस का राज हिन्दुओं की सरकार का राज होगा।**

अल्पसंख्यक भयदोहन की राजनीति के देश ने अब तक जो परिणाम भोगे हैं, उसकी चोट ज्यादा अल्पसंख्यकों को ही सहनी पड़ी हैं, जिन्ना का स्थान पाने के लिए जिन कुछ लोगों में होड़ चल रही है, सोनिया गांधी और कांग्रेस का यह मुद्दा उन्हें ही प्रोत्साहन प्रदान करेगा। विघटन की राजनीति से निकलकर देश के विकास के लिए एक पार्टी बहुमत की सरकार का जो स्वरूप ब्रिटेन में अब सामने आया है उसे **भारत के अवाम ने एक वर्ष पूर्व ही कर दिखाया था। इसका संज्ञान लेना चाहिए।**

सरकार की रीति-नीति का विरोध कर जनमत को अनुकूल बनाने का प्रयास राजनीतिक अपराध नहीं है, लेकिन **भ्रमित, भयभीत और विभक्ति को बढ़ावा देने वाली अभिव्यक्ति अवश्य चिन्ता का कारण बनना चाहिए।**

मोदी, उनके सहयोगियों और सरकारी निर्णयों में एक भी ऐसा उदाहरण नहीं दिया जा सकता जिसमें वर्ग, सम्प्रदाय, जाति या क्षेत्र के पक्षपात की गंध आती हो अथवा जिसमें वोट की राजनीति करने का आरोप लगाया जा सकता है।

जैसा कांग्रेस ने स्वयं 2014 के निर्वाचन के पूर्व भूमि अधिग्रहण के विधेयक के सन्दर्भ में अपने प्रधानमन्त्री की औकात घरेलू नौकर से भी बदतर करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी थी। परिणाम क्या हुआ???

अवाम वादों और आश्वासनों से कितनी ऊब चुकी है, इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि **अभी एक वर्ष पूरा करने वाली मोदी सरकार ने चुनावी अभियान के दौरान जो वायदे किए थे, उसकी पूर्ति के लिए कितनी व्याकुलता है!! भारतीय जनता पार्टी की जिसके कारण छवि भी धूमिल हो**

रही है, लेकिन **नरेन्द्र मोदी ने विरोधी अभियान के बावजूद सबका साथ-सबका विकास के मार्ग से भटकने को नकार दिया है।** उन्होंने टाइम्स पत्रिका को दिए गए **साक्षात्कार में कहा है कि मेरा पहला वर्ष योजना बनाने और शेष चार उसके क्रियान्वयन में।**..लगभग एक वर्ष पूरा हुआ है। अब क्रियान्वयन शुरू होगा।.......

हमारे देश की मुख्य समस्याएं क्या हैं यदि यह पूछी जाएं तो सभी एक स्वर में कहेंगे **भ्रष्टाचार।** सोनिया गांधी के पति **राजीव गांधी ने जो देश के प्रधानमन्त्री भी रहे हैं, कहा था कि दिल्ली से चले एक रुपए में सोलह पैसा ही लाभार्थी को मिल पाता है।** इससे सभी सहमत हैं लेकिन इसे रोकने के लिए क्या किया गया?

बिना किसी हिचक के यह कहा जा सकता है, केन्द्रीय या राज्य सरकार की **जितनी भी अनुदान योजनाएं गरीबों को लाभ पहुंचाने के लिए बनाई गई उससे ग्रामीण अंचल तक भ्रष्टाचार बढ़ा है।** वे योजनाएं खराब नहीं थी, लेकिन उनका क्रियान्वयन ऐसा हुआ कि भ्रष्टाचार निचले पायदान तक पहुंच गया और लाभार्थी वंचित रह गया। **नरेन्द्र मोदी ने इसे रोकने के लिए छापे नहीं डलवाए या किसी को जेल भेजा** बल्कि ऐसा उपाय किया जिसमें जो धन लाभार्थी के लिए है उसे ही मिले। **पहला कदम था, प्रधानमन्त्री जनधन योजना अर्थात सभी का बैंक खाता खुलवाना।**

दूसरा कदम, **योजना की राशि सीधे उसके खाते में जमा कराने के रूप में..... गैस सबसिडी का उनके खाते में जमा कराना।**

इस एक कदम से सबसिडी का लाभ न केवल लाभार्थियों को मिलना शुरू हो गया है बल्कि अरबों रुपए का रिसाव (लीकेज) भी खत्म हुआ! *वैसा ही जैसे कोयला खदानों के मनमाने आबंटन से जो खरबों रुपए की हानि हुई उसकी केवल बीस खादानों की नीलामी का उन राज्यों को ही मिलने की व्यवस्था की जिसमें वे हैं।*

> ***सरकार ने, चाहे मनरेगा हो नरेगा हो या अन्य गरीबों के लिए की जानी वाली अनुदानित योजनाएं उसे सीधे लाभार्थी के बैंक खाते में भेजकर अब ऐसा कदम उठाया है, जिससे यदि सौ में सौ पैसे उनके खाते में जाने का दावा न किया तो भी यह कहा सकता है कि नब्बे पैसे तो अवश्य पहुंचेंगे।***

इस योजना का एक आश्चर्यनक पहलू यह भी है कि यद्यपि सरकार ने बिना एक पैसा जमा किए हुए भी खाता खोलने के आदेश किए थे। तथापि **देश के गरीबों ने पन्द्रह हजार करोड़ से भी अधिक धनराशि खाता** खोलने में देकर यह साबित कर दिया कि वे **बैंक से अरबों रुपया लेकर उसे डकार जाने वालों की अपेक्षा कितने ईमानदार हैं!!!!** शायद गरीबों के इसी इमानदारी और आवश्यकता से भी **प्रधानमन्त्री ने गरीबों के लिए पिछले सप्ताह तीन और ऐसी योजनाओं की घोषणा की है जो गरीबों का जीवन स्तर सुधारने के लिए सहयता की अपेक्षा शक्ति प्रदान करेगी।**

पहली योजना है प्रधानमन्त्री बीमा सुरक्षा योजना जिसके लिए प्रत्येक खाता धारक को दुर्घटना से आहत होने पर उपचार या मृत्यु होने पर दो लाख रुपया दिया जाएगा। यह योजना 18 वर्ष से 70 वर्ष के उम्र वालों के लिए है। ***दूसरी है*** प्रधानमन्त्री जीवन ज्योति बीमा योजना जिसके अन्तर्गत वार्षिक 330 रुपया यानि रुपया प्रतिदिन जमा करने वाले 18 से 50 वर्ष की उम्र वालों को दुर्घटना या मृत्यु होने पर दो लाख रुपए का अनुदान मिलेगा। ***तीसरी योजना है*** अटल पेन्शन योजना यह 18 वर्ष से 40 वर्ष के लोगों के लिए है जो 210 से 145 रुपया महीना जमा करने वालों को साठ वर्ष का होने पर पांच हजार रुपया मासिक पेन्शन के रूप में मिलेगा। जमा की राशि का ब्याज सहित भुगतान भी मिलेगा। **ये सभी योजनाएं जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्र या समुदाय के लिए है किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं हैं, जैसा कि अब तक होता रहा है।** इससे अल्पसंख्यकों को भयभीत होना चाहिए या उसका लाभ उठाना चाहिए??.....

सोनिया गांधी और मोदी सरकार विरोधी करने वाली अन्य पार्टियों ने अपने हैसियत बनाने के लिए दो उपाय अपनाए हैं। देश में अल्पसंख्यकों को भयभीत करो और संसद में काम-काज न होने दो।

कांग्रेस की तो अजीब स्थिति है जिन विधेयकों को उन्होंने ही तैयार किया था, उसे भी पारित नहीं होने दे रहे हैं। **इस दावे को कोई चुनौती नहीं दे सकता कि मोदी के सत्ता में आने के बाद भारत का दुनिया में महत्व बढ़ा है।....**

चाहे शपथ ग्रहण के समय शार्क देशों के प्रमुखों को आमन्त्रित करना हो या विश्व मंच पर की गई अभिव्यक्ति, सभी देश अथवा मालदीव में पेयजल अभाव की आपूर्ति...**पहली बार विश्वभर में फैले भारतीय समुदाय को गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान किया है।**

> ***नेपाल में आए भूकम्प या अरब देशों में फंसे भारतीय एवं अन्य विदेशियों को वहां से निकालने का कार्य, संसार भर में भारत को सराहा गया। पहली बार पाकिस्तान को यह अनुभव कराया गया कि उसकी गोली का जवाब अब सम्मेलनों से नहीं तोप के गोलों से दिया जाएगा।***

(शेष पृष्ठ-39 पर)

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस एवं सत्य सम्बधी कुछ तथ्य

–जुगलकिशोर उपाध्याय 'एडवोकेट'

"लेखनी न आगे बढ़ पाती,
कवि लिख सकता इतिहास नहीं।
अक्षर-अक्षर यह पूछ रहा
क्या जीवित आज सुभाष नहीं?"

नेताजी का जन्म 23 जनवरी 1897 में उड़ीसा में हुआ था और **बताया जाता है कि 23 अगस्त 1945 को फारमोसा के निकट ताईपेई के निकट उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिससे वह यात्रा कर रहे थे.... उस समय उस विमान में कर्नल हवीबुर्र रहमान जो उनके बॉडीगार्ड थे उनके साथ थे।**

उनका कहना था कि नेताजी का विमान दुर्घटना ग्रस्त हो गया और उसमें आग लग गई जब हम विमान से बाहर निकले तो उस समय उनका आधा शरीर जल चुका था। **ताईपेई के एक अस्पताल में उनको दाखिल कराया गया जहां उनकी मौत हो गयी।**

लेकिन कुछ लोग इस बात को बिल्कुल गलत मानते हैं और यह कहते हैं कि वह अपनी योजना के अनुसार **ब्रिटिश और अमेरिकन गुप्तचर एजेन्सियों की आँखों में धूल झोंककर किसी अज्ञात स्थान पर चले गये।** इस विषय में निम्न स्टेटमेण्ट जो कि फरवरी 1969 के राष्ट्र धर्म के वर्ष 5 अंक 2 में पृष्ठ संख्या 128 पर छपा है। उसे यहाँ उद्धृत किया जाता है:-

नेताजी का अज्ञातवास

प्रिय यंग,

अन्तोगत्वा बोस की कथित मृत्यु से सम्बन्धित उपलब्ध सूचनाओं की छानबीन पूर्ण हो गई और उसका परिणाम सर्वथा सन्तोषजनक है क्योंकि इसमें बहुत सी असंगतियाँ हैं जो अब तक स्पष्टीकरण न हो। इस घटना के विषय में किसी निश्चित निष्कर्ष को संदिग्ध बना देती है..... **दि एस.ए.सी.एस.ई.ए. कमीशन नं.1, रिपोर्ट दिनांक 6 नवम्बर 1954 में कहा गया है....** .. यह संदेह से परे है कि **उनकी (बोस) योजना अपने कुछ चुने हुए मित्रों के साथ अज्ञातवास में चले जाने की थी।** कमीशन की दिनांक 18 अक्टूबर 1945 की पूर्ववर्ती रिपोर्ट में बताया गया है कि जापानियों ने बोस को आवश्यक संरक्षण (अज्ञातवास में जाने के लिए) देने का वचन दिया था।

मेजर काउण्टने यंग, इण्टेलीजेंस डिवी-
जन, सी.आई.सी.बी., एच.जी.,
सी.ए.सी.एस.ई.ए., सिंगापुर
आपका हितैषी
(ह.) डब्ल्यू मैकराइट

(नं.सी-5, इण्टेलीजेन्स ब्यूरो, (एच.डी.) नयी दिल्ली-3, दिनांक 19 फरवरी 1946, गोपनीय

नेताजी के बड़े भाई सुरेश बोस ने लिख है कि वह एक जाँच समिति के जो सरकार ने नेताजी की मृत्यु के तथ्यों का पता लगाने के लिए बनायी थी वह उसके तीसरे सदस्य थे और उसमें अन्य लोगों के साथ जब कर्नल हवीबुर्र रहमान से जाँच आयोग अध्यक्ष ने बात की तो उन्होंने बताया कि उनके पास कुछ फोटोग्राफ हैं जो कि **2 तो विमान दुर्घटना के विषय में है तथा एक अर्थी का, तथा चौथे में वह स्वयं अर्थी के साथ बैठे हुए दिखाये गये हैं।**

यह जाँच आयोग नेता जी के विमान दुर्घटना के स्थल से ढेड़ से दो किलोमीटर दूर था। **यह लोग हवाई अड्डे पर ही थे पर एक विचित्र बात है कि यह फोटोग्राफ उनको नहीं दिखाये गये।** उनके बार-बार अनुरोध पर भी जब कुछ नहीं किया गया तब उन्होंने 14 जुलाई 1956 से लेकर 30 अगस्त 1956 तक जाँच समिति के अध्यक्ष को पत्र आदि भी लिखे थे। **उनके अतिरिक्त सुरेश बोस ने प्रधानमंत्री तथा पर राष्ट्र मंत्रालय के संयुक्त सचिव से भी इस सम्बन्ध में लिखा-पढ़ी की पर उनको अन्त तक सरकार के द्वारा यह फोटोग्राफ नहीं भेजे गये** और उनको कहा गया कि अपने सहयोगियों के अनुसार रिपोर्ट दे दें। अन्त में उन्होंने लिखा है कि मैंने क्योंकि अपनी रिपोर्ट विरोध में लिखी। इसलिए उनको यह चित्र और दस्तावेज नहीं दिये गये।

श्री जयराम जो कि नेताजी के 2 जनवरी 1943 से अगस्त 1943 तक नेताजी के गनर रहे थे उनका कहना है कि जब एक ही विमान में कर्नल हवीबुर्र रहमान और नेताजी दोनों साथ-साथ बैठे थे तो कर्नल हवीबुर्र रहमान कैसे जीवित बच गये??

उन्होंने सम्भावना व्यक्त की है कि वह रूस पहँच गये जहाँ पर स्टालिन के द्वारा उनकी हत्या करा दी गयी।

डॉ. सुब्रहमयम स्वामी नेता बीजेपी ने भी कहा है कि नेहरू जी की सम्मति से उनकी हत्या स्टालिन ने करायी थी।

कुछ और भी लोग ऐसा मानते हैं कि **वह रूस में ही पहुँच गये थे पर फिर वहाँ से भी गायब हो गये।** इस बारे में कुछ तथ्य पेश हैं जो निम्न हैं:-

1. 1965 में एक किताब उत्तम चन्द मल्होत्रा जिनके सहयोग से नेताजी सुभाष 1940 में अफगानिस्तान होते हुए रूस पहुँचे थे उन्होंने प्रकाशित की थी "**शैल मारी साधु ही नेताजी**" यह शैलमारी आश्रम पश्चिम बंगाल में स्थित था। उस समय प्रधानमंत्री शास्त्री जी थे। पर इस विषय में कोई प्रमाण नहीं मिला और **शास्त्री जी ने कहा था कि अगर वे साधू नेता जी हैं तो प्रकट हो जायें। उनका स्वागत किया जायेगा।**

लेकिन इस किताब में उत्तम चन्द मल्होत्रा ने यह स्पष्ट किया था कि **द्वितीय विश्व युद्ध के बाद नेताजी का नाम युद्ध अपराधियों में था।** इस बारे में वह लिखते हैं कि **तोजो, हिटलर, मुसोलिनि, सुभाष चन्द्र बोस, आइक मैन, बोरमन, क्विजलिंग एवं एक अन्य यह आठ युद्ध अपराधी घोषित किये गये हैं और अगर यह किसी देश में पाये जायें तो उस देश का कर्त्तव्य है कि ऐसे पाये गये अपराधी को अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग को सौंप दे ऐसा न करने पर विश्व युद्ध हो जायेगा।** यह तथ्य है कि 1964 में हिटलर के दाहिने हाथ जिसने 64 लाख यहुदियों को मार डाला था उसको इजराइल के जासूसों ने अर्जेटाइना से गिरफ्तार किया और इजराइल में उसके ऊपर मुकद्मा चला कर उसे मृत्यु दण्ड दिया गया था।

पिछले कुछ दिनों से अखबारों में बराबर छप रहा है कि नेताजी के परिवार के लोगों की जो दो मकानों में रहता है 1947 से 1968 तक जासूसी करायी गयी। 1999 में गठित जस्टिस मनोज मुखर्जी कमीशन की रिपोर्ट के मुताबिक **नेताजी की मौत ताईवान में वायु दुर्घटना में नहीं हुयी थी। और जापान के मन्दिर में रखी गयी अस्थियाँ नेताजी की नहीं है।** लेकिन सरकार ने इसको भी स्वीकार नहीं किया।

नेताजी के रहस्य से सम्बन्धित 64 फाइलें हैं जो कलकत्ता में रखी हैं इनमें से 41 फाइलें सरकार के पास 1953-2000 के दौरान बनाई गई। नेताजी से संबंधित **41 फाईलें** हैं। 2 फाइलें आइएनए कोष और नेताजी की मृत्यु उनकी मृत्यु की परिस्थितियों की जाँच के लिए गठित जाँच कमीशन फाइल को डी-क्लासीफाइड कर दिया गया है। ये राष्ट्रीय अभिलेखागार में उपलब्ध हैं **सार्वजनिक हुए दस्तावेजों से ही जासूसी का मामला उजागर हुआ है।** 4 टॉप सीक्रेट फाइलों की संख्या, 20 सीक्रेट फाईलें, 5 क्लासीफाइड फाइलें, 10 अनक्लासीफाइड फाइलें हैं। (**दैनिक जागरण दिनांक 15 अप्रैल 2015**)

नेताजी के परिवार के लोगों की 1947 से 1968 तक जासूसी भारत सरकार द्वारा कराने के पीछे शायद यही रहस्य होगा कि अगर नेताजी कहीं पर भी जीवित हैं तो वह अपने परिवार वालों से जरूर सम्पर्क करेंगे और उनके विषय में भारत सरकार को भी पता लग सकता है।

वर्तमान मोदी सरकार ने कुछ दिनों पहले कहा है जो कि **समाचार पत्रों में भी छपा है कि उनसे सम्बन्धित फाइलों के रहस्योद्‌घाटन से हमारे कई देशों से अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध बिगड़ सकते हैं।** 10 अप्रैल 2015 के समाचार बुलेटिन (**समाचार प्लस**) में बहस के दौरान श्री अमिताभ अग्निहोत्री और कुछ पार्टीयों के अन्य नेता तथा सदस्यों ने यह कहा है कि **क्या हम इस डर से कि नेताजी के मृत्यु के रहस्य के बारे में तथ्य पूर्ण जानकारी के लिए इस बात से डर जायेंगे कि कुछ देशों से हमारे सम्बन्ध खराब हो जायेंगे।**

जब श्रीमती इन्दिरा गांधी और श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने भी **पोखरन में भी परमाणु परीक्षण किया था तब भी यही प्रश्न थे कि हमारे कुछ देशों से सम्बन्ध खराब हो जायेंगे!!.....** इसलिए **इस विषय में भी रहस्य को समाप्त करके हमारे देश के वासियों को पूर्ण सत्य के बारे में अवगत कराना चाहिये कि ऐसे महान नेता का क्या हुआ??**

नेता जी के **प्रपौत्र श्री सूर्य कुमार बोस** ने सोमवार रात को प्रधानमंत्री मोदी से मिलकर इस विषय में गोपनीय फाइलों के रहस्य का पर्दाफाश करने की मांग की।

श्री पी.एन. ओक जो उनकी फौज में थे उन्होंने भी यही कहा है कि उनकी मृत्यु विमान दुर्घटना में ही हो गई पर जापान ने इस समाचार को दस से बारह दिन बाद प्रसारित किया। इससे मित्र राष्ट्रों में यह डर बैठ गया की नेताजी कहीं गुम हो गये।

कुछ लोगों ने फैजाबाद के बाबा को भी नेताजी बताया है उनमें दिल्ली के पत्रकार अनुज धर ने उनके बारे में बाबा के पास से बरामद 2760 नग सामान की बारी पड़ताल की और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस होने की उम्मीद जताई।

पर यह सब बातें नेता जी की मृत्यु के रहस्य को साबित नहीं करती हैं क्योंकि अगर नेताजी मरे

नहीं और तो शॉलमारी के साधू एवं फैजाबाद के बाबा अगर नेताजी थे तो उनको प्रकट होने में क्या परेशानी थी। भारत की जनता इस बात का जबाब चाहती है। पर कुछ तथ्य नीचे दिये जा रहे हैं–

आजाद हिन्द फौज 30 वर्षो के लिए गैर कानूनी?

राष्ट्र धर्म फरवरी 1969

सत्ता सौंपते समय ब्रिटिश सरकार ने भारत के काँग्रेसी नेताओं के साथ एक गुप्त समझौता किया, उसके मुताबिक भारत का जो 18 अरब पौण्ठ पावना ब्रिटेन में था, वह ब्रिटिश के फौजी और सिविलियनों की पेंशन डिपॉजिट ट्रस्ट में दे दिया गया। भारत को मित्र राष्ट्र (**कॉमन वेल्थ**) नाम के ब्रिटिश कुनबे के अन्दर रहना स्वीकार कराया गया। **नेताजी सुभाष बोस की आजाद हिन्द फौज को 30 वर्षो के लिये गैर कानूनी करार दिया गया।** भारत में ब्रिटिश नागरिकों की चल-अचल सम्पत्ति का मुआवजा चुकाया गया और ब्रिटिश बैंकों, कारटोलों और कारपोरेशनों की सुरक्षा की जिम्मेदारी कांग्रेसी नेताओं ने अपने ऊपर ले ली।

-चन्द्र सिंह गढ़वाली

(पेशावर काण्ड के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता)

इसके साथ ही नेताजी की चरित्र हत्या की भी कोशिश की गई

उस विषय में एक तथ्य यह भी है

(राष्ट्रधर्म फरवरी 1969 पृष्ठ-163)

नेताजी ने कभी विवाह नहीं किया

कमरा नं.-16
20.12.1953
होटल इम्पीरियल
नई दिल्ली.

प्रिय श्री चौधरी,

आज प्रात: फोन पर हुई बातचीत के संदर्भ में मैं आप से पुन: प्रार्थना करूंगा कि **महामहिम राष्ट्रपति से मेरी मुलाकात कराने का प्रबन्ध किया जाये।**

मैं आपसे पहले ही बता चुका हूँ कि मेरे पास ऐसे **अकाट्य प्रमाण हैं कि जिनसे माउण्ट एवरेस्ट का अविजित होना सिद्ध हो जायेगा। मेरे पास इस कथन को प्रमाणित करने वाले कुछ दूसरे कागजात भी लन्दन से प्राप्त हो गए हैं।**

दूसरा विषय जो मैं महामहिम राष्ट्रपति के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहता हूँ, वह यह है कि मैंने जर्मनी की यात्रा तीन बार की है, अभी हाल ही में जापान से लौटा हूं जहाँ मैंने कुछ ऐसे तथ्य एकत्र किये हैं जो सिद्ध करते हैं कि **नेताजी सुभाषचन्द बोस की शादी कभी हुई ही नहीं।** कुछ ऐसे भी प्रमाण हैं जिनसे सिद्ध होता है कि वह जीवित हैं। वह सम्पूर्ण तथ्य स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं।

इन परिस्थितियों में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति द्वारा नेताजी की तथाकथित पुत्री तथा पत्नी के पोषण के लिये दो लाख रूपया मंजूर करना बड़ी हास्यास्पद और अविश्वसनीय बात होगी। अन्त में, **मैं यह बता देना चाहूंगा कि मैं पश्चिमी बंगाल सकार के भ्रष्टाचार विरोधी विभाग से सम्बन्धित भूतपूर्व विशेष अधिकारी हूँ।**

अग्रिम धन्यवाद के साथ
श्री बाल्मीकि चौधरी
आ. राष्ट्रपति के व्यक्तिगत सचिव
नई दिल्ली

आपका विश्वसनीय
एस.एम.गोस्वामी

सरकार से अनुरोध है कि नेताजी के विषय में जो भी सत्य हो देश के सामने रखा जाये।

दिनांक 06.05.2015 **(जिला अध्यक्ष)**
हिन्दू महासभा, आगरा)

(पृष्ठ-36 का शेष)

देश को जिन समस्याओं से जूझना है उसमें **प्राथमिकता है** भ्रष्टाचार गिराना, **दूसरा** कुशासन को समाप्त कर सुशासन लाना। **तीसरा है**, भेदभाव रहित गरीब हितकारी योजनाओं को क्रियान्वित करना और **चौथी है** वोट बैंक की राजनीति–जो जाति या साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीयता को बढ़ावा देती है, उनकी औकात छीनना।

नरेन्द्र मोदी ने इन सभी मोर्चों पर पहल कर दिया है। परिणाम आने में अवश्य ही समय लगेगा लेकिन अच्छे दिन आएंगे का वादा अवश्य पूरा होगा।

कुछ चोर उचक्कों की कृतियों और वाचाल लोगों की अभिव्यक्तियों से मतदाताओं को भ्रमित कुछ समय के लिए ही किया जा सकता है, सदैव नहीं। उसके लिए पूर्व में किए गए आचरण और **व्यर्थ के प्रलाप को छोड़कर जो आगे नहीं आएगा, उनका भविष्य कांग्रेस के समान ही होगा** जो तेजी से अस्तांचल की ओर जा रही है। **सोनिया गांधी हंगामें और मोदी कर्म में विश्वास कर चल रहे हैं।**

(पायनियर, 15 मई, 2015 से साभार) ●●●

क्रान्ति नहीं, वेद लाएगा शान्ति

—अरुणकुमार सिंह

नई दिल्ली में 21, 22 एवं 23 फरवरी को विश्व की अनेक संस्कृतियों को एक सूत्र में पिरोने का सफल प्रयास हुआ। कई दर्शनशास्त्रों और विचारों का मिलन हुआ। **पूरब और पश्चिम को समीप लाने की चेष्टा हुई। बताया गया कि आज विश्व में जिस तरह का मजहबी उन्माद है, पागलपन है, धन-सम्पत्ति को लेकर खींचतान है, उन सबका हल वैदिक संस्कृति, वैदिक सभ्यता और वैदिक जीवन में है।**

अवसर था विश्व वेद सम्मेलन का। इसमें विश्व के 40 देशों से वैदिक विद्वान और साधक आए। इनमें 40 प्रतिशत ईसाई, 10 प्रतिशत बौद्ध, 5 प्रतिशत यहूदी, 3 प्रतिशत मुसलमान, 5 प्रतिशत नास्तिक और शेष मानवतावादी थे। **वक्ताओं ने वैदिक समाज, योग, ध्यान आदि विषयों पर बहुत ही शोधपूर्ण बातें कीं।**

सम्मेलन का आयोजन **'फाउण्डेशन फॉर वैदिक इण्डिया'** और **'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान'** ने किया था। सम्मेलन का उद्घाटन 21 फरवरी को अध्यक्ष एवं ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्द जी ने दीप प्रज्वलित कर किया।

इसके बाद महाराजाधिराज राजाराम प्रो. टोनी नादर (अमरीका) ने अपने बीज भाषण में बताया कि...

> ***भारत को अपने वेद पर गौरव अनुभव करना चाहिए। हालांकि वेद केवल भारत के नहीं हैं, यह वैश्विक और प्राकृतिक हैं। वेद हर किसी के लिए है। वेद विज्ञान है और यह हमारे जीवन से अन्धेरा दूर करता है, आनन्द देता है। वेद में मस्तिष्क, विज्ञान और तकनीक का समावेश है। वेद हमें आत्मा की साक्षात् अनुभूति कराता है। वेद के अनुसार जीना ही वेद को अपनाना है। वेद में ब्रह्माण्ड की पूरी संरचना मिलती है। यह सभ्यता और शान्ति को सन्तुलित करता है। उन्होंने कहा कि अक्षर, ध्वनि, तरंग सबमें वेद है। वेद शाश्वत है। वेद की ऋचाएं पूरी तरह वैज्ञानिक हैं। वेद में प्रयुक्त 'विराम', 'अल्पविराम', 'पूर्ण विराम', आदि से जो ध्वनि मिलती है उसका भी महत्व है।***
>
> ***ऋषि-मुनियों ने जो मार्ग बताया है उसी पर चलकर हम वेद को जान सकते हैं।***

अपने आर्शीवचन में स्वामी वासुदेवानन्द जी ने कहा कि **जो कुछ ब्रह्माण्ड में है वह सब कुछ शरीर में है। इसी को समष्टि और व्यष्टि कहते हैं। समष्टियों को मिलाकर व्यष्टि बनती है। वेद किसी धर्म से बन्धा नहीं है। चाहे हिन्दू हों, मुस्लिम हों, ईसाई हों, यहूदी हों, बौद्ध हों सबके लिए वेद है। वेद में सबके सुख और कल्याण की कामना की गई है।**

वरिष्ठ भाजपा नेता **डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने कहा कि वेद अनन्त ज्ञान का स्रोत है। सारे ज्ञान वेद से आते हैं। आप जितनी बार वेद का अध्ययन करेंगे उतनी बार आपको नया ज्ञान मिलेगा।** आधुनिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान को वेद से जोड़ने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि सृष्टि के साथ आया है। इस पर जितना अधिक शोध होगा उतना ही अधिक अच्छा होगा। **योग के द्वारा हम वेद ज्ञान तक पहुंच सकते हैं।** हम सब एक ही ब्रह्माण्ड के भाग हैं।

यदि यह विचार पूरे विश्व में जाता तो आज जो सीरिया, इराक आदि देशों में लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं वे नहीं होते। इसलिए हमें वैदिक ज्ञान को पूरी दुनिया में ले जाना है। वैदिक संस्कृति हमें बताती है कि आपके पास जो कुछ भी है उसे बांटें। सबके हित और कल्याण की चिन्ता करें। पशु, पक्षी, प्रकृति सबके साथ सामंजस्य बनाकर चलें। यदि ऐसा होगा तो निश्चित रूप से यह दुनिया बहुत सुन्दर होगी।

दूसरे सत्र के प्रथम वक्ता और **'ग्लोबल यूनियन ऑफ साइंटिस्ट फॉर पीस' के अध्यक्ष डॉ. जॉन हेगल ने कहा कि अपनी संरचना की अनुभूति हम वेद को जानकर ही कर सकते हैं।** विश्व को सुन्दर बनाने के लिए वैदिक ज्ञान को जानना जरूरी है। यह ज्ञान हमें परासत्ता की अनुभूति कराता है। **वैदिक ज्ञान की जानकारी रखेंगे तो हमें आधुनिक दवाइयों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यह ज्ञान त्रिदोष को साम्य रखने में मदद करता है।** उन्होंने कहा कि आत्मानुभूति से किया गया उपचार वैदिक उपचार है। **वैदिक परम्परा हमें आत्माधारित ज्ञान सिखाती है और आत्माधारित शिक्षा देती है। आत्मानुभूति से हमारा कोई शत्रु भी नहीं होगा** और कुछ कारणवश होगा भी तो वह स्वयं ही समाप्त हो जाएगा।

माता अमृतानन्दमयी (अम्मा जी) मठ के उपाध्यक्ष **स्वामी अमृतस्वरूपानन्द जी ने कहा कि वैदिक पद्धति जीवन को नकारती नहीं, उसे अपनाने के लिए लोगों को मानसिक रूप से तैयार करने की**

आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि देश में कई ऐसे सन्त और महापुरुष हैं जिनकी प्रेरणा से लाखों लोग वैदिक पद्धति से जीवन-यापन कर रहे हैं। ऐसे लोगों की संख्या बढ़ाने की जरूरत है।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. विजय भाटकर ने कहा कि वेद इस दुनिया को समझने का और शान्ति का उपकरण है। वेद सम्पूर्ण ज्ञान देता है, बाकी चीजें अधूरी जानकारी देती हैं। वेद अप्रितम और परमज्ञान है। वैदिक सभ्यता शाश्वत है।

भाजपा नेता डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी ने कहा कि वैदिक पद्धति सबकी समृद्धि और कल्याण की बात करती है। वेद ही हमें बताता है कि समाज में कोई कष्ट में न रहे और सब स्वस्थ रहें। ऐसी सोच का दूसरी जगह अभाव है। वेद यह भी बताता है कि आध्यात्मिक और आर्थिक नीतियों में सदैव सन्तुलन रहना चाहिए।

महर्षि विश्वविद्यालय प्रबन्धन, अमरीका के प्रो. डॉ. मिखाइल डिलबेक ने कहा कि सक्रिय ज्ञान और मानसिक सन्तुलन योग से मिलता है। इसको अमरीका के चिकित्सकों ने भी माना है। पूरी मानव जाति को वैदिक ज्ञान का सहारा लेना चाहिए।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, भारत के संस्थापक और अध्यक्ष स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति को वैदिक संस्कृति कहा जाता है। यही संस्कृति समस्त मानव की बात करती है। **यह संस्कृति जन्मभूमि को मां मानती है और अपने पुत्रों को श्रवण बन कर मां की सेवा करने को प्रेरित करती है।** वेद हमें समस्त जीव-जगत से जोड़ता है। उन्होंने वैदिक संस्कृति को पुन: स्थापित करने पर जोर देते हुए कहा कि वेद में राष्ट्र और समाज कैसा हो, इसका बहुत ही अच्छा वर्णन किया गया है।

भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के पूर्व अध्यक्ष डॉ. जी. माधवन नायर ने कहा कि भारतीय संस्कृति पर हमें गर्व है। **यह ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है। आज कम्प्यूटर के जरिए हम नक्षत्रों और ग्रहों की स्थिति को देखकर कुछ भविष्यवाणी करते हैं, लेकिन हमारे ऋषि-मुनि हजारों वर्ष पहले ही इस विद्या में पारंगत थे। हमारे यहां हजारों वर्ष पूर्व भी शल्यक्रिया होती थी।** यह सब ज्ञान वेद से ही मिला है। उन्होंने यह भी कहा कि संस्कृति की जानकारी के बिना हम वेद के ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

भौतिकशास्त्री डॉ. जॉन हेगल ने कहा कि बुद्धि से परे की बात वैदिक शिक्षा बताती है। वैदिक शिक्षा आत्मज्ञान कराती है। इसलिए हम वैदिक शिक्षा प्राप्त करें। **योग और यज्ञ** एक ऐसा मार्ग है, जो वैश्विक शान्ति ला सकता है। **'इन्टरनेशनल फाउण्डेशन ऑफ कॉन्सेसनेस बेस्ड एडुकेशन, अमरीका' की अध्यक्ष डॉ. सुसेन डेलबेक ने कहा कि चेतना आधारित शिक्षा के तीन माध्यम हैं–ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय।** इस पद्धति से शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है। **जितनी हमारी चेतना जागृत होगी उतना ही हमारा समाज सुन्दर और व्यवस्थित होगा।** आदर्श जीवन जीने की कला वैदिक शिक्षा बताती है। शाश्वत, नित्य और अपौरुषेय ज्ञान है वैदिक शिक्षा।

आर्ष विद्या मन्दिर के संस्थापक आचार्य स्वामी परमात्मानन्द सरस्वती जी ने कहा कि आज समाज में स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छंदता बढ़ रही है, यह हमारी संस्कृति के विरुद्ध है। **हमारी वैदिक संस्कृति हमें मर्यादा सिखाती है।** जबकि आज हम केवल उपभोक्ता बन कर रह गए हैं। इसलिए वैदिक संस्कृति की पुनर्स्थापना अति आवश्यक है।

संन्यास आश्रम, मुम्बई के अध्यक्ष स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी ने कहा कि वेद कहता है कि कर्म करते रहो। कर्म ही तुम्हारी पहचान है। **कर्म के आधार पर निम्न कुल में पैदा हुआ व्यक्ति एक दिन शिव बन सकता है, तो उच्च कुल में जन्मा व्यक्ति शूद्र बन सकता है।** उन्होंने यह भी कहा कि अर्थशक्ति और वेदशक्ति दोनों मिलकर सुन्दर विश्व का निर्माण कर सकते हैं। **महर्षि विश्वविद्यालय प्रबन्धन, अमरीका के अध्यक्ष डॉ. बेवन मोरिस ने कहा कि वैदिक शिक्षा हमें पूर्ण विकसित करती है।** व्यक्ति के अन्दर सहनशक्ति बढ़ाती है, चिन्ता का निराकरण करती है, बौद्धिक क्षमता का विकास करती है और सबसे बढ़कर आत्मा का साक्षात्कार कराती है।

एस.जी. वी.पी. इन्टरनेशनल स्कूल के संस्थापक सद्‌गुरु श्री माधवदास जी ने कहा कि विश्व की समस्त समस्याओं और जिज्ञासाओं का समाधान वेद में है। वेद मार्ग से ही रामराज्य स्थापित होगा।

कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के डॉ. कीथ वालेस ने कहा कि प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन किए बिना जीवन कैसे जिया जाए, इसकी सीख वेद से मिलती है।

सम्मेलन के अन्तिम दिन के पहले वक्ता थे **आदिचनचनगिरि मठ (कर्नाटक) के प्रमुख निर्मलानन्द स्वामी जी। उन्होंने कहा कि हमने ही दुनिया को गिनती करना सिखाया।** अपने अन्दर जो **विकृतियां हैं उनको आधुनिक शिक्षा समाप्त नहीं**

कर सकती है, इसके लिए हमें वैदिक शिक्षा (भारतीय शिक्षा) की शरण लेनी पड़ेगी।

कर्नल डॉ. ब्राइन रीज (अमरीका) ने भावातीत ध्यान की चर्चा करते हुए कहा कि भावातीत ध्यान करने वाला व्यक्ति आनन्दित जीवन जी सकता है। **अफगानिस्तान में तैनात अमरीकी सैनिकों को भावातीत ध्यान कराया जाता है जिससे कि वे युद्ध की स्थिति में भी आनन्द महसूस करते हैं। शस्त्र से कोई स्थाई विजय नहीं प्राप्त कर सकता है, शास्त्र ही स्थाई विजय दिला सकता है।**

अमरीकी गणितज्ञ **डॉ. कैथी गोरिनी ने वेद और गणित के सम्बन्धों को बताते हुए कि शून्य की शक्ति, शून्य की सत्ता और शून्य की महत्ता भारत ने ही दुनिया को बताई। योगगुरु स्वामी रामदेव ने कहा कि** वैदिक योग ही वास्तविक योग है। **इस समय विश्व की तीन प्रमुख समस्याएं है। एक, मजहबोन्माद, दूसरा, युद्धोन्माद और तीसरा भोगोन्माद।**

एक वर्ग मजहबी उन्माद का पागलपन दिखा रहा है। यही पागलपन युद्धोन्माद खड़ा करता है। भोगोन्माद वाले हर चीज का भोग स्वयं ही करना चाहते हैं, जबकि वैदिक संस्कृति हमें बताती है कि जितनी आवश्यकता है उतना ही लो। वेद के मार्ग पर चलने से ही इन समस्याओं का समाधान हो सकता है।

वेद सम्पूर्ण ज्ञान का मूल स्रोत है। उन्होंने वैदिक भारत और फिर वैदिक विश्व बनाने के लिए सबका आह्वान करते हुए कहा कि हर कोई इसके लिए प्रयास करे। **भारत सरकार भी वेद को बढ़ावा देने के लिए सार्थक प्रयास करे।** वेद ही शक्ति और समृद्धि का मार्ग खोलेगा।

डॉ. ई. हर्टमन ने वास्तु के अनुसार बनाया गया घर व्यक्ति में सकारात्मक सोच पैदा करता है और वह उसी के भरोसे अपने जीवन में सफल होता है।

इन सबके अलावा अनेक विद्वानों ने भी सम्मेलन को सम्बोधित किया ❖❖❖

ईसाई धर्म प्रचारकों का कुचक्र:

सावधान हिन्दू समाज

- ईसाई धर्म प्रचारक श्रमिकों, अशिक्षितों और वंचित समाज को अपना शिकार बनाते हैं।
- शुरू में, इन्हें आश्वासन दिया जाता है कि, यदि आप हमारी प्रार्थना सभाओं में आयेंगे तो आपके कष्ट दूर हो जायेंगे।
- जब प्रलोभन में व्यक्ति इनकी प्रार्थना सभाओं में जाने लगता है तो, उसे अपना साहित्य देते हैं।
- धीरे-धीरे घर से देवी-देवताओं की मूर्ति और चित्र हटाने को कहते हैं, भोले-भाले व्यक्ति को यह पता भी नहीं चलता कि, उसका धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।
- महिलाओं से कहा जाता है कि, आपके सुहाग के प्रतीक आपको कष्ट पहुँचा रहे हैं, इनका परित्याग करो।
- व्यक्ति धोखे में आ जाता है और फिर किसी चर्च में ले जाकर ईसई बना दिया जाता है।

हम क्या करें?

- हिन्दू संगठनों को चाहिये कि, प्रत्येक मन्दिर में सप्ताह में कम से कम एक बार कीर्तन और प्रार्थना सभा हो। श्रमिकों, वंचितों और निर्धनों को अधिक से अधिक सम्मिलित किया जाये।
- जहाँ भी ईसाई मिशनरियों अवैधानिक रूप से धर्मान्तरण करा रही हों, उसकी सूचना प्रशासन को तुरन्त दें।
- हिन्दुत्व का प्रचार करने को लिये प्रत्येक जागरूक हिन्दू को आगे आना होगा। यह कार्य मानवता की रक्षा का कार्य है। किसी का धर्मान्तरण करना सबसे बड़ा मानवाधिकार हनन है।
- श्रमिकों, वंचितों और कृषकों के मध्य वैदिक शिक्षाओं का प्रचार युद्ध स्तर पर हो। आर्यसमाज भी अपनी निद्रा का परित्याग करें और सनातनसभाएं भी सक्रिय हों।
- बौद्ध, सिक्ख और जैन संगठनों को भी चाहिये कि, वे धर्म प्रचार का कार्य तेजी के साथ करें।
- भारत की आध्यात्मिकता में व्यापकता, सौहार्द्र, सहयोग, उदारता और अहिंसा है। **मानवता की रक्षा हेतु** हिन्दुत्व की रक्षा करनी आवश्यक है।

अखिल भारत हिन्दू महासभा, हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

चन्द्र प्रकाश कौशिक	मुन्ना कुमार शर्मा	वीरेश कुमार त्यागी
अध्यक्ष	मन्त्री	कार्यालय मन्त्री

हम सब प्राणी एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें

–मनमोहन कुमार आर्य

मित्रता दो व्यक्तियों का परस्पर एक मधुरता से पूर्ण सम्बन्ध होता है। यह सम्बन्ध कुछ इस प्रकार का होता है कि जब दोनों मिलते हैं तो अपने सुख-दुख व अन्य सभी बातें एक-दूसरे को बताते हैं। **मित्रों के सुख व दुःख का एक-दूसरे को पता होता है।** कोई किसी से कुछ छिपाता नहीं है। किसी भी बात को छिपाना मित्रता के धर्म के विपरीत होता है। अन्यों से पता लगने पर दूसरे मित्र को दुःख होता है। **किसी भी प्रकार का यदि किसी एक पर संकट आता है तो दूसरा मित्र अपने संकटग्रस्त मित्र की हर प्रकार से सहायता करता है।**

हमारा प्रत्यक्ष ज्ञान पर आधारित एक अनुभव है। एक सम्पन्न युवा व्यक्ति थे। वह अपने आर्थिक दृष्टि से कमजोर मित्र को आवासीय भूखण्ड खरीदने के लिए प्रेरित करते थे। एक बार भाव विभोर उन्होंने कहा कि **भूखण्ड तुम खरीद लों, भवन मैं बनवा दूंगा। कुछ ही दिनों बाद एक सड़क दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई।** यह घटना मित्र की भावनाएं कैसी होती है, उसका एक उदाहरण है। एक दूसरा उदाहरण भी हमारे प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित है। **एक व्यक्ति की पत्नी की तबियत अचानक बिगड़ गई। छुट्‌टी का दिन था। डॉक्टर ने तत्काल वृहत व जटिल आपरेशन कराने का परामर्श दिया। उस व्यक्ति के पास पैसे नहीं थे। उनके एक अन्य मित्र एकदम से सामने आए और सारी व्यवस्था कर दी।** बाद में दोनों के बीच धन का लेन-देन हो गया। यदि उस समय उनकी सहायता न मिलती तो परिणाम सामने था। **प्राणों का संकट समक्ष था और उस मित्र की सहायता ने उसे टाल दिया।**

यह भी अनुभव है कि विपरीत परिस्थितियों व आवास निर्माण में अनेक निकट मित्रों ने बिना कहे ही आर्थिक सहायता का प्रस्ताव किया। कुछ ने मना करने पर भी सहायता की। **इस प्रकार का भाव सभी मित्रों में देखा जाता है। मित्रता प्रायः समान गुणों वाले दो व्यक्तियों में होती है जिनकी आयु भी लगभग समान व कुछ कम-ज्यादा होती है।** दो मित्र वह होते हैं जिनके हृदय परस्पर जुड़े हुए होते हैं।

जिन-जिन से हमारी मित्रता होती है। उनके प्रति हृदय में एक विशेष प्रकार का आदर, प्रेम, सहयोग की भावना, कल्याण की इच्छा व उन्हें सुख पहुंचाने की भावना होती है। **गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को सखा के नाम से सम्बोधित किया है। सखा शब्द भी मित्र का ही पर्यायवाची शब्द है।** अर्जुन से मित्रता के सम्बन्ध होने के कारण श्री कृष्ण ने महाभारत के युद्ध में अर्जुन की सहायता की। **यदि महाभारत पर दृष्टिपात करें तो हम देखते हैं कि श्री कृष्ण की दुर्योधन या उसके सहयोगियों से अपनी कोई निजी शत्रुता नहीं थी। यह युद्ध सत्य व असत्य के बीच युद्ध था। श्री कृष्ण ने इसमें सत्य के पक्ष का साथ दिया। कृष्ण व अर्जुन के बीच दोस्ती से लगता है कि मित्रता एक ऐसा सम्बन्ध होता है कि जहां मित्र पर विपदा आने पर उसका मित्र उसकी पूरी सहायता करता है** और उसका प्रयास होता है कि मित्र पर आई मुसीबत शीघ्रतम दूर हो जाए।

कृष्ण व सुदामा की मित्रता तो जन-जन में प्रसिद्ध है। दोनों एक साथ एक ही गुरु सन्दीपनी जी से गुरुकुल में पढ़ते थे। अध्ययन समाप्त होने के बाद दोनों अलग-अलग हो गए। सुदामा पर आर्थिक कष्ट आ गए। **उन्हें समान्य रूप से अपना जीवन व्यतीत करने में कठिनाईयां आईं। उस मुसीबत के समय में सहायता के लिए सुदामाजी को अपने मित्र कृष्ण की याद आई। वह उनके पास गए,** दोनों परस्पर मिले और सुदामा जी की समस्या, चिन्ता व विपत्ति समाप्त हो गई। यह मित्रता का उदाहरण है।

हम स्वयं भी जब अपने जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं जब-जब हमें किसी प्रकार की विपत्ति या कष्ट हुआ तो हमारी सहायता के लिए अनेक मित्र ही सामने आए और उनके सहयोग से हम अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल हुए। हम समाज में भी देखते हैं कि सभी लोग अपने मित्र बना कर रखते हैं। उनसे मिलते-जुलते रहते हैं। उनसे मिल कर प्रसन्न होते हैं। जब कभी उनका बाहर जाने व घूमने का कार्यक्रम होता है तो वह अपने प्रियजनों, जो मित्र की शर्तों को कम या पूरा-पूरा निबाहते हैं, उनके साथ जाते हैं। इसका कारण घर से दूर यात्रा में उनमें सुरक्षा का भाव रहता है।

हम यहां संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक वेद का उदाहरण लेते हैं। **ऋग्वेद के एक मन्त्र में बताया गया**

है कि ईश्वर "**शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्य्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरूरूक्रमः।।**" हमारा ऐसा मित्र है जो सदैव हमारा कल्याण चाहता है वह करता भी है। **अब यह कैसे जाने कि ईश्वर का अस्तित्व है और वह हमारा मित्र है? उसका कुछ-कुछ स्वरूप भी हमें ज्ञात होना चाहिए।**

हम इस संसार को तथा अपने व दूसरों के शरीरों को देखते हैं। मनुष्य इन्हें बना नहीं सकते। **अन्य कोई ऐसी सत्ता व शक्ति समस्त संसार में दिखाई नहीं देती जो इन्हें बना सके, परन्तु यह बने हुए हैं,** हम नए-नए मानव व अन्य प्राणियों के शरीरों को बनते हुए देख रहे हैं जो निश्चित रूप से संसार में एक दिव्य, विशाल, सर्वज्ञ, चेतन, बलवान, अनादि व अनुत्पन्न, अमर व अनन्त सत्ता के होने का प्रमाण है। **उसी सत्ता को ईश्वर कहते हैं।** यह संसार अत्यन्त विशाल है जिसकी पूरी कल्पना भी मनुष्य नहीं कर पाता है। **इससे वह दिव्य सत्ता सर्वव्यापक सिद्ध हो जाती है।** और विचार करने पर वह सत्ता सत्य, चित्त अर्थात् ज्ञानवान और कर्मशील, आनन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता सिद्ध होती है। ऐसा उसका स्वरूप है।

वह ईश्वरीय सत्ता हमारी मित्र कैसे है? इस प्रकार से कि उसने हम जीवों वा आत्माओं को सुख देने के लिए इस **ब्रह्माण्ड व इसके समस्त पदार्थों, अन्न, दुग्धधारी पशु, फल के वृक्ष, जल, वायु, औषधि आदि की रचना न करता तो हम जीव लोगों का अस्तित्व होकर भी व्यर्थ का सिद्ध होता।** हम मनुष्य या अन्य प्राणि योनियों में शरीर धारण नहीं कर सकते थे। **उसने हमारे सबके लिए संसार को भी बनाया और हमें कर्म व भोग=सुख व दुःख के लिए शरीर प्रदान किए, इस कारण से वह हमारा मित्र सिद्ध होता है।**

यदि वह ऐसा न करता तो हम उसे मित्र न कहकर शत्रु कहते। अब तो वह निश्चित रूप से हमारा मित्र सिद्ध होता है और हम और सारा संसार उसका कृतज्ञ है। **उसने कितनी सुन्दर व्यवस्था की है कि हमें माता, पिता, भाई, बहिन, सांसारिक मित्र, दादा, दादी, ताऊ, चाचा, तायी, चाची, बुआ, फूफा, मौसी, मौसा, मामी, मामा, सहयोगी आदि दिए हैं।**

इतना ही नहीं हमारे भोग के लिए पूर्व उल्लिखित संसार के अनेक पदार्थ बना कर दिए हैं। बहुत से पदार्थों का उपयोग तो हम विगत एक-दो शतकों से कर रहे हैं और बहुत से पदार्थ आज भी ऐसे हैं जिनका उपयोग हम इस लिए नहीं कर पा रहे हैं कि **हमें उनके उपयोग का ज्ञान ही नहीं है। हमारे वैज्ञानिक अनुसंधान में संलग्न हैं** और भविष्य में नए पदार्थ, उपकरण व उत्पाद हमारे सामने आएंगे।

वह हमारा मित्र कैसा है, उपर्युक्त मन्त्र में ही कहा गया है कि वह वरुण अर्थात् वरणीय, सर्वोत्कृष्ट, स्वीकारणीय व वरेश्वर है, **जर्यमा** अर्थात् पक्षापतरहित होकर न्याय का करने वाला है, **इन्द्र** अर्थात् परम ऐश्वर्यशाली है, **बृहस्पति** अर्थात् विद्या व वाणी का सर्वोत्तम महान स्वामी है जिसमें सुख की पराकाष्ठा है और जो धर्मात्मा मनुष्यों को अपना सुख और आनन्द प्रदान करता है, **उसी परमात्मा से वेदवाणी व उस वेदवाणी के विकार से संसार में प्रचलित सभी वाणियां व भाषाएं अस्तित्व में आई हैं।**

वह विष्णु अर्थात सर्वव्यापक है, सर्वत्र विद्यमान है तथा **उरूक्रमः** अर्थात् अनन्त बलशाली व पराक्रमी है। जब हम उस ईश्वर के शरणागत हो कर उसको याद करते हैं व स्मरण करते हैं तो **उसका ध्यान करने से वह हमें हमारी पात्रता के अनुरूप सुख, शक्ति, शान्ति व सामर्थ्य आदि देता है वह हमारी इच्छाओं को पूरा करता है।** इस प्रकार से ईश्वर सार में मनुष्यों का सर्वोपरि मित्र है। वह अनादि काल से हमारा मित्र है और अनन्त काल अर्थात् **हमेशा मित्र रहेगा क्योंकि वह अजन्मा व अमर है तथा हम भी अजन्मे व अमर हैं। उसका व हमारा अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होगा।** यह सत्य ज्ञान है। किसी को भी इसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। **जो उपेक्षा करेगा वह अपनी बहुत बड़ी हानि करेगा** जिसकी पूर्ति जन्म-जन्मान्तर में भी पूरी होगी या नहीं, कहा नहीं जा सकता।......

यजुर्वेद 36/18 तो एक पूरा मन्त्र (**दृते दृम् ह मा मित्रस्य मा चक्षुसा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।**) ही ऐसा है जिसका मुख्य विषय ही "**मित्र कैसा हो**" का वर्णन कर रहा है। **इस मन्त्र में ईश्वर को अनन्त बल, महावीर, दुष्ट स्वभाव नाशक, विदीर्ण-कर्म, परम ऐश्वर्यवत्, सर्वसुहृदीश्वर, सर्वान्तरर्यामिन्, परमात्मा बताया गया है और उससे प्रार्थना व विनय की गई है कि हे भगवन् मुझे स्थिर न रखकर गतिशील रखिए,** क्रियाशील रखते हुए मुझे विद्या, सत्य, धर्म आदि शुभगुणों में सदैव स्वकृपासामर्थ्य ही से स्थित करो।

मुझको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि तथा विद्या-विज्ञान आदि दान से अत्यन्त बढ़ाओ, मुझे सब प्राणी मित्र की दृष्टि से देखें, सब मेरे मित्र हो

जाएं, कोई मुझसे किंचितमात्र भी वैर-दृष्टि न करें। मैं निर्वैर होके सब प्राणी और अप्राणी चराचर जगत को मित्र की दृष्टि से स्वात्म (अपनी आत्मा के समान), स्वप्राणवत् प्रिय जानूं। **अन्याय से युक्त होके किसी पर कभी हम लोग न वर्तें।** वस्तुतः मनुष्य का कर्तव्य ही उसका धर्म कहलाता है। **किसी विद्वान या महापुरुष द्वारा प्रवर्तित विचारधारा, मत या मजहब हो सकता है, धर्म कदापि नहीं।**..... धर्म का संस्थापक तो ईश्वर ही होता है जो कि सब मनुष्यों व प्राणियों का सदा-सर्वदा मित्र है और रहेगा।

वही वेद के रूप में सृष्टि के आरम्भ में धर्म का उपदेश करता है। बाद में महापुरुषों द्वारा जो मत स्थापित होते हैं वह मजहब, सम्प्रदाय या मत होते हैं, उन्हें धर्म होना स्वीकार नहीं किया जा सकता।

इस संसार में पूर्ण सुख तभी होगा जब संसार के लोग एक दूसरे के सब तरह से मित्र बन जाएंगे। इस मित्रता व दोस्ती के भाव जो कि परमधर्म है, का सब मनुष्यों के लिए परमात्मा ने उपदेश किया है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में ईश्वर को **"इन्द्रस्य युज्यः सखाः"** कहकर उसे मनुष्य आदि प्राणियों का सच्चा व योग्य मित्र कहा गया है। **ईश्वर से बढ़कर मनुष्य व अन्य प्राणियों का कोई मित्र नहीं है।** मित्रता व दोस्ती से दोनों को लाभ होता है व शत्रुता से दोनों को हानि होती है।

अतः हमें सबसे मित्रता करनी चाहिए और शत्रुओं को भी यदि मित्र बनाया जा सकता हो तो बनाना चाहिए। इतिहास में **राम व सुग्रीव, कृष्ण-सुदामा** तथा **राम-विभीषण** की मित्रता के उदाहरण से स्पष्ट है कि दो व्यक्तियों की मित्रता से दोनों को लाभ होता है।

वहीं राम व रावण तथा दुर्योधन व पाण्डवों की शत्रुता से यह परिणाम निकलता है जो असत्य पर होता है, उसका विनाश हो जाता है और सत्य विजयी होता है।

मित्रता सत्य व्यवहार का प्रतीक है और शत्रुता असत्य व्यवहार का प्रतीक। **सभी मनुष्यों को प्रतिदिन आत्म चिन्तन करना चाहिए और अपने हृदय से असत्य व शत्रुता के भावों को निकाल कर उनके स्थान पर सत्य व मित्रता के भावों को स्थान देना चाहिए।** ●●●

जनज्ञान (मासिक) सदस्यता फार्म

कम से कम पांच घरों में पहुंचाएं जनज्ञान
यही है परिस्थिति का आह्वान

नामः...

पूरा पता...

....

पिनकोड .... मोबाईल ....

ई-मेल... व्यवसाय ....

सदस्य संख्या (यदि आप पूर्व में सदस्य हैं तो)...

एक प्रति-18 रुपए, द्विवार्षिक शुल्क-380 रुपए, त्रिवार्षिक शुल्क-550 रुपए
पांच वर्ष-900 रुपए, आजीवन-3100 रुपए, संरक्षक सदस्य-11000 रुपए

तांगेवाला कैसे बना मसालों का शहंशाह

गतांक से आगे....

–महाशय धर्मपाल गुलाटी (एम.डी.एच.)

और फकीरों के अन्दाज में खाली हाथ उस मंजिल की ओर निकल पड़े थे, जिसका कोई पता न था। घर से कोई भी सामान नहीं उठाया था। खैर, सामान की तो बात ही छोड़िए, उस वक्त तो जान बचानी भी बड़ी मुश्किल थी।

हम अकेले चल दिए गए थे जान बे मंजिल, लोग मिलते गए, कारवां बनता गया।

मैंने एक छोटी-सी अटैची ली और घर में जो भी थोड़े-बहुत रुपए पड़े हुए थे उसमें डाल लिए। फिर मैले कपड़े पहनकर मैं, मेरी माताजी, मेरे पिताजी, बड़े भाई धर्मवीर, छोटा भाई सतपाल और हमारी बहनें– लीलावंती, सत्यवती और संतोष रानी सभी कैम्प में आ गए। **हमारे घर में जो भैंस बन्धी थी, वह हमने मुहम्मद्दीन दर्जी को दे दी, जो हमारे चाचाजी के मकान में कपड़े सिलता था। हमने चाचाजी का मकान भी उस दर्जी को ही दे दिया।** हमारी दुकान पर जो माल बिक्री होता था, उसमें नोट भी ग्राहकों से मिलते थे, मगर खुदरा बहुत होता था। उस दर्जी ने हमारे घर में जो खुदरा पड़ा था, हमें लाकर दिया। फिर उसको जो इनाम देना था, हमने वह भी दिया और वह खुश होकर चला गया।

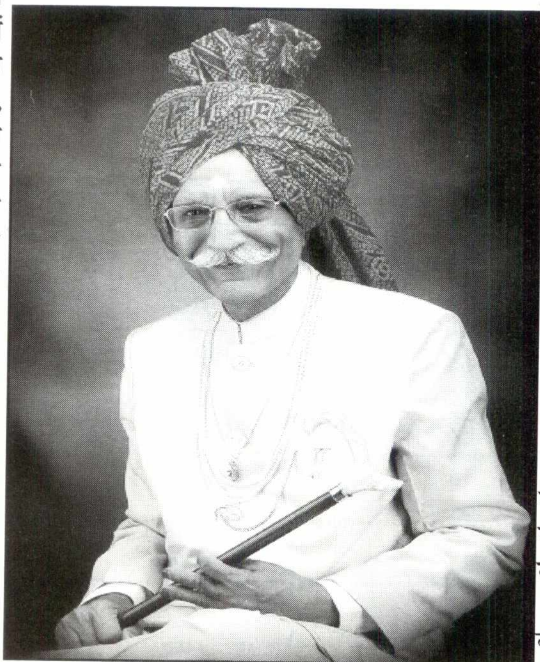

7 सितम्बर, 1947 को हमारे चाचाजी, चाचीजी और उनके सात बेटे भी कैम्प में आ गए। हमारे पास जो खुदरा पड़ा था वह हमने अपने कैम्प के आगे लगाकार एक रुपए का नोट लेकर 18 आने रुपए में देकर नोट इक्ट्ठे कर लिए। फिर हम सब लोग मिलिटरी के ट्रक में बैठकर रेलवे स्टेशन, सियालकोट पहुंचे और वहां से सुबह की गाड़ी में बैठकर अमृतसर की तरफ रवाना हुए।

स्टेशन पर मुसलमान लोग यदि कोई खाने-पीने की चीज देते, तो हम लोग उनसे नहीं लेते थे, क्योंकि उन दिनों वे लोग खाने-पीने की चीजों में जहर मिलाकर भी लोगों को मारने की स्कीम बनाते थे। अब जब इतना पता हो तो फिर जान-बूझकर मौत को गले की मूर्खता कौन करता, क्या पता उन चीजों में भी कुछ ऐसा ही जहर न मिला दिया गया हो।

हमारी गाड़ी सुबह साढ़े आठ बजे स्टेशन से चली। रास्ते में पसरूर स्टेशन आता था। चूंकि **वहां पर भी मुसलमान लोग इकट्ठे देखे गए थे, इसलिए बड़ा दहशत का माहौल था। यह तो मेरा ही मन जानता है कि उस समय कितना डर लगता था**, लफ्जों में उस डर को जाहिर कर पाना मेरे वश की बात नहीं।

दूसरा स्टेशन था **नारोवाल**। उससे आगे जसड़ रेलवे स्टेशन पर गाड़ी खड़ी हो गई। **वह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का बॉर्डर था।**

इधर जसड़ स्टेशन के बीच में दरया रावी, के पार डेरा बाबा नानक का स्टेशन था। यहां लोगों ने सारा सामान निकाला। लेकिन **दरयाए रावी का पुल बहुत ऊंचा था और अब समस्या यह थी कि लोग अपने साथ का सामान उठाकर कैसे ले जाएं?** बहुत मुश्किल काम था और वक्त भी बहुत कम था। **उधर धीमी-धीमी बरसात भी हो रही थी। एक तरफ मौत का खौफ, दूसरी तरफ भूख-प्यास की तड़प और लाशों की तीखी बदबू-ही- बदबू।**

कैसे पेश करूं उस वक्त की तस्वीर आपके सामने, **जिस तन लागे सो तन जाने, कौन जाने पीड़ पराई**–जो भोगता है, पीड़ा का अहसास उसे ही होता है, दूसरा कोई उसका अन्दाजा कैसे लगा सकता है। **खैर, हम लोग भी बड़ी मुश्किल से रावी का पुल पार करके डेरा बाबा नानक पहुंचे।** दूसरी गाड़ी हमारे पीछे आई, उसका किस्सा बताऊं, तो आपके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। उसमें **आधी गाड़ी के लोगों का मुसलमानों ने बेरहमी से कत्ल कर दिया था। गाड़ी में तो लाशें ही भरी हुई थीं। अभी हम सिर पर मंडराते मौत के खौफ से उबर भी नहीं पाए थे कि..........** क्रमशः .....

स्वास्थ्य विचार

वृद्धावस्था और स्वास्थ्य की समस्यायें

–डॉ. फणिभूषण दास

गतांक से आगे....

इसलिए उपरोक्त सभी संक्रामक (इनफेक्सस) रोगों पर अलग-अलग विचार कर लेना सही होगा क्योंकि **ये सभी वृद्ध-व्यक्तियों में गम्भीर अस्वस्थता उत्पन्न करने के साथ अनेक उपद्रव (कॉम्प्लीकेशन्स) भी उत्पन्न करते हैं जिनके फलस्वरूप बहुतों की मृत्यु भी हो जाती है।** इसलिए इन सबों पर अलग-अलग विचार करना इस प्रस्तुति का मुख्य लक्ष्य है।

जुकाम (इन्फ्लुऐंजा)–इन्फ्लुऐंजा के विभिन्न प्रकारों से सामान्य मौसमी जुकाम (**सीजनल इन्फ्लुऐंजा**) की जानकारी प्रायः सभी व्यक्तियों को होती है। इधर इन्फ्लुऐंजा के कई नए संस्करण सामने आए हैं जिनमें पक्षी जनित जुकाम (**बर्ड फ्लू**) और सुअर जनित जुकाम (**स्वाईन ओरिजन फ्लू**) मुख्य हैं। **इन्फ्लुऐंजा से ग्रसित हो जाने पर वृद्ध व्यक्ति बहुत अस्वथ हो जाते हैं और इस रोग से उत्पन्न कष्टों को सहन करने को विवश हो जाते हैं।** इस रोग पर और विचार करने से पहले **इन्फ्लुऐंजा की मान्य परिभाषा** पर गौर कर लेना उपयुक्त होगा।

सामान्य मौसमी जुकाम (**सीजनल इन्फ्लुऐंजा**) की परिभाषा में इसे ज्वर के साथ श्वसन प्रणाली (**रेसपिरेटरी सिस्टम**) का रोग कहा है जो एक बड़ी सीमा तक सही है। **सामान्य चिकित्सकगण इसे इसी प्रकार की अवस्थता मानकर ग्रसित व्यक्तियों का उपचार करते हैं। सामान्यतः मौसमी जुकाम (इन्फ्लुऐंजा/कोरायजा) और इन्फ्लुऐंजा के नए संस्करणों के लक्षण एक बड़ी सीमा तक एक जैसे ही होते हैं**, इसलिए जनसाधारण में भी इन्हें एक जैसा की धारणा बनी हुई है। इसलिए इनसे होने वाले उपद्रवों (**कम्प्लीकेशन्स**) की पहचान में देर हो जाती है।

सभी प्रकार के इन्फ्लुऐंजा विषाणु जनित संक्रमण (इनफेक्शन) से उत्पन्न होते हैं। ग्रसित व्यक्तियों में इनसे होने वाले उपद्रव (**कम्प्लीकेशन्स**) उनकी सम्वेदनशीलता (**वलनरेबिलिटी**) और सुग्राहिता (**ससेप्टिबिलिटी**) पर निर्भर होते हैं। इस सम्बन्ध में वृद्ध व्यक्ति इन उपद्रवों (**कम्प्लीकेशन्स**) से ग्रसित होने में अधिक सम्वेदनशील (**वलनरेबुल**) और सुग्राही (ससेप्टुबेल) होते हैं। **इसलिए उनमें उस रोग से निरोध (प्रोफाईलैक्सिस) के लिए हर सम्भव उपाय करने की आवश्यकता होती है।** इसीलिए उनमें इसके संक्रमण (इनफेक्सन) से बचने के लिए उपलब्ध रोग निरोधक उपायों को उपयोग में लाना लाभदायक होता है।

इन्फ्लुऐंजा का इतिहास इस रोग की गम्भीरता को उजागर करता है। 1918-19 में इन्फ्लुऐंजा की भयंकर महामारी (एपिडेमिक) हुई थी जिसमें लगभग 20 लाख व्यक्तियों की मृत्यु हो गई थी और मरने वालों में वृद्ध व्यक्तियों की संख्या भी बहुत थी। आज के माहौल में इस रोग की महत्ता बहुत बढ़ गई है क्योंकि **इसके नए-नए रूप उभर कर सामने आ रह हैं। जिनमें पक्षी जनित जुकाम (बर्ड फ्लू) और सुअर जनित जुकाम (स्वाईन ओरिजिन फ्लू) मुख्य हैं** और इस सबों से ग्रसित हो जाने में वृद्ध व्यक्ति भी बहुत सम्वेदनशील (वलनरेबुल) होते हैं। इसलिए इस रोग के निरोध (प्रोफाईलैक्सिस) के हर सम्भव उपायों को उपयोग में लाना आवश्यक हो गया है। **इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए रोग निरोधक टीका (वैक्सीन) लगवाना लाभदायक सिद्ध हुआ है।**

इन्फ्लुऐंजा का रोग निरोधक टीका (वैक्सीन) : इन्फ्लुऐंजा के संक्रमण (इनफेक्सन) से बचने के लिए या इसके प्रभाव को सीमित करने के लिए इसका रोग निरोधक टीका लगवाना बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है। **यह टीका (वैक्सीन) व्यक्तियों में बहुत कारगर सिद्ध हुआ है क्योंकि इसके प्रभाव से उनके जीवन की बची हुई आयु को व्याधिमुक्त और सामान्य बनाना सम्भव हो जाता है** क्योंकि इस टीके (वैक्सीन) के प्रभाव से वे इस रोग से ग्रसित नहीं होते और अगर **वे इस रोग ग्रसित हो भी गए तो यह रोग कम गम्भीर होता है, इससे हल्की अस्वस्थता होती है** और उन्हें चिकित्सालय में भर्ती होने की आवश्यकता नहीं होती है। **दुर्भाग्यवश इस रोग निरोधक टीके (वैक्सीन) का व्यवहार अभी भी सीमित है और वृद्ध व्यक्तियों में तो यह और भी सीमित है।** इसलिए वृद्ध व्यक्तियों के लिए इस रोग निरोधक टीके (वैक्सीन) के व्यवहार को सर्वमान्य बनाने और अनिवार्य करने की दिशा में आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता है क्योंकि वे इस रोग से ग्रसित होने में........ **क्रमशः....**

समाचार दर्शन

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई ने किया अग्निहोत्री (याज्ञिक) परिवारों का सम्मान

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का 11वां वार्षिकोत्सव एवं दैनिक अग्निहोत्री (याज्ञिक) परिवार सम्मान समारोह रविवार 5 अप्रैल, 2015 को सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारम्भ वृहद यज्ञ से हुआ। **अनेक आर्य समाजों से प्रतिदिन यज्ञ करने वाले याज्ञिक आर्य नर-नारियों ने 22 हवन कुण्डों पर उपस्थित होकर श्रद्धापूर्वक रोग निवारण एवं सुख शान्ति, समृद्धि तथा समुन्नति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।**

यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सरस्वती मातृ कन्या गुरुकुल वाराणसी थीं तथा वेद पाठी कन्याएं सुव्रती आर्या एवं वीणा चतुर्वेदी थीं। समारोह में, अध्यक्ष श्री मिठाईलाल सिंह, मुख्य अतिथि श्री वेदप्रकाश गर्ग, सम्मानित अतिथि श्री प्रतापसिंह शूरजी पूर्व प्रधान–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, विशिष्ट अतिथि श्री हरीश आर्य, श्री अरुण अबरोल, श्री संगीत शर्मा एवं मुम्बई महानगर की महापौर श्रीमती अल्का ताई केरकर आदि का स्वागत किया।

आर्य वीर दल शिविर

दयानन्द मठ घण्डरां दीनानगर में आर्य वीर दल का शिविर स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता में 1 जून से 8 जून 2015 तक विशाल स्तर पर लगाया जा रहा है, शिविर का उद्घाटन मुख्यातिथि श्री रघुवीर सैनी (सरपंच ग्राम झन्गी) ओ३म् ध्वजोत्तोलन के साथ करेंगे। आर्य वीर दल के विशेष सहयोगी रमेश आर्य एवं मां. रघुवीर सैनी के नेतृत्व में सभी आर्य वीरों को बसों द्वारा घण्डरां मठ पहुंचाया जाएगा।

आवश्यक समान–खाकी हॉफ पैन्ट, सफेद शर्ट, बनियान, सफेद जूते, लाठी, पैन, नोट बुक, बर्तन, ऋतु अनुकूल बिस्तर। **–प्रबन्धक, स्वामी संतोषानन्द जी**

वेद-वेदान्त सम्मेलन सम्पन्न

वैदिक मिशन मुम्बई द्वारा वेद-वेदान्त सम्मेलन का आयोजन आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई में 21-22 मार्च 2015 को किया गया। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए समस्त भारत से लगभग 60 विद्वान पधारे थे, जिनमें स्वामी प्रणवानन्द जी, आचार्य आर्य नरेश जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, डॉ. प्रियंवदा, डॉ. पवित्रा, डॉ. महावीर मीमांसक, आचार्य मोक्षराज, आदि विद्वान् प्रमुख थे। इस सम्मेलन में अतिथि के रूप में आर्यसमाज न्यूयार्क के प्रधान श्री चन्द्रभान जी, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व मन्त्री डॉ. श्री रमेश गुप्ता, आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान श्री मिठाई लाल जी पधारे। कार्यक्रम में श्री कैलाश कर्मठ, श्रीमती कविता आर्या तथा श्री वीरेन्द्र मिश्रा आदि भजनोपदेशकों ने अपने मधुर गीतों से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध किया। इस कार्यक्रम में विद्वानों ने त्रैतवाद की सत्यता को प्रमाणित करने के अनेक प्रमाण प्रस्तुत किए। इसी सत्र में इस मिशन द्वारा प्रकाशित एवं डॉ. सोमदेव द्वारा रचित पुस्तक 'षड्दर्शन परिचय' का विमोचन भी किया गया।

प्रवेश सूचना

आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा (औरैया)

आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा (औरैया) उ. प्र. के नवीन सत्र में प्रवेश प्रक्रिया 25 अप्रैल से प्रारम्भ है, विद्यालय उत्तर प्रदेश संस्कृत माध्यमिक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त है। परीक्षाएं सर्वत्र मान्य हैं। विगत वर्षों का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा है। आवासीय व्यवस्था में गुरु शिष्य भाव से पठन-पाठन व्यवस्था है। प्रवेशार्थी की आयु कम से कम 10 वर्ष तथा पंचम कक्षोत्तीर्ण होना आवश्यक है। संस्थान में निर्धन परिवारों के योग्य मेधावी छात्रों को निशुल्क भी प्रवेश दिया जाता है।

–आचार्य रावदेव शास्त्री

गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ उत्तर प्रदेश

प्राचीन वैदिक परम्परा के संवाहक गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ, उत्तर प्रदेश में नवीन प्रवेशार्थी छात्रों की प्रवेश-परीक्षा पूर्व वर्षों भान्ति इस वर्ष भी 26 जून से 30 जून 2015 जून तक सम्पन्न होगी। प्रवेशार्थी छात्र की अर्हता पंचम श्रेणी उत्तीर्ण, मेधावी स्वस्थ, सुशील एवं आयु 10 वर्ष होनी चाहिए। प्रवेश परीक्षा लिखित एवं मौखिक दो चरणों में एक दिन में ही होगी। लिखित परीक्षा में 60 प्रतिशत अंक प्राप्त छात्र ही मौखिक परीक्षा का अधिकारी होंगे। **–आचार्य**

ओ३म्

वेद मन्दिर की गौशाला एक आग्रह : एक निवेदन

देव दयानन्द के वेद प्रचार के आह्वान् को शिरोधार्य कर **दयानन्द संस्थान** विगत लगभग पांच दशक से आपके सहयोग-सम्बल के बल पर **"चारों वेद का हिन्दी भाष्य"** तथा अन्य वैदिक साहित्य लगभग **साढ़े चार लाख** परिवारों में पहुंचाने में सफल रहा है।

महर्षि दयानन्द ने गौ पालन और गौ-रक्षण में प्रवृत्त रहने को भी वैदिक आस्थाओं के प्रति श्रद्धालु जन से आह्वान् किया था। दयानन्द संस्थान ने महर्षि के इस निर्देश के अनुसार महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेदमन्दिर इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६ में लगभग 28 वर्ष पूर्व एक गौशाला का शुभारम्भ किया था।

गौभक्तों एवं उदारमना तथा स्व-संस्कृति के प्रति आस्थावान दानी सज्जन वृन्द से हमारा साग्रह निवेदन है कि **प्रतिमास सहयोग राशि अपनी सुविधानुसार गौग्रास के रूप में भेजकर संस्थान की गौशाला की गौओं को उत्तम चारा सुलभ कराकर गौ रक्षा में अपने दायित्व के निर्वहन में सहभागी बनें।**

यदि हमारे एक सौ सहयोगी सदस्य प्रतिमाह गौग्रास रूप चारा-भूसा प्रदान करेंगे तो उनका यह सहयोग गौशाला के संचालन में ठोस योगदान सिद्ध होगा। अतः गोभक्तों से निवेदन है **कि** गौओं हेतु चारा-भूसा लेने में **अपना सहयोग अधिक से अधिक देने की कृपा करें। इस समय नया भूसा सस्ते मूल्य में मिल रहा है बाद में दुगुने दाम पर लेना पड़ता है। अभी दो लाख रुपए अनुमानतः कम पड़ेगा। अतः आपके सहयोग की तुरन्त आवश्यकता है।** गौओं हेतु अपने योगदान की राशि **"स्वामी दयानन्द संस्थान"** के नाम चैक/ड्राफ्ट/ अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। अथवा.......

आप सहयोग राशी सीधे यूनियन बैंक दिल्ली में खाता नं. 307902010054434 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई राशि की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

स्वामी दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित गौशाला के संचालन में चारा प्रदान करने वाले गौभक्तों के नाम और राशि को **'जनज्ञान'** मासिक में भी प्रकाशित किया जाएगा। दानराशि निम्न पते पर प्रेषित करें:-

अध्यक्ष- स्वामी दयानन्द संस्थान
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर)
पो.-मुखमेलपुर, दिल्ली-३६
चलभाष : 9810257254, 8459349349
E-mail : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

संक्षिप्त-सूची पत्र

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	4000 रु.
2.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य-विश्वनाथ जी	300 रु.
3.	वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या)	100 रु.
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)-आ.अभयदेव जी	100 रु.
5.	भारत के वीर बच्चों की कहानियां-पं. प्रेमचन्द जी	20 रु.
6.	धरती का स्वर्ग -पं. शिवकुमार शास्त्री	20 रु.
7.	सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र)	60 रु.
8.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	20 रु.
9.	धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं)	20 रु.
10.	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	5 रु.
11.	वैदिक सम्पत्ति- पं. रघुनन्दन शर्मा	300 रु.
12.	धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या)	20 रु.
13.	योग और ब्रह्मचर्य-सम्पादक-दिव्या आर्य	20 रु.
14.	गीत मंजरी (भजनों का अनुपम संग्रह)	20 रु.
15.	Inside the Congress-स्वामी श्रद्धानन्द जी	80 रु.
16.	Life and Teachings of Swami Dayanand -बाबा छज्जूसिंह जी	300 रु.
17.	History of the assassins	80 रु.
18.	Concept of God-स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती	100 रु.
19.	Vedic Prayer(दै.संध्या-हवन हिन्दी शब्दार्थ-भावार्थ)	60रु.
20.	Light of Truth (सत्यार्थप्र. अंग्रेजी में-दुर्गाप्रसाद)	300 रु.
21.	A Short Life Story of Swami Dayanand	40 रु.
22.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	20 रु.
23.	वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य-आर्यमुनि जी	80 रु.
24.	संक्षिप्त महाभारत	100 रु.
25.	संक्षिप्त रामायण	20 रु.
26.	ऋग्वेद शतकम	20 रु.
27.	चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं	25 रु.
28.	सत्संग पद्धति	15 रु.
29.	वैदिक सान्ध्य गीत	20 रु.
30.	गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा	5 रु.
31.	उपनिषद संग्रह-महात्मा नारायण स्वामी	100 रु.
32.	बृहत्तर भारत-पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार	300 रु.
33.	ईश्वर-(संसार के वैज्ञानिकों की दृष्टि में)	150 रु.
34.	अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र-स्वामी ब्रह्ममुनि	200 रु.
35.	अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या-स्वामी ब्रह्ममुनि	100 रु.
36.	वैदिक समाज व्यवस्था- प्रशांत वेदालंकार	100 रु.
37.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	100 रु.
38.	श्रीमद्भगवद्गीता(काव्य)-मृदुल कीर्ति	80 रु.
39.	मोपला (उपन्यास)-वीर सावरकर	20 रु.
40.	वीर सावरकर-संक्षिप्त जीवन परिचय	5 रु.
41.	भाई परमानन्द (जीवन परिचय)	40 रु.
42.	बाल सत्यार्थ प्रकाश-स्वामी जगदीश्वरानन्द जी	80 रु.
43.	उपदेश मंजरी-(महर्षि दयानन्द के 14 व्याख्यान)	30 रु.
44.	योगासन	20 रु.
45.	स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा	3 रु.
46.	विश्व को वेद का संदेश	3 रु.
47.	विश्व को आर्यसमाज का संदेश	3 रु.

हिन्दू धर्मरक्षक साहित्य बाँटिये

1.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे?	3.00 रु.
2.	हिन्दुओं को चेतावनी-वेदभिक्षु:	2.00 रु.
3.	भारत के मुसलमानों का क्या करें? -वेदभिक्षु:	2.00 रु.
4.	हम सब हिन्दू हैं-सावरकर	2.00 रु.
5.	इस्लाम में क्या है? -राकेश रानी	2.00 रु.
6.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ -जहीर नियाजी	2.00 रु.
7.	हिन्दू जागो ! देश बचाओ	2.00 रु.
8.	इस्लाम-एक परिचय	2.00 रु.
9.	पोप की सेना का भारत पर हमला - वेदभिक्षु:	2.00 रु.
10.	पादरियों को चुनौती	2.00 रु.
11.	बाईबिल को चुनौती	2.00 रु.
12.	क्या ईसा खुदा का बेटा था?	2.00 रु.
13.	और पादरी भाग गया	2.00 रु.
14.	बाइबल कसौटी पर	5.00 रु.
15.	Bible in the Balence	3.00 रु.
16.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा?	2.00 रु.
17.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा?	2.00 रु.
18.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश	2.00 रु.
19.	हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा	2.00 रु.
20.	A challange to the Christian Faith	1-00 रु.

मुख्य कार्यालय: स्वामी दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर), दिल्ली-36 दूरभाष : 91-8459349349, 9810257254

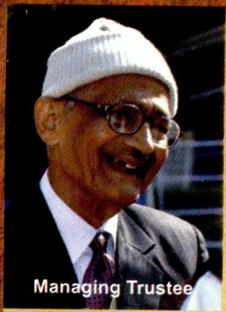

श्री नन्द प्रकाश थरेजा

With Best Compliments From :

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय ||

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST

hCCt

god created human beings to feel sympathy with those in distress otherwise there was no scarcity of angles to worship him.

ENGAGED IN WELFARE OF POOR AND NEEDY

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST (Regd.)

D-94, Saket, New Delhi-110017
Tel. : 26524607, 40514515 E-mail : hctrust@yahoo.com

درد دل کے واسطے پیدا کیا انسان کو
ورنہ طاعت کے لیے کچھ کم نہ تھے کروبیاں

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को
वरना ताअत के लिए कुछ कम न थे करुँ बयां

لب پہ آتی ہے دعا بن کے تمنا میری زندگی شمع کی صورت ہو خدایا میری
دور دنیا کا مرے دم سے اندھیرا ہو جائے ہر جگہ میرے چمکنے سے اجالا ہو جائے
ہو مرے دم سے یونہی میرے وطن کی زینت
جس طرح پھول سے ہوتی ہے چمن کی زینت
زندگی ہو مری پروانے کی صورت یا رب علم کی شمع سے ہو مجھ کو محبت یا رب
ہو مرا کام غریبوں کی حمایت کرنا دردمندوں سے ضعیفوں سے محبت کرنا
مرے اللہ برائی سے بچانا مجھ کو نیک جو راہ ہو اس رہ پہ چلانا مجھ کو

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी।
जिन्दगी शमा की सूरत हो खुदाया मेरी।
दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए।
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए।

हो मेरे दम से यूँ ही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
जिन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत यारब
इल्म की शमा से हो मुझको मोहब्बत यारब

हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना
दर्द मंदों से, जईफों से मोहब्बत करना
मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस राह पे चलाना मुझको

जनज्ञान (मासिक)
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-३६

ज्येष्ठ-आषाढ़
सम्वत्-२०७२
जून, सन्-२०१५
प्रकाशन तिथि ३ जून

Delhi Postal NO. G-3/ DL (N) / 333 /2015-2017
R.N.I. -10719/65
Posted at New Sabji Mandi
Date 5 & 6 of June-2015